कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

संस्थान समाचार

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, 6-महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ-226001

वार्षिक | उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की गतिविधियाँ | वर्ष 2022-23

श्री योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र.
एवं
अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान

●

आर.पी. सिंह
आई.ए.एस.
निदेशक

●

योगेन्द्र प्रताप सिंह
वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी

●

डॉ. अमिता दुबे
प्रधान सम्पादक

●

श्याम कृष्ण सक्सेना
वरिष्ठ सहायक

●

विनोद कुमार
कनिष्ठ सहायक

सम्पर्क
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन
6-महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ-226001
दूरभाष : 0522-2614470, 71 26164645, 65
फैक्स : 0522-2616464
ई-मेल : directoruphindi@yahoo.in
वेबसाइट : www.uphindisansthan.in

निवेदन

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान अपने विभिन्न दायित्वों के निर्वहन के अन्तर्गत अनेकानेक साहित्यिक समारोहों का आयोजन करता है। विनम्रतापूर्वक यह कह सकते हैं कि हम वित्तीय वर्ष 2022–23 में अनेक साहित्यिक सरोकारों से जुड़े वैविध्यपूर्ण कार्यक्रमों का सफल आयोजन कर सके। इस अवधि में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा दिनांक 23 व 24 अप्रैल, 2022 को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 10 मई, 2022 को संस्कार भारती, सम्भल के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन, दिनांक 20 मई, 2022 को महावीर प्रसाद द्विवेदी, सुमित्रानन्दन पंत एवं विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति समारोह का आयोजन, दिनांक 30 जून, 2022 को संस्थान द्वारा गोरखपुर में स्थापित 'गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र' में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 26 व 27 जुलाई, 2022 को बुद्ध विद्यापीठ, नौगढ़, सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 03 अगस्त, 2022 को तुलसीदास, प्रेमचन्द, मैथिलीशरण गुप्त एवं शिवपूजन सहाय स्मृति समारोह का आयोजन, आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर दिनांक 10 से 15 अगस्त, 2022 तक संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन, दिनांक 17 अगस्त, 2022 को बहुभाषीय काव्य गोष्ठी का आयोजन, दिनांक 09 सितम्बर, 2022 को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयन्ती का आयोजन, हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 2022 के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 23 सितम्बर, 2022 को नया परिमल, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 24 व 25 सितम्बर, 2022 को तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 15 व 16 अक्टूबर, 2022 को महाराणा प्रताप महाविद्यालय, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 04 नवम्बर, 2022 को हरिवंशराय बच्चन, मुक्तिबोध व शिवानी की स्मृति में संगोष्ठी एवं कहानी, कविता व निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन, दिनांक 5 व 6 नवम्बर, 2022 को नेशनल पी.जी. कालेज के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 16 व 17 नवम्बर, 2022 को ए.एन. कालेज, पटना के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 25 नवम्बर, 2022 को अभिनन्दन पर्व समारोह एवं बाल साहित्य संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 13 व 14 दिसम्बर, 2022 को सुब्रह्मण्य भारती, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', यशपाल, रामवृक्ष बेनीपुरी, इलाचन्द्र जोशी, धर्मवीर भारती, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, शकुन्तला सिरोठियाँ एवं विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' स्मृति समारोह का आयोजन, दिनांक 17 दिसम्बर, 2022 को श्रीमध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के 46वें स्थापना दिवस 30 दिसम्बर, 2022 के अवसर पर नामित व सर्जना पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन आदि अनेक गरिमामयी कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

विश्व हिन्दी दिवस 10 जनवरी, 2023 के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 14, 15 व 16 जनवरी, 2023 को विद्याश्री न्यास, वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 20 व 21 जनवरी, 2023 को एसएनडीटी महिला महाविद्यालय एवं भारतीय ज्ञान, संस्कृत और योग केन्द्र, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, बसंत पंचमी एवं गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2023 के अवसर पर झण्डा रोहण कार्यक्रम का आयोजन, दिनांक 30 व 31 जनवरी, 2023 को जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत एवं लक्ष्मीनारायण मिश्र स्मृति समारोह का आयोजन, दिनांक 07 व 08 फरवरी, 2023 को राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 13 फरवरी, 2023 को नरेश मेहता एवं लक्ष्मीकान्त वर्मा स्मृति समारोह का आयोजन, दिनांक 20 व 21 फरवरी, 2023 को बिशप कॉटन वीमेन्स क्रिश्चियन कॉलेज एवं साहित्य साधक मंच, बेंगलूरु के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन, दिनांक 01 मार्च, 2023 को निराला सभागार का लोकार्पण, दिनांक 04 मार्च, 2023 को सोहन लाल द्विवेदी स्मृति समारोह का आयोजन, दिनांक 12 व 13 मार्च, 2023 को विश्वनाथ चारिआली राष्ट्रभाषा प्रबोध विद्यालय संचालन समिति, असम के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन भी हमारी विशिष्ट उपलब्धियाँ हैं। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा वर्ष 2021 के विशिष्ट सम्मानों का चयन कर सम्मान राशि, गंगा प्रतिमा, ताम्रपत्र, उत्तरीय आदि भी डाक द्वारा प्रेषित कर दिये गये हैं।

संस्थान की 'बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी' (द्वैमासिक) किशोर हृदय का स्पन्दन भी है और त्रैमासिकी 'साहित्य भारती' साहित्यानुरागियों के लिए विशेष आकर्षण बन चुकी है। प्रसन्नता की बात यह है कि दोनों पत्रिकाएँ अपनी नित नयी रूप छवियों और स्तरीय सामग्री के साथ निरंतर समय से प्रकाशित हो रही हैं और उन्हें पाठकों एवं बुद्धिजीवियों का साधुवाद मिल रहा है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा संचालित प्रकाशन अनुदान योजना के अन्तर्गत 20 साहित्यकारों को प्रकाशन अनुदान दिया गया। साथ ही साहित्यकार कल्याण कोष योजना के अन्तर्गत तीन साहित्यकारों को चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की गयी। संस्थान की प्रकाशन योजना अन्तर्गत इस वित्तीय वर्ष में नवीन पुस्तकों का प्रकाशन तथा पुस्तकों का पुनर्मुद्रण का कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। पुस्तक मेलों में पुस्तक प्रदर्शनी लगायी गयीं, जिन्हें प्रबुद्धजनों के बीच काफी सराहना मिली। राजभाषा हिन्दी की श्रीवृद्धि के लिए हम आज भी सतत समर्पित हैं।

आर.पी. सिंह
आई.ए.एस.
निदेशक

'सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी– 23 व 24 अप्रैल, 2022

'रेणु प्रेमचंद की परम्परा के सशक्त रचनाकार' : प्रो. हरिबहादुर श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं हिन्दी विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वावधान में 'फणीश्वरनाथ रेणु और उनका साहित्य' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 23 व 24 अप्रैल, 2022 को पूर्वांह्न 10.30 से सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में किया गया।

प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर की अध्यक्षता में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त, तत्कालीन मा. कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, विशिष्ट अतिथि श्री पवन कुमार, तत्कालीन निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान सहित अन्य विद्वानों ने संगोष्ठी में अपने वक्तव्य दिये।

संगोष्ठी में द्वितीय दिवस 24 अप्रैल, 2022 को आयोजित समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सुरेन्द्र दुबे, पूर्व कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा की गयी तथा मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. प्रदीप कुमार, संयुक्त शिक्षा निदेशक, वाराणसी उपस्थित हुये।

प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने कहा– फणीश्वरनाथ रेणु

अपनी मिट्टी से अद्भुत प्यार करने वाले रचनाकार थे। उन्होंने भूख और गरीबी से पीड़ित आमजन को निकट से देखा था, जिसके रूप में उन्हें भारत माता जार–जार रोते हुए दिखाई पड़ती है और वे कल्पना करते हैं कि भारत माता सम्राजोत्सव के अवसर पर सिंहासन पर आरुढ़ होकर आयेगी। रेणु अपनी रचनाओं में गाँव से लेकर शहर तक का चित्रण करते हैं। प्रो. शर्मा ने रेणु को प्रेमचंद की परम्परा का संवाहक मानते हुए उनकी रचनाओं को आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद से प्रेरित बताया। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद कहानियों में वर्णन करते हैं और रेणु कहानी गढ़ते हैं। रेणु की रचनाओं में लाकसंस्कृति को बचाने की चिन्ता दिखाई देती है। वे कहते थे कि लोक संस्कृति ही हमारे मूल्यों को बचा सकती है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पवन कुमार, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने कहा– रेणु प्रेमचंद की शैली

के कथाकार हैं, लेकिन थोड़ी भिन्नता है, जो उन्हें आंचलिकता से जोड़ती है। भाषा उनकी रचनाओं को समृद्ध बनाती है, इसलिए रेणु की रचनाएँ हर वर्ग के लिए है।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने कहा – 'रेणु' रस के रचनाकार हैं। वे मानवीय संवेदनाओं को उद्घाटित करते हैं। रेणु की रचनाओं की ताकत उनकी भाषा है। इसलिए रेणु का अनुकरण नहीं किया जा सकता है और रेणु किसी का अनुकरण भी नहीं करते हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों के वैविध्य प्रयोग के कारण ही उनकी रचना 'मैला आँचल' को प्रसिद्धि मिली। रेणु अपनी रचनाओं में अपने आस–पास के परिवेश को जीवन्तता के साथ प्रस्तुत करते हैं। वे कहते थे लेखन का विषय मनुष्य होना चाहिए, किसी पार्टी का झण्डा–बैनर नहीं। डॉ. गुप्त ने कहा कि अपने समय की सामाजिक विसंगतियों को रेणु

इन सभी समस्यों के मूल में 'चित का स्वराज्य स्थापित नहीं होना मानते हैं। वे चित्त के स्वराज्य को स्थापित करने के लिए सांस्कृतिक परम्परा के उद्धार को आवश्यक मानते हैं और सांस्कृतिक परम्परा के उद्धार को भाषा के उद्धार से जोड़कर देखते हैं।

इस अवसर पर श्री पवन कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए रेणु की लोकप्रियता पर चर्चा की।

अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव ने कहा– रेणु प्रेमचंद की परम्परा के सशक्त रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं के पात्र ग्रामीण जीवन के पात्र हैं, इसलिए उनकी रचनाएँ यथार्थ की भूमि पर स्थित है।

शायद यही कारण रहा कि उनकी एक रचना 'तीसरी कसम' पर फिल्म भी बनी। रेणु का जुड़ाव नेपाल और बंगाल की धरती से भी रहा।

डॉ. रेनू त्रिपाठी ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में हिन्दी विभाग के डॉ. सत्येन्द्र दुबे, डॉ. जय सिंह यादव, डॉ. रेनू त्रिपाठी आदि अध्यापक उपस्थित रहे।

साथ ही उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक डॉ. अमिता दुबे एवं वरिष्ठ सहायक श्री श्याम कृष्ण सक्सेना ने दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रतिभाग किया।

'संस्कार भारती, सम्भल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी - 10 मई, 2022

'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और हिन्दी साहित्य'

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं संस्कार भारती, सम्भल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन दिनांक 10 मई, 2022 को पूर्वांह्न 9.30 बजे से युदवंशी गार्डेन, चंदौसी में किया गया।

इस संगोष्ठी एवं काव्य गोष्ठी में सम्माननीय मुख्य अतिथि डॉ. राजनारायण शुक्ल, विशिष्ट अतिथिगण डॉ. पवन कुमार शर्मा, श्री पवन कुमार, तत्कालीन निदेशक (तत्कालीन), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, श्री मनीष बंसल, जिलाधिकारी, सम्भल, डॉ. सुधाकर आशावादी, प्रांतीय

महामंत्री, संस्कार भारती मेरठ प्रान्त आदि उपस्थित हुये। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पर विस्तृत चर्चा की साथ ही उस दौरान हिन्दी साहित्य के योगदान पर प्रकाश डाला।

काव्य गोठी में बनारस से आये प्रख्यात कवि भूषण त्यागी ने पढ़ा एक मुहिम सक्षम भारत का चला सखे, जिससे भरत वंशियों का हो भला सखे। हँसते–हँसते जो सरहद पर जूझ गए, एक दीप उनकी खातिर भी जला सके।

मैनपुरी से बलराम श्रीवास्तव ने पढ़ा – जो टूटे लक्ष्य

से पहले कभी वृत्त नहीं होता, अमरता जो न दे पाए वह अमृत नहीं होता। कभी संदेह के बाद न यूंही मन में तुम लाना भरत से भाई का चिंतन कभी विकृत नहीं होता। नोएडा से हास्य कवि दीपक गुप्ता ने पढ़ा – गालियाँ, ठोकर और ताने क्या नहीं खाना पड़ा। तब कही जाकर हमारे पेट में दाना पड़ा/आप मेरी रूह को महसूस ही कब कर सकें, आपकी खातिर मुझे ये जिस्म महकाना पड़ा।

प्रयागराज से शायर श्री जयकृष्ण राय 'तुषार' ने गजल पढ़ी– साकी तुम्हारी नज़्म तो महफिल की हो गई, जिसमें वतन की बात थी बिस्मिल की हो गई/उड़ता रहे हवा में या उतरे जमीन पर, टहनी हरे दरख्त की हारिल की हो गई।

बदायूं से कवयित्री डॉ. सोनरूपा विशाल ने कहा कि – जोश की जो शौर्य से परिणीत है, वो शहादत/मौत क्या है, जिन्दगी की जीत है/मन में गीता के वचन और तन में फौलादी जुनू, फिर विजय हर जंग में अपनी सदा निर्णीत है।

मेरठ से कवयित्री डॉ. शुभम त्यागी ने सुनाया – शहीदों की चलो मिलकर के कोई बात हो जाए/भले अब दिन निकल जाए भले ही रात हो जाए/कहानी राजा रानी की ना मां हमको सुनाना तुम/कहानी अब शहीदों की नई सौगात हो जाए।

अयोध्या से श्री जमुना प्रसाद उपाध्याय ने पढ़ा – कैक्टस तो सजाकर वह गुलदान में रखता है/मां बाप को गैराज या दालान में रखता है/फानूस में रखता है, जुगुनू तो हिफाजत से/और बूढ़े चिरागों को तूफान में रखता है।

कानपुर से श्री पुष्पेन्द्र कुमार ने पढ़ा– मुझे दूर कहीं तू ले चल मन, जहाँ मानवता का त्रास न हो/किसी राम को फिर वनवास न हो, हो दिव्य जहाँ का वातावरण। सफल संचालन कर रहे डॉ. सौरभकांत शर्मा ने पढ़ा– राष्ट्रवाद के सब नायक, मां का भगवा परिधान रहे/और चहुँ दिशाओं में गुंजित यह वन्देमातरम गान रहे/समवेत स्वर में राष्ट्रगीत की जब लय होगी/तब देश बनेगा विश्वगुरु भारत माता की जय होगी।

कार्यक्रम में एसडीएम कन्नौज श्री राकेश त्यागी, एसडीएम चन्दौसी श्री राजपाल सिंह, संस्कार भारती के प्रान्त सह महामंत्री श्री इंद्रपाल शर्मा, जिलाध्यक्ष श्री अखिलेश अग्रवाल डॉ. राजीव लोचन शर्मा, ममता राजपूत, रुचिका गुप्ता आदि साहित्य प्रेमी उपस्थित रहें। डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया।

'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महाकवि सुमित्रानन्दन पंत एवं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री स्मृति समारोह - 20 मई, 2022

द्विवेदी जी का समय मातृभाषा को महत्व देने का रहा : डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महाकवि सुमित्रानन्दन पंत एवं आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की पावन स्मृति में संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 20 मई, 2022 को पूर्वाह्न 9.30 किया गया।

डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, तत्कालीन मा. कार्यकारी अध्यक्ष (तत्कालीन), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी में सम्माननीय अतिथि डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, कोलकाता डॉ. कलानाथ मिश्र, पटना

एवं डॉ. आनन्द कुमार सिंह, भोपाल व्याख्यान हेतु पधारे।

अभ्यागतों का स्वागत करते हुए श्री पवन कुमार, तत्कालीन निदेशक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महाकवि सुमित्रानन्दन पंत और आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की पावन स्मृति को समर्पित इस संगोष्ठी में पधारें सभी विद्वानों का उ.प्र. हिन्दी संस्थान परिवार स्वागत एवं अभिनन्दन करता है। हमारे लिए यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यान देने हेतु पटना से डॉ. कलानाथ मिश्र हमारे बीच पधारे हैं। आज हिन्दी साहित्य में छायावाद के नाम से प्रसिद्ध काल खण्ड के प्रमुख हस्ताक्षर समित्रानन्द पंत जी की जयंती है, उन्हें प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में स्मरण किया जाता है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा करने हेतु भोपाल से डॉ. आनन्द कुमार सिंह जी उपस्थित है। हम उनका स्वागत एवं अभिनन्दन करते है।

इसी क्रम में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के विद्वान आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जी का भी जन्म दिवस मई माह में मनाया जाता है, उनका स्मरण करते हुये हम विशेष आभारी हैं, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी जी के प्रति जो कोलकता से हमारे बीच पधारे हैं और आचार्य शास्त्री जी के विराट व्यक्तित्व एवं उनके रचना संसार से हमें परिचित करा रहे हैं। निराला जी की सरस्वती वंदना को सस्वर हमारे मध्य प्रस्तुत करने वाली डॉ. पूनम श्रीवास्तव को भी शुभकामनाएँ। पत्रकार बंधुओं, मीडियाकर्मियों एवं हमारे अनुरोध पर पधारें सभी साहित्य अनुरागियों, हिन्दी प्रेमियों

का भी स्वागत एवं अभिनन्दन है। आशा है स्मृति समारोह के अवसर पर आयोजित इस संगोष्ठी में अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों से हम सभी लाभान्वित होंगे। शुभकामनाएँ।

पटना से पधारे डॉ. कलानाथ मिश्र ने कहा– 'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सच्चे अर्थों में महावीर थे। वे भाषा वैज्ञानिक, समाज सुधारक, युगप्रर्वतक चिन्तक सम्पादक, आलोचक थे। द्विवेदी जी नव जागरण तथा राष्ट्रीय एकता के लिए समर्पित थे, उनकी रचनाओं में इसकी व्यापक झलक मिलती हैं। वे कहते थे कि ज्ञान का विकास विवेकपूर्ण चिन्तन से ही हो सकता है, वाणी को परिभाषित किये जाने की आवश्यकता पर बल देते थे। उनका कहना था कि जो समर्थ होते हुए भी साहित्य की सेवा व अभिवृद्धि नहीं करता है, उसे समाज विरोधी की संज्ञा दें। वे आध्यात्मिकता से भी काफी प्रभावित रहे।

'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन करके साहित्यिक क्षेत्र में पथ प्रदर्शक के रूप में जाने जाते हैं, भाषा विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। वे अनुवादक के रूप

में साहित्यिक परिदृश्य पर अमिट छाप छोड़ गये हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी साहित्य के क्षेत्र में युग पुरुष के रूप में जाने जाते है। 'प्रिय प्रवास' उनकी चर्चित व महत्वपूर्ण रचनाओं में है। उन्होंने खड़ी बोली में भी काफी कार्य किया।

भोपाल से पधारे डॉ. आनन्द कुमार सिंह ने कहा– मिश्र बंधुओं ने सुमित्रानन्दन पंत के साहित्यिक मापदण्डों को पूर्ण करते हुए महाकवि की संज्ञा प्रदान की थी। पंत जी ने खड़ी बोली के स्वर को बदल दिया। पंत जी के काव्य में पल्लव, उच्छ्वास महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। अज्ञेय जी ने कहा था कि पंत जी से भावी रचनाकार पीढ़ी सीखने का कार्य करेगी। पंत जी ने ब्रजभाषा काव्य की आलोचना करते हुए कहा कि खड़ी बोली की स्वर्णिम आशा की कल्पना की थी। खड़ी बोली की महत्ता को वर्णन करते हुए पंत जी ने कहा खड़ी बोली साहित्य के क्षेत्र में स्वार्णिम अध्याय जोड़ेगी व मार्ग प्रशस्त करेगी। उनकी मान्यता थी कि खड़ी बोली साहित्य को गद्य एवं काव्य में समृद्ध करेगी। पंत जी बिम्ब

विधान की परिकल्पना करते हुए लिखते हैं कि काव्य को परिपूर्ण करने के लिए इसकी आवश्यकता होती है। पंत प्रकृति के सुकुमार कवि कहे जाते हैं। उनका मानना था कि काव्य में संगीतात्मकता प्रधान तत्व है। वे सवैया एवं कवित्त में परिमार्जन के पक्ष में थे। पंत जी की कविता में कल्पना जगत की प्रधानता है। उनकी पल्लव व गुंजन काव्य रचना साहित्य जगत में काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पंत जी का मानना था कि काव्य में सदैव परिमार्जन की आवश्यकता होती है।

कोलकाता से पधारे डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने कहा – आचार्य विष्णुकांत शास्त्री जी आधुनिककाल के आलोचक रहे हैं। शास्त्री जी की संस्मरणकारों में अग्रणी भूमिका रही है। वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। सम्मोहक वक्ता थे। आलोचक विद्वान, लेखक, राजनीतिज्ञ थे। शास्त्री जी के साहित्य की चर्चाएं कम हुई हैं। शास्त्री जी ने संस्मरण, आलोचना व रिपोर्ताज लेखन में अपनी महत्वपूर्ण लेखनी चलायी। उनकी लगभग 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। शास्त्री जी को जानने के लिए उनके साहित्य में प्रवेश होकर ही जाना जा सकता है। शास्त्री जी ने कहा कि प्रभावित करना तथा प्रभावित होना जीवंतता का प्रमाण है।

शास्त्री जी ने पथ के पड़ाव को मंजिल नहीं मानी। उनमें राष्ट्रीयता का भाव प्रचुरता से रहा। 'सुधियाँ उस चन्दन के वन की' संस्मरणात्मक रचनाओं में महत्वपूर्ण रही है। 'आलोक हुआ अपनापन' की संस्माणात्मक रचनाओं में

शास्त्री जी ने रामविलास शर्मा व अमृत राय, धर्मवीर भारती तथा बाबा नार्गाजुन पर भी संस्मरण लिखे। वे अपने विरोधी विचारधारा वाले साहित्यकारों के सम्बन्ध में भी सहजभाव से रचना करते थे। वे सिद्धहस्त कवि व प्रवचनकार थे। 'प्रखर मेघा, अडिग विश्वास' रामविलास शर्मा पर लिखा महत्वपूर्ण संस्मरण है।

अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त ने कहा– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का साहित्य जगत में कम मूल्यांकन किया गया, जो कि चिंता का विषय है। द्विवेदी जी का समय मातृभाषा को महत्व देने का रहा है। उनका मानना था कि मातृभाषा के बिना स्वराज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। मौलिकता अपनी भाषा में ही व्यक्त की जा सकती है। द्विवेदी जी का जीवन तप व तपस्या का जीवन है। वे राष्ट्रभाषा के मूर्तिवान स्वरूप हैं। समालोचक के रूप में उनका स्थान अग्रणी रहा है। द्विवेदी जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे। पंत की 'पल्लव' रचना महत्वपूर्ण रही है। पंत को शिल्प व सौन्दर्य का कवि

कहा गया है। पंत ने प्रकृति एक दूसरा संसार है, मानते हुए अपनी रचनाएं की। पंत छायावाद को व्यक्तिनिष्ठ नहीं बल्कि मूल्यनिष्ठ मानते है। पंत की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना के तत्व विराजमान हैं। पंत जी हमारे सामने मानवतावादी रचनाकार के रूप में आते हैं। भारत में मानवतावाद चराचरवाद के रूप में हमारे सम्मुख आता है। विष्णुकांत शास्त्री जी में सम्मोहनकारी क्षमता थी। शास्त्री जी के बंग्ला भाषा अनुवाद कार्य भी किया है। शास्त्री जी का मानना था कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए साधना की आवश्यकता होती है। कवि नये–नये शब्दों को गढ़ता है। शास्त्री जी पण्डित्यपूर्ण, आत्माभिमानी, सहज व्यक्तित्व के धनी थे।

डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त विद्त्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का अभार व्यक्त किया।

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में संस्थान द्वारा स्थापित गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र में संगोष्ठी का आयोजन-30 जून, 2022

हिन्दी पत्रकारिता के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं दशरथ प्रसाद द्विवेदी - डॉ.सुरेन्द्र दुबे

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में स्थापित गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 30 जून, 2022 को किया गया। 'हिन्दी पत्रकारिता : स्वाधीनता संघर्ष और पंडित दशरथ प्रसाद द्विवेदी' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, माननीय कार्यकारी अध्यक्ष, (तत्कालीन) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा की गयी।

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सुरेन्द्र दुबे, पूर्व कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, सिद्धार्थनगर उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र के उपरान्त आयोजित सत्र में डॉ. गोपेश्वरदत्त पाण्डेय, बागपत, डॉ. सिद्धार्थ शंकर, छपरा, डॉ. पंकज सिंह, लखीमपुर, सुश्री भारती सिंह, लखनऊ, डॉ. शर्वेश पाण्डेय, मऊ, डॉ. पवन कुमार पाण्डेय, गोरखपुर, डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह, गोरखपुर, डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय, गोरखपुर, डॉ. राकेश कुमार, गोरखपुर, डॉ. ओम प्रकाश सिंह, गोरखपुर, डॉ. प्रत्युष दुबे, गोरखपुर, डॉ. कृष्ण चन्द्र लाल, गोरखपुर एवं श्री स्वदेश कुमार द्विवेदी, गोरखपुर ने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी का संचालन डॉ. विभा सिंह, गोरखपुर ने किया।

इस अवसर पर डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं श्री श्याम कृष्ण सक्सेना, वरिष्ठ सहायक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने भी प्रतिभाग किया।

बुद्ध विद्यापीठ, नौगढ़, सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन - 26 व 27 जुलाई, 2022

नवजागरण में हिन्दी पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण योगदान है : डॉ. हरिबहादुर श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं हिन्दी विभाग, बुद्ध विद्यापीठ, नौगढ़, सिद्धार्थनगर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 26 व 27 जुलाई, 2022 को नौगढ़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'हिन्दी पत्रकारिता और नवजागरण' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. हरिबहादुर श्रीवास्तव, कुलपति, सिद्धार्थ द्वारा की गयी। संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. सुरेन्द्र दुबे, पूर्व कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, सिद्धार्थनगर उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र

के उपरान्त आयोजित सत्र में डॉ. हरिबहादुर श्रीवास्तव, प्रो. हरीश कुमार शर्मा, डॉ. जयसिंह यादव, डॉ. रेनू त्रिपाठी, श्री बलजीत कुमार श्रीवास्तव, डॉ. विनय तिवारी, डॉ. श्रुति, डॉ. शत्रुघ्न सिंह, डॉ. आलोक कुमार सिंह, सुश्री पूजा वर्मा, श्री गजेन्द्र उबारन गिरी, डॉ. ब्रह्म प्रकाश श्रीवास्तव, डॉ. अरुण कुमार यादव, डॉ. आदित्य कुमार त्रिपाठी, डॉ. अतुल चन्द्र, डॉ. पवन कुमार सिंह, श्री विनोद कुमार, श्री अश्वनि कुमार मिश्र, श्री प्रदीप सुविज्ञ, श्री चन्द्रदेव सिंह विशेन, श्री राकेश विश्वकर्मा, डॉ. भारत भूषण द्विवेदी, मो. नसरुल मुस्तफा खान, श्री राघवेन्द्र सिंह, डॉ. रत्नाकर पाण्डेय, श्री अभय कुमार श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किये।

गोस्वामी तुलसीदास, मुंशी प्रेमचंद, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य शिवपूजन सहाय एवं डॉ. जगदीश गुप्त स्मृति समारोह - 03 अगस्त, 2022

प्रेमचंद के बताये जीवन मूल्यों को अपनाने की आवश्यकता : डॉ. भगवान सिंह

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा गोस्वामी तुलसीदास, मुंशी प्रेमचंद, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य शिवपूजन सहाय एवं डॉ. जगदीश गुप्त की स्मृति में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 03 अगस्त, 2022 को पूर्वांह्न 10.30 बजे से किया गया। डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, मा. कार्यकारी अध्यक्ष, (तत्कालीन) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की अध्यक्षता में आयोजित संगोष्ठी में सम्माननीय अतिथि के रूप में पधारे डॉ. श्रीभगवान सिंह, भागलपुर, डॉ. कैलाश देवी सिंह लखनऊ एवं जयप्रकाश, चण्डीगढ़ उपस्थित थे।

अभ्यागतों का स्वागत करते हुए श्री पवन कुमार, निदेशक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान (तत्कालीन) ने कहा– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा गोस्वामी तुलसीदास, मुंशी प्रेमचन्द, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य शिवपूजन सहाय एवं डॉ. जगदीश गुप्त की पावन स्मृति को समर्पित इस संगोष्ठी में पधारे सभी विद्वानों का उ.प्र. हिन्दी संस्थान परिवार स्वागत एवं अभिनन्दन करता है। मा. कार्यकारी अध्यक्ष महोदय के प्रति भी हम हृदय से आभारी हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में हिन्दी संस्थान अपनी साहित्यक गतिविधियों में निरन्तर सजग है। पत्रकार बंधुओं, मीडियाकर्मियों एवं हमारे अनुरोध पर पधारें सभी साहित्य अनुरागियों, हिन्दी प्रेमियों का भी स्वागत एवं अभिनन्दन है। आशा है स्मृति समारोह के अवसर पर आयोजित इस संगोष्ठी में अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों से हम सभी लाभान्वित होंगे। शुभकामनाएँ।

डॉ. भगवान सिंह ने कहा – प्रेमचंद देशज यथार्थ के रचनाकार हैं। प्रेमचंद उपन्यास सम्राट हैं। प्रेमचंद कृषक जीवन को निकटता से अनुभव करते हुए विकास के लिए कृषि की प्रधानता को महत्वपूर्ण मानते हैं। देश व समाज का विकास कृषि से ही हो सकता है। गोदान में शिक्षित वर्ग

द्वारा किसानों के प्रति उपेक्षा का चित्रण मिलता है। आज प्रेमचंद के बताये जीवन मूल्यों, आदर्शों पर चलने व उसे अपनाने की आवश्यकता है। प्रेमचंद को पढ़ना है तो गाँव की ओर जाना होगा। 'पंच परमेश्वर' प्रेमचंद की रचना अद्भुत है। पंच परमेश्वर में खाला अपने हक के लिए जागरुक दिखती है। गोदान में धनिया होरी का हृदय परिवर्तन करने में समर्थ है। धनिया स्त्री के आदर्श आचरण की धनी है। प्रेमचंद की ग्रामीण क्षेत्र पर आधारित रचनाओं में आदर्श एवं यथार्थ दोनों भारत को जानना है, तो तुलसीदास जी के रामचरितमानस को पढ़ना होगा। तुलसीदास विश्वकवि के रूप में जाने व माने जाते हैं।

आचार्य शिवपूजन सहाय के सम्बन्ध में श्री मंगलमूर्ति को वक्तव्य देना था, किन्तु अस्वस्थ होने के कारण वे उपस्थित नहीं हो सके। उनका आलेख उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक, डॉ. अमिता दुबे ने प्रस्तुत किया। डॉ. कैलाश देवी सिंह ने कहा – डॉ. जगदीश गुप्त बहुआयामी व्यक्तित्व के धारक थे। डॉ. गुप्त आधुनिकता के दुराग्रही नहीं थे। वे नितांत सरल स्वभाव के थे। उनकी रचनाओं में प्राचीन और आधुनिकता का समन्वय मिलता है। वे सारस्वत रूप में कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने सम्पादक कर्म को बहुत ही सुन्दर ढंग से निर्वहन किया। वे स्वभाव से समन्वयवादी थे। उनके रेखाचित्रों में चित्रकार रूप दिखायी देता है। उनकी कविताएँ तर्कप्रधान हैं। कविताएँ देश प्रेम व मानवता से ओत–प्रोत हैं। गुप्त जी की रचनाओं में पौराणिक आख्यानों का समावेश है। गुप्त जी का ब्रजभाषा काव्य अन्य ब्रजभाषा कवियों के काव्य से

कहीं से भी कम नहीं है। उनकी कविताओं का लक्ष्य मानवीय चेतना है। उनका मानना था, नई कविता जनसाधारण के लिए नहीं, यह प्रबुद्ध वर्ग के लिए है। गुप्त जी मानवता के लिए भारतीय दर्शन को महत्व देते हैं। उनका मानना था संस्कृति गतिशील होती है। उनका काव्य शिल्प बहुआयामी है। वे मानव मूल्य व मानव धर्म के पक्षधर थे।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जयप्रकाश ने कहा– साहित्यकारों की स्मृतियों व जयंतियों की बड़ी महत्ता है। तुलसीदास जी स्मरणीय इसलिए हैं क्योंकि उन पर कटाक्ष व आलोचनाओं का प्रहार होता रहा, फिर भी वे अपनी जगह अडिग रहे। तुलसीदास जी ने मानव मूल्यों का निर्धारण किया, उनका अनुसरण करना चाहिए। तुलसीदास जी ने रामकथा के माध्यम से लोक जीवन का चित्रण किया। उनका काव्य समाज को दिशा प्रदान करता है। उनकी रचनाओं में समाज के विभिन्न जटिल प्रश्नों का उत्तर मिलता है। श्रेष्ठ काव्य वही है, जिसमें विस्तृत

व्याख्या की क्षमता हो। तुलसीदास जी ने अपनी रचना कवितावली में किसानों की समस्या व उनकी स्थितियों का व्यापक चित्रण किया है। तुलसीदास ने लोक जीवन से सम्बन्धित विषयों पर अपनी लेखनी चलायी। किसानों की गरीबी, दरिद्रता की स्थितियों का बहुत निकटता से अनुभव कर कवितावली में उद्धृत किया। तुलसी लोक कवि, लोक नायक, लोक परिवर्तन की क्षमता रखने वाले कवि हैं। तुलसी रामराज्य की कल्पना करते हैं। तुलसी अपनी रचनाओं व ग्रंथों के माध्यम से पूज्यनीय हैं। तुलसी की रचनाएँ लोक भावना से ओत–प्रोत हैं।

अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त ने कहा– स्मृति काफी महत्वपूर्ण है। 'निर्मल वर्मा के शब्दों में' – आत्म स्मृति जीवन है और आत्म विस्मृति मृत्यु है। तुलसीदास जी के अनुसार मुखिया को मुख की तरह होना चाहिए। साहित्य हमारे लिए इतिहास का बहुत बड़ा स्रोत है। तुलसीदास की रचनाओं में गहरा आत्मविश्वास भरा

हुआ है। तुलसी कहते हैं याचना प्रवृत्ति हमें कमजोर बनाती है। मांगना हो तो प्रभु श्रीराम से मांगिये, जहाँ मांगने के बाद मांगने की प्रवृत्ति ही समाप्त हो जाती है। तुलसीदास का आत्माभिमान हमें प्रेरणा देता है। प्रेमचन्द का समय भारतीयता की पहचान का समय था। मैथिलीशरण गुप्त की रचना भारत–भारती भी भारतीयता की पहचान है। जगदीश गुप्त परम्परा और आधुनिकता में सामंजस्य स्थापित करने वाले रचनाकार ही नहीं, कविता को राष्ट्रचेतना से जोड़ने का कार्य किया। जगदीश गुप्त

ब्रजभाषा काव्य के सिद्धहस्त कवि थे। उनकी कविताओं में चित्रात्मकता व विम्बात्मकता परिलक्षित होती है। जगदीश गुप्त ने माँ पर आधारित मार्मिक रचना की। शिवपूजन सहाय ने अपने जीवन को साहित्य व भाषा के लिए समर्पित कर दिया। सहाय जी सम्पादक व पत्रकार थे। डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वद्जनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

'आजादी का अमृत महोत्सव' के अन्तर्गत स्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन - 10 से 15 अगस्त, 2022 तक

साहित्यिक यात्रा एवं राष्ट्रीय ध्वज यात्रा का आयोजन

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अन्तर्गत दिनांक 10 अगस्त, 2022 से 15 अगस्त, 2022 तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दिनांक 10 अगस्त, 2022 को काकोरी शहीद स्मारक की साहित्यिक यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें उ.प्र. हिन्दी संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों, स्थानीय साहित्यकारों, लखनऊ विश्वविद्यालय के अध्यापकों एवं

नेशनल पीजी कालेज, लखनऊ के अध्यापकों सहित बड़ी संख्या में छात्र/छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया। प्रतिभाग के दौरान झण्डा वितरण भी किया गया। इस अवसर पर डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त, मा. कार्यकारी अध्यक्ष, (तत्कालीन) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा शहीद स्मारक स्थल पर क्रान्तिकारियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया गया।

दिनांक 11 अगस्त, 2022 को संस्थान के निकट रवीन्द्र तिराहे पर मा. कार्यकारी अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी संस्थान के निर्देशन में झण्डा रैली का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय साहित्यकारों सहित संस्थान के अधिकारियों /कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया, साथ ही झण्डा रैली पद यात्रा भी निकाली गयी।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दिनांक 15 अगस्त, 2022 को संस्थान भवन में मा. कार्यकारी अध्यक्ष/निदेशक महोदय की उपस्थिति में संस्थान भवन में झण्डारोहण व रंगोली का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय

साहित्यकारों व संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। झण्डा रोहण के उपरान्त मा. कार्यकारी अध्यक्ष/निदेशक महोदय के निर्देशन में जिला–सीतापुर के गंधौली स्थित पं. कृष्णबिहारी मिश्र की जन्मस्थली एवं ग्राम–बाड़ी, जिला–सीतापुर में स्थित आचार्य नरोत्तमदास की जन्मस्थली की साहित्यिक यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों, लखनऊ विश्वविद्यालय के अध्यापकों एवं स्थानीय साहित्यकारों ने प्रतिभाग किया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुस्तकालय

संस्थान भवन में स्थित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुस्तकालय में लगभग 55,000 (पचपन हजार) पुस्तकों का एक समृद्धशाली संग्रह है। पाठकों द्वारा सदस्यता ग्रहण कर पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री का उपयोग किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष 2022–23 में अनेक नये सदस्य बने तथा पूर्व सदस्यों द्वारा अपनी वार्षिक सदस्यता का नवीनीकरण कराया गया।

अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों का क्रय, आगम–निर्गम कार्य व वार्षिक सदस्यता नवीनीकरण शुल्क प्राप्त करना, छायाप्रति सुविधा प्रदान करना आदि महत्वपूर्ण कार्य किये गये। पुस्तकालय हेतु समाचार पत्रों, पत्रिकाओं आदि का नियमित क्रय किया गया। पुस्तकालय का सफल संचालन एवं पुस्तकालय में पठन–पाठन हेतु उचित वातावरण बनाये रखना प्राथमिकता है।

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत स्वतंत्रता आंदोलन एवं राष्ट्रीय एकता पर केन्द्रित बहुभाषीय काव्य गोष्ठी - 17 अगस्त, 2022

...सात स्वरों की सम्मिलित संज्ञा हिन्दुस्तान - शिवओम अम्बर

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत स्वतंत्रता आंदोलन एवं राष्ट्रीय एकता पर केन्द्रित बहुभाषीय काव्य गोष्ठी का आयोजन दिनांक 17 अगस्त, 2022 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से यशपाल सभागार, हिन्दी भवन, लखनऊ में किया गया।

डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, मा. कार्यकारी अध्यक्ष, (तत्कालीन) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की विशेष उपस्थिति में आयोजित इस काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय द्वारा की गयी।

डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय ने संस्कृत में अपनी काव्य रचना आर्य विश्वजना विचक्षणा बलिदान स्मृति मुग्धमानसाः कुसुमै : सह यन्तु चत्वरे प्रतिमा यत्र हुतात्मनः क्वाचित पढ़ी।

श्री मनमोहन सिंह 'तन्हा' ने पंजाबी में कविता प्रस्तुत करते हुए कहा– दशम पिता तेरी सिक्खी दा, मैं वी मान बधावांगां, अगर देश नू थोड़ पवेगी मैं वी शीश कटावांगा।/कदे किसे तो पिदे रहना सिक्खी दा दस्तूर नही, परचम अपने देश दा 'तन्हा' दुनिया विच लहरावांगा।

श्री हरिओम 'हरि' ने ब्रज भाषा में काव्य पाठ किया– देश के जवान बीर बांकुरे महान हैं जे, वैरिन सौं कबहुं न हारे हैं न हारिंगे। कैसौ हूं कराल काल भाल चढ़िआवै पीर,

कबहुँ न हथियार डारे हैं न डारेंगे।।

श्री सतीश आर्य ने अवधी में कहा– न केऊ भूखा रहै, न तौ नंगा रहै, जन्म होवै हुवैं, जहं पै गंगा बहै। रात–दिन बस इहै मोरे मन मा रहै, देश भारत रहै और तिरंगा रहै।।

श्री देवकीनन्दन 'शान्त' ने बुन्देली में कहा– स्तुतिझाँसी की रानी की, बुन्देली पानी की, अंग्रेजन खैं मार भगावे, नारी महारानी, घासीराम 'व्यास', ईसुरी, की मीठी वाणी की, बुन्देली में 'शान्त' सुनाए, स्तुति रजधानी।।

श्री कमलेश राय ने भोजपुरी में कहा– कल–कल धुनि में गंगा–जुमना जेकरा गौरव क करे गान, पग धोवे जेकर रतनाकर जग में जेकर कीरत महान, जहंवा झुरके तीनों बयार सुन्दर सुदेश क अभिनन्द, भारत का अनुपम पुन्य भूमि ओ हिन्द उसका अभिनन्दन। वरिष्ठ कवि श्री अनन्त मिश्र ने कविता पाठ किया।

श्री शिवओम अम्बर ने पढ़ा– शौर्य विनय प्रज्ञा प्रणय काव्य कला विज्ञान, सात स्वरों की सम्मिलित संज्ञा हिन्दुस्तान।

श्री जनकवि प्रकाश ने कहा– नव–रस रंग के तरंग में तरेगा मन, वाणी वर विमल गढ़ाने चले आये हैं। बड़े भाग्यवान आप हैं महानुभाव जो कि साहित्य की गंगा में नहाने चले आये हैं।

श्री महेश अश्क ने ग़ज़ल पढ़ी– 'आँसू–आँसू कमाना पड़ता है, दर्द ख़ैरात में नहीं मिलता। श्री अतुल वाजपेयी ने काव्य पाठ किया– सर्वोच्च रहेगा कीर्ति केतु मैं सवा अरब की ताकत हूँ, मैं भारत हूँ, मैं भारत हूँ, मैं भारत हूँ, मैं भारत हूँ।

डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, मा. कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत किया, साथ ही कविता क्या है, क्या होनी चाहिए इस ओर भी संकेत किया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे डॉ. अनिल शर्मा ने 'कलम आज उनकी जय बोल' (दिनकर), कदम मिलाकर चलना होगा (पं. अटल बिहारी वाजपेयी), पता नहीं वो कौन थी (उदय भानु हंस) सहित अनेक कविताओं की सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। उनके साथ तबले पर सावन डांगी, गिटार पर संजय माथुर, सिथेसाइजर पर रिंकू ने सहयोग किया। डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया।

प्रकाशन अनुदान योजना एवं साहित्यकार कल्याण कोष योजना

प्रकाशन अनुदान योजना अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022–23 में निम्नलिखित 20 पाण्डुलिपियों को प्रकाशन अनुदान प्रदान किया गया :-

- भारत का श्रृंगार – श्रीमती लल्लू देवी 'ललिता', बहराइच
- क्षितिज के पार – श्री अनिल मिश्रा 'गुरुजी', लखनऊ
- सत्यनाम विरुदावली – श्री कालीदत्त द्विवेदी, अमेठी
- कांपते जल पर (स्व. कौशलेन्द्र) – श्रीमती मुदृला सिंह, कानपुर
- सारंग कुण्डलियाँ – श्री प्रदीप सारंग, बाराबंकी
- दो औरतें – सुश्री चित्रा पंवार, मेरठ
- अभी नयन हैं रीते – श्रीमती सविता वर्मा, मुजफ्फरनगर
- सुगबुगाता सन्नाटा – श्री उमेश कुमार पटेल 'श्रीश', महाराजगंज
- जीवन के रंग दोहा के संग – डॉ. उमाशंकर 'राही', बदायूँ
- भारत की नारियाँ – श्री सुनील कुमार वाजपेयी 'शिवम', बाराबंकी
- वामा–मुखर मौन की संवाहक – सुश्री अलका निगम, लखनऊ
- लहजा – डॉ. नसीम निकहत, लखनऊ
- गुइयाँ – डॉ. अपूर्वा अवस्थी, लखनऊ
- आत्मकथा पं. रामनरेश त्रिपाठी – श्री जयंत कुमार त्रिपाठी, सुलतानपुर
- बेरंग – श्री सुरेश सौरभ, लखीमपुर, खीरी
- आभा कुँवरि – श्री रघुवीर सिंह 'अरविन्द', अलीगढ़
- तन–मन–धन कुर्बान वतन पर – श्री जयराम दास रस्तोगी 'दास', लखनऊ
- देश के कर्णधार – श्री योगगुरु धर्मचन्द्र गुप्ता, प्रयागराज
- किताबें – सुश्री नेहा राजानी, लखनऊ
- मम्मी को कोई समझाए – श्रीमती अनीता सिन्हा, लखनऊ

साहित्यकार कल्याण कोष योजना अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2022–23 में निम्नलिखित तीन साहित्यकारों को आर्थिक सहायता प्रदान की गयी :-

1– श्री मेवालाल यादव, वाराणसी

2– श्री मनोज अग्रवाल चांदवासिया, लखनऊ

3– श्री अशोक अग्रवाल, हापुड़

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वत्व बोध के रचनाकार हैं – डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा दिनांक 09 सितम्बर, 2022 को 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयन्ती' समारोह का आयोजन पूर्वाह्न 10.30 बजे से यशपाल सभागार, हिन्दी भवन, लखनऊ में किया गया।

डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, मा. कार्यकारी अध्यक्ष, (तत्कालीन) उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की अध्यक्षता में आयोजित जयन्ती समारोह में सम्माननीय अतिथि के रूप में डॉ. सुरेन्द्र दुबे, गोरखपुर व डॉ. ओम प्रकाश सिंह, वाराणसी उपस्थित थे। कार्यक्रम में वाणी वंदना की प्रस्तुति श्री सर्वजीत सिंह मारवा द्वारा की गयी।

डॉ. सुरेन्द्र दुबे ने कहा– भारतेन्दु जी की जीवन यात्रा बहुत कम रही। वे मात्र 35 वर्ष जीवित रहे, लेकिन इस अल्प आयु में वे साहित्य में अमर हो गये। भारतीय संस्कृति में अमरतत्व विद्यमान है। भारतीय संस्कृति निरंतर प्रवाहित होती रहती है। जीवन में आयु कितनी हो, यह महत्वपूर्ण नहीं बल्कि अल्प आयु में कितने सत्कर्म किये गये है, उसकी महत्ता है। भारतेन्दु जी लोकहित चिन्तक थे। उन्होंने मुद्राराक्षस का अनुवाद किया। नाटकों का अभ्युदय भारतेन्दु जी से होता है। नाटकों में नवजागरण व लोकजागरण का तत्व होना चाहिए। वे नाटकों में पुरानी शैली छोड़कर नई शैली के प्रयोग के पक्षधर थे। नाटक

देशकाल के अनुरूप होना चाहिए। नाटकों में आधुनिक विचारों का समावेश होना चाहिए। उनके नाटक राष्ट्रीय स्वाधीनता से ओत–प्रोत हैं। वे अंग्रेजी शासन व्यवस्था के विरोधी थे। कर्मशीलता ही लक्ष्य तक पहुँचने का माध्यम है। भारत दुर्दशा उनकी महत्वपूर्ण रचना है, जिसमें भारत वर्ष की समस्याओं व दुर्दशा का वर्णन मिलता है। अपनी इसी रचना में समस्याओं का निराकरण भी बताते हैं। भारतेन्दु जी के नाटकों का जब मंचन होता है, तो उसमें भारतेन्दु स्वयं अभिनय करते नजर आते है। 'नीलदेवी' तथा 'सत्य हरिश्चन्द्र' उनके प्रमुख नाटकों में से है। वे भारत को अभ्युदय के रूप में देखना चाहते हैं।

डॉ. ओम प्रकाश सिंह ने कहा– भारतेन्दु जी का जन्म उस समय हुआ, जब दयानन्द सरस्वती के विचारों व आन्दोलनों का युग चल रहा था। महापुरुषों का जीवन

संघर्षमय रहा है। भारतेन्दु जी की कुल रचनाएँ 72 हैं। भारतेन्दु जी को युगबोध था। भारत सरकार की नई शिक्षानीति के समय में आज हम भारतेन्दु की प्रासंगिकता पर चर्चा कर रहें है। उनके साहित्य में पत्रकारिता से विषय–वस्तु का समावेश हुआ। उन्होंने 'कवि वचन सुधा' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। उन्होंने अपने समाचार पत्रों में नवोदित कवियों, साहित्यकारों को स्थान दिया। राजा सितारे हिन्द भारतेन्दु जी के गुरु थे। भारतेन्दु जी ने कभी अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार नहीं की, जिससे उनको काफी आर्थिक संकटों से भी गुजरना पड़ा था। भारतेन्दु जी भविष्य के स्वप्नद्रष्टा थे। स्वदेशी प्रतिज्ञा के अनुकरण व नियमों का संचालन किया। उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। उन्होंने अंग्रेजों के बारे में लिखा– 'अंग्रेज जब इंग्लैण्ड से आते है तो वे दरिद्र होते हैं। जब भारत से इंग्लैण्ड जाते हैं, तब कुबेर बनकर जाते

हैं।' उन्होंने भारतीयों में साहस भरा व ललकारा भी। वे देशभक्ति विचारधारा से ओत–प्रोत थे। आज भारत में भारतेन्दु व उनके विचार सभी प्रासंगिक है।

अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. सदानन्दप्रसाद गुप्त, मा. कार्यकारी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने कहा– भारतेन्दु जी ब्रज भाषा के कवि हैं। भारतेन्दु जी उन महान विभूतियों में से एक हैं, जो किसी विशेष कार्य को सम्पन्न करने के लिए धरती पर आते है। उनके समय में देश में संक्रमण काल था। वे नव जागरण के पुरोधा कहे जाते हैं। 'कवि वचनसुधा' का ध्येय था कि भारत अपना स्वप्न पूरा करे। वे दूरदर्शी व भविष्य के स्वप्न द्रष्टा थे। उन्होंने भारत में नव जागरण का मंत्र फूँका। वे दृढ़प्रतिज्ञ, स्वावलम्बी रचनाकार थे। उनके साहित्य में श्रृंगार तत्व उदात्त श्रृंगार है।

उनका कहना था, परमेश्वर को पाने का मार्ग प्रेम है। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना व राष्ट्रप्रेम से भरी हैं। उनका मानना था कि नाटकों में लौकिक विषयों का समावेश होना चाहिए। जिस देश में तुम रहते हो, उससे तुम प्रेम करो। भारतेन्दु वैष्णव थे। उनकी मान्यता थी कि द्वेष व कलह देश की एक बड़ी समस्या है। वे औपनिवेशिक व्यवस्था से संघर्ष करते नजर आते हैं। भाषा केवल विचारों के प्रेषण का माध्यम नहीं, भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। इसी दृष्टि से उन्होंने निजभाषा पर बल दिया। भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। स्वदेशी चेतना के तत्व उनके निबन्धों में मिलते हैं। वे आर्थिक स्वावलम्बन के पक्षधर थे। वे भारतीयों को कभी पुचकार कर, कभी फटकार कर अपनी बात कहते हैं। भारतेन्दु के निबंधों में सामाजिक उद्देश्य निहित है। व्यंग्य की परम्परा हिन्दी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से प्रारम्भ होती है।

डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वद्जनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

हिन्दी दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन – 14 सितम्बर, 2022

हिन्दी में सभी को आत्मसात करने की क्षमता – डॉ. हरिशंकर मिश्र

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 2022 के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन पूर्वाह्न 10.30 बजे से यशपाल सभागार, हिन्दी भवन, लखनऊ में किया गया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस के अवसर पर सम्माननीय अतिथि के रूप में डॉ. हरिशंकर मिश्र, लखनऊ, डॉ. रमेश चन्द्र त्रिपाठी, लखनऊ एवं डॉ. रामकृष्ण, लखनऊ उपस्थित थे। कार्यक्रम में वाणी वंदना सुश्री रत्ना शुक्ला द्वारा प्रस्तुत की गयी।

अभ्यागतों का स्वागत करते हुए श्री पवन कुमार,

निदेशक, (तत्कालीन) उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में आप सबका स्वागत अभिनन्दन एवं वंदन है, आप सबको हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ।

हिन्दी भाषा के प्रति भारतीय जनमानस में गौरव का भाव है, क्योंकि हिन्दी राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है, हिन्दी भाषा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है, विश्व में लगभग 300 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं, इन भाषाओं की अपनी विशेषताएँ होती हैं, जो भाषाएँ अपनी भाषित विशेषताओं में समान हैं, वे मूलतः एक ही भाषा परिवार से निकली या विकसित मानी जाती हैं, विश्व में लगभग एक दर्जन भाषा परिवार हैं, हिन्दी भाषा का परिवार भी विस्तृत है, भारत विविधता से परिपूर्ण देश है, जहाँ जलवायु के साथ–साथ खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार और संस्कृति के साथ–साथ भाषा की विविधता देखी जाती है, सभी भाषाओं के मध्य सम्पर्क स्थापित करते हुए हिन्दी सेतु का कार्य करती है, इसलिए हिन्दी राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करती है।

14 सितम्बर, 1950 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी भाषा को राज भाषा के रूप में स्वीकार किया गया, इसलिए आज का दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, इस दिन हम अपने गौरव को स्मरण करते हुए हिन्दी के प्रति अपने महत्वपूर्ण दायित्व को भी याद करना चाहते हैं, जिससे हिन्दी विश्व की महानतम भाषाओं में एक हो सके। हिन्दी भाषा के प्रति दृढ़ आस्था के साथ कार्य करने वाले राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन जिनके नाम पर यह हिन्दी भवन स्थापित है। सहित अनेकानेक हिन्दी सेवियों का स्मरण करते हुए हम इस संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहते हैं कि हिन्दी के प्रति अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करेंगे।

हमारे आमंत्रण पर पधारे वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. हरिशंकर मिश्र व डॉ. रमेश चन्द्र त्रिपाठी के प्रति हम हृदय से आभारी हैं, जिनके महत्वपूर्ण व्याख्यान से हम सभी लाभान्वित हो रहे हैं। नेशनल पी.जी. कॉलेज के हिन्दी

विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण का भी स्वागत और अभिनन्दन है, आपका सहयोग हमें निरन्तर प्राप्त होता रहता है। वाणी वन्दना की प्रस्तुति हेतु आमंत्रित सुश्री रत्ना शुक्ला को भी शुभकामनाएँ। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी दिवस पर आयोजित इस विचार गोष्ठी हिन्दी भाषा और साहित्य से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों से हमारा ज्ञानवर्द्धन होगा, विशेषकर हमारे युवा साथियों का। मीडिया कर्मियों सहित सभागार में उपस्थित सभी का स्वागत एवं अभिनन्दन है।

डॉ. रामकृष्ण ने कहा– आजादी की लड़ाई में साहित्यकारों ने अपनी कलम की धारदार से बहुत बड़ी भूमिका निभायी। भारत की वर्तमान नई शिक्षानीति में शिक्षण–संस्थाओं में हिन्दी को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने का प्रयास हो रहा है। हिन्दी को विज्ञान की भाषा बनाने पर बल देना है। विज्ञान की पुस्तकों का हिन्दी में लेखन करना होगा। भक्ति साहित्य भारत के दक्षिण से उत्तर की ओर शनैः शनैः विचरित होती हुई समृद्ध होती है। हिन्दी सम्पूर्ण भारत वर्ष को एकसूत्र में बांधने में सक्षम है। हिन्दी भाषा उत्तर व दक्षिण के कवियों एवं साहित्यकारों में भी समन्वय की भावना जागृत करती है। भक्ति साहित्य की इसमें बड़ी भूमिका रही है।

डॉ. रमेश चन्द्र त्रिपाठी ने कहा– हिन्दी सम्पूर्ण राष्ट्र की सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित है। संविधान ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी है। आज की युवा पीढ़ी पर हिन्दी को बढ़ाने, प्रचार–प्रसार व प्रयोग करने के लिए महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ हैं। आज का युवा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए प्रयास कर भी रहा है। हिन्दी केवल हिन्दी दिवस तक सीमित न रहे। हिन्दी के पास बहुत ताकत है। हिन्दी ने व्यवसाय व विज्ञान के क्षेत्र में अपना स्थान बनाया है। डिजिटल इण्डिया हिन्दी को विश्व के कोने–कोने में पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभा रही है। इन्टरनेट की दुनिया में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। विभिन्न साफ्टवेयर के माध्यम से हिन्दी भाषा को बढ़ावा मिल रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। 'कविता कोश' हिन्दी को आगे बढ़ाने में समर्थ हो रहा है। विदेशों में भी वैज्ञानिकों व

साहित्यकारों द्वारा हिन्दी का काफी प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही अनुवाद कार्य भी हो रहे हैं।

डॉ. हरिशंकर मिश्र ने कहा– हिन्दी का आधुनिक भारतीय भाषाओं में प्रमुख स्थान है। हिन्दी आमजन की भाषा है। सम्पूर्ण भारत वर्ष को जोड़ने का कार्य हिन्दी भाषा प्रारम्भ से ही करती रही है। भारत को आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से समन्वय करने में हिन्दी अग्रणी रही है। हिन्दी भाषा पूर्व में दक्षिण भारतीय भाषाओं से असहमति के कारण काफी संघर्ष करते हुए आगे बढ़ रही है। हिन्दी का व्यापक चरित्र यह है कि सभी को आत्मसात करने की क्षमता है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हिन्दी को विकृत न होने दिया जाये। भाषा व्याकरण से परिष्कृत होती है। हिन्दी एक अनुशासनात्मक भाषा है। सबको समाहित करने की क्षमता है। जिस भाषा में समाहित करने की क्षमता होती है, वही जीवित रहती है। भाषा को आगे बढ़ाने में लोक जनमानस की भूमिका महत्वपूर्ण है।

हिन्दी दिवस के अवसर पर उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित कहानी, कविता, निबन्ध प्रतियोगिता वर्ष 2022 के परिणाम घोषित किये गये। कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार सुश्री रोशनी रावत, लखनऊ, द्वितीय पुरस्कार सुश्री शिखा सिंह 'प्रज्ञा', लखनऊ, तृतीय पुरस्कार

श्री हिमांशु सिंह, लखनऊ, सांत्वना पुरस्कार श्री श्याम जी अवस्थी, कानपुर देहात, श्री विक्रांत बाह्मण, झाँसी, सुश्री पूनम सिंह, प्रयागराज को प्रदान किया जायेगा।

कविता प्रतियोगिता प्रथम पुरस्कार श्री दिलीप व्यास, झाँसी, द्वितीय पुरस्कार सुश्री वंदिता पाण्डेय, लखनऊ, तृतीय पुरस्कार सुश्री नीरजा द्विवेदी, अयोध्या और सांत्वना पुरस्कार श्री अमन कुमार, बरेली, व श्री विशाल श्रीवास्तव फर्रूखाबाद को प्रदान किया जायेगा। निबन्ध प्रतियोगिता प्रथम पुरस्कार श्री स्नेह द्विवेदी, वाराणसी, द्वितीय पुरस्कार श्री पवन सिंह, प्रयागराज, तृतीय पुरस्कार सुश्री आकांक्षा गुप्ता, चन्दौली एवं सांत्वना पुरस्कार सुश्री निहारिका दुबे, गोरखपुर, श्री श्रेयस सिंह, गोरखपुर को प्रदान किया जायेगा। चयनित युवा रचनाकारों को कहानी, कविता, निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रु. 7,000/– द्वितीय पुरस्कार रु. 5,000/– तृतीय पुरस्कार रु. 4,000/– सांत्वना पुरस्कार रु. 2,000/– की धनराशि प्रदान कर निकट भविष्य में पुरस्कृत किया जायेगा।

डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वद्जनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

नव परिमल, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन - 23 सितम्बर, 2022

सुभद्रा कुमारी चौहान सहित अन्य कवियों का स्मरण आवश्यक - डॉ. उदय प्रताप सिंह

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं नव परिमल प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 23 सितम्बर, 2022 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दुस्तानी एकेडमी के सभागार में हुआ।

सुभद्रा कुमारी चौहान पर केन्द्रित सत्र की अध्यक्षता डॉ. उदयप्रताप सिंह, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी अकादमी ने की। प्रस्ताविकी डॉ. मीना कुमारी ने प्रस्तुत की, अभ्यागतों का स्वागत डॉ. अमृता ने किया।

डॉ. उदयप्रताप सिंह ने कहा– सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ–साथ श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' सहित अन्य कवियों, साहित्यकारों का स्मरण

अवश्य करना चाहिए। उस वीरांगना महिला को जो अपनी लेखनी से अमर हो गयी, को नमन करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। कार्यक्रम के इस सत्र का संचालन डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय ने किया।

द्वितीय सत्र जो श्री श्याम नारायण पाण्डेय पर केन्द्रित रहा की अध्यक्षता डॉ. कन्हैया सिंह, आजमगढ़ द्वारा की गयी। मुख्य वक्ता के रूप में लखनऊ से पधारे डॉ. रामकठिन सिंह ने कहा– श्री श्याम नारायण पाण्डेय कालजयी रचनाकार हैं। उनकी कविताएँ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि उन्होंने जिन चरित्रों के निर्माण में भाव भरे, वे आज बदली हुई परिस्थितियों में भी महत्वपूर्ण हैं, जो उनकी दूरदर्शिता की ओर संकेत करते हैं। इस सत्र में प्रस्ताविकी

डॉ. अमरेन्द्र त्रिपाठी, प्रयागराज द्वारा प्रस्तुत की गयी।

डॉ. कन्हैया सिंह जी ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा– श्री श्याम नारायण पाण्डेय महाकवि वीर रस शिरोमणि थे। उन्हें आधुनिक संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। उन्होंने कविता हल्दी घाटी के माध्यम से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे वीरों को प्रेरित किया है।

उनकी रचनाएँ पुरा आख्यान नहीं हैं, वरन् आधुनिक संदर्भ से जुड़ी रचनाएँ हैं। आह्वान की कविता करने वाला कवि आधुनिकता के संदर्भ को जोड़ता है, पुराख्यान के साथ। उनकी पावन स्मृति को नमन करने का समय अमृत महोत्सव को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। वे भव्य और दिव्य भारत के निर्माण की बात करते हैं।

तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन – 24 व 25 सितम्बर, 2022

दीनदयाल जी ने एकात्म मानववाद पर बल दिया – प्रो. हरिशंकर उपाध्याय

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं दर्शन शास्त्र विभाग तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय जौनपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 24 व 25 सितम्बर, 2022 को 'एकात्म मानववाद; आध्यात्मिकता का द्वार' विषय पर केन्द्रित एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन जौनपुर में किया गया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. सभाजीत मिश्र, गोरखपुर द्वारा की गयी। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. हरिकेश सिंह, गाजीपुर उपस्थित रहे। यह संगोष्ठी महाविद्यालय के पूर्व प्रबन्धक स्व. डॉ. अशोक सिंह को समर्पित थी।

संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए प्रयागराज से पधारे प्रो. हरिशंकर उपाध्याय ने कहा– पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती के पूर्व दिवस पर आयोजित इस संगोष्ठी की अपनी महत्ता है। दीनदयाल जी नस्लवाद से प्रभावित राष्ट्रवाद के समर्थक नहीं थे। वे एकात्ममानववाद पर बल देते थे। दीनदयाल जी ने 'चिति' को विशेष महत्व दिया। हमारे राष्ट्र की आत्मा चिति के अनुकूल है, जिसे संस्कृति में समादृत किया जाता है।

डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने संस्थान की विभिन्न योजनाओं के सम्बन्ध में अवगत कराते हुए पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की स्मृति को सादर नमन किया। इस अवसर पर प्रो. शैलेश कुमार मिश्र, वाराणसी, प्रो. वन्दना सुमन, आरा बिहार, डॉ. एस.पी. पाण्डेय, निदेशक पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, वाराणसी उपस्थिति हुये।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन - 15 व 16 अक्टूबर, 2022

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं उसका कार्यान्वयन

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ एवं बी.एड. विभाग महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगलधूसड़, गोरखपुर के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 16 व 17 अक्टूबर, 2022 को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं उसका कार्यान्वयन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पूर्व अध्यक्ष एवं वर्तमान में उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री जी के शिक्षा सलाहकार प्रो. डी. पी. सिंह का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेश सिंह ने की। बीज वक्तव्य जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के इतिहास विभाग के आचार्य प्रो. मजहर आसिफ द्वारा किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतीहारी, बिहार के स्कूल ऑफ एजुकेशन के डीन प्रो. आशीष श्रीवास्तव एवं निदेशक, सेंटर फॉर पालिसी एण्ड गर्वनेस, नई दिल्ली डॉ. रामानन्द पाण्डेय उपस्थित रहे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने उपस्थित सभी अतिथि का स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर देश भर के शिक्षण संस्थाओं से आए हुए अनेक शिक्षाविद् शिक्षक एवं शोधार्थी उपस्थित रहे। इसके बाद संगोष्ठी दो समानान्तर सत्रों में चली, जिसके दौरान जगत जननी माँ सीता सभागार एवं श्री राम सभागार में तकनीकी चार सत्र चले।

महन्त गोपालनाथ स्मार्ट क्लास में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 21 शिक्षण प्रशिक्षण चिकित्सा एवं तकनीकी संस्थानों के प्राचार्य एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संयोजकों की कार्यशाला चार सत्रों में पूर्ण हुई।

प्रथम तकनीकी सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में महन्त अवैद्यनाथ राजकीय महाविद्यालय कौड़िया के वाणिज्य विभाग के सहायक आचार्य अमरनाथ तिवारी ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं तकनीकी शिक्षा' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सत्र में सात शोधार्थियों ने अपने शोध–पत्र प्रस्तुत किये। अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय की शिक्षा संकाय की अध्यक्ष प्रो. शोभा गौड़ व सह अध्यक्ष के रूप में दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय शिक्षा शास्त्र विभाग की सहायक आचार्य डॉ. मीतू सिंह ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। सत्र का संचालन डॉ. अनुभा श्रीवास्तव तथा प्रतिवेदन श्रीमती साधना सिंह ने किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार के स्कूल ऑफ एजुकेशन विभाग के डीन प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने की।

सह अध्यक्ष के रूप में नागालैण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के प्रमुख के ऑनलाइन उपस्थित रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के भौतिकी विभाग के आचार्य प्रो. शान्तनु रस्तोगी ने ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति'' के अन्तर्गत पाठ्यक्रम एवं परीक्षा प्रणाली पर दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में अपना शोधपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय एवं प्रतिवेदन श्री रितेन्द्रनाथ पाण्डेय ने किया। इस सत्र में कुल चार शोधार्थियों ने अपने शोध–पत्र का वाचन किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। सत्र की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर के शिक्षाशास्त्र विभाग की आचार्य प्रो. सुषमा पाण्डेय ने की। सह अध्यक्ष के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर के शिक्षाशास्त्र विभाग के सहायक आचार्य डॉ. राजेश कुमार सिंह उपस्थित रहे।

विषय विशेषज्ञ के रूप में क्षेत्रीय उच्च शिक्षाधिकारी डॉ. अश्वनी मिश्र ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के अन्तर्गत उच्च शिक्षा में उत्तर प्रदेश सरकार के कार्य एवं दिशा विषय पर अपना विस्तृत उद्बोधन दिया। सत्र का संचालन बी.एड. विभाग की सहायक आचार्य श्रीमती विभा सिंह ने तथा प्रतिवेदन डॉ. दिव्या पाण्डेय ने किया। इस सत्र में तीन शोधार्थियों ने अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ के फैकल्टी ऑफ स्पेशल एजुकेशन के डीन प्रो. रजनी रंजन सिंह ने की। विषय विशेषज्ञ के रूप में दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय सहजनवा की प्राचार्य डॉ. कुमुद त्रिपाठी ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत शिक्षक–शिक्षा' विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके साथ ही विषय विशेषज्ञ के रूप में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के आचार्य डॉ. विवेकनाथ त्रिपाठी ने भी अपना शोधपरक व्याख्यान प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन समाजशास्त्र विभाग की सहायक आचार्य डॉ. भावना पाण्डेय तथा प्रतिवेदन हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. आरती सिंह ने किया। सत्र में कुल चार शोधार्थियों ने अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

सत्रों के समानान्तर कार्यशाला के चार सत्रों में महाराणा प्रताप की शिक्षा संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर अपनी–अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत की गयी एवं विषय विशेषज्ञ के सुझाव सम्मिलित किये गये। विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. मजहर आसिफ, प्रो. राजशरण शाही, प्रो. रजनी रंजन सिंह, श्री प्रमथनाथ मिश्रा, प्रो. राजेन्द्र भारती, डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह एवं डॉ. प्रदीप राव उपस्थित रहे।

समापन समारोह में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. उदय प्रताप सिंह जी उपस्थित थे। कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में उ.प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त तथा मुख्य अतिथि के रूप में बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के कुलपति प्रो. संजय सिंह भी उपस्थित रहे।

हरिवंशराय बच्चन, गजानन माधव मुक्तिबोध व गौरापंत शिवानी स्मृति समारोह एवं कहानी, कविता, निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह - 04 नम्बवर, 2022

हमारा जीवन कला, साहित्य, संस्कृति से मिल कर बना - रवीन्द्र पाल सिंह

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा हरिवंशराय बच्चन, गजानन माधव मुक्तिबोध व गौरापंत शिवानी स्मृति समारोह का आयोजन एवं कहानी, कविता, निबंध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 04 नवम्बर, 2022 को यशपाल सभागार, हिन्दी भवन, लखनऊ में किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित लखनऊ, डॉ. हेमांशु सेन, लखनऊ एवं डॉ. अनिल कुमार विश्वकर्मा, बाराबंकी उपस्थित रहे।

अभ्यागतों का स्वागत करते हुए श्री आर.पी. सिंह निदेशक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा– साहित्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। हमारा जीवन कला, साहित्य, संस्कृति से मिलकर बना हुआ है। विज्ञान की भी जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। साहित्य में क्रांति को जगाने की क्षमता है। साहित्य ने समय–समय पर देश व राष्ट्र में जागृति लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। आज के नये रचनाकारों में साहित्य सृजन की क्षमता है। सम्मानित किये

गये सोलह युवा रचनाकारों को मेरी शुभकामनाएँ।

इस अवसर पर कहानी, कविता एवं निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार हेतु चयनित युवा रचनाकारों में कहानी प्रतियोगिता प्रथम पुरस्कार– सुश्री रोशनी रावत, लखनऊ, द्वितीय पुरस्कार–सुश्री शिखा सिंह 'प्रज्ञा', लखनऊ, तृतीय पुरस्कार–श्री हिमाशु सिंह, लखनऊ, सांत्वना पुरस्कार–श्री श्यामजी अवस्थी, कानपुर देहात, श्री विक्रान्त बाहाण झाँसी, सुश्री पूनम सिंह, प्रयागराज तथा कविता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार–श्री दिलीप व्यास, झाँसी, द्वितीय पुरस्कार–सुश्री वंदिता पाण्डेय, लखनऊ, तृतीय पुरस्कार–सुश्री नीरजा चतुर्वेदी, अयोध्या, सांत्वना पुरस्कार–श्री अमन कुमार, बरेली, श्री विशाल श्रीवास्तव, फर्रुखाबाद एवं निबंध प्रतियोगिता प्रथम पुरस्कार–श्री स्नेह द्विवेदी, वाराणसी द्वितीय पुरस्कार–श्री पवन सिंह, प्रयागराज, तृतीय पुरस्कार–सुश्री आकांक्षा गुप्ता, चन्दौली, सांत्वना पुरस्कार–सुश्री निहारिका दुबे, गोरखपुर, श्री श्रेयस सिंह, गोरखपुर को पुरस्कार धनराशि, उत्तरीय, प्रशस्ति पत्र से पुरस्कृत किया गया।

डॉ. अनिल कुमार विश्वकर्मा ने मुक्तिबोध पर बोलते हुए कहा कि मुक्तिबोध का साहित्य विस्तार व्यापक है। मुक्तिबोध स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे। वे अध्ययन के प्रति बहुत सचेत रहे। मुक्तिबोध स्वभाव से विद्रोही थे। साहित्य जगत में उनकी रचनाओं का मूल्यांकन कम हुआ, आलोचनाएँ अधिक हुईं। वे मार्क्सवाद के विरोधी थे, बाद में उनके समर्थक बन गये। वे किसानों के हितों के समर्थक थे। वे आशावादिता के पक्षधर थे।

डॉ. हेमांशु सेन ने कथाकार शिवानी पर बोलते हुए कहा– गौरापंत शिवानी की लखनऊ कर्मभूमि रही है।

शिवानी की रचनाओं में कलात्मकता है। शिवानी की कहानियाँ, उपन्यास पाठकों के हृदय में एक छाप छोड़ जाती हैं। शिवानी जी नारी की समाज में स्थिति व उनकी भूमिका का वर्णन अपनी रचनाओं में बहुत अद्‌भुत ढंग से करती हैं। शिवानी जी की कथा–शैली में अप्रतिम व अद्‌भुत क्षमता है। शिवानी जी अपनी नारी पात्रों को स्वाभिमान प्रदान करती हैं। ''कृष्णकली'' रचना में नारी की सबलता व उसका स्वाभिमान प्रभावी जान पड़ता है ।

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने डॉ. हरिवंश राय बच्चन पर विचार व्यक्त करते हुए कहा– हरिवंश राय बच्चन लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर हैं। मुधशाला, मधुबाला, मधुकलश उनकी लोकप्रिय रचनाएँ हैं। मधुशाला को जो स्थान व लोकप्रियता साहित्य में मिली, किसी अन्य रचना को नहीं मिल सकी। उनकी रचनाएँ पाठकों को मनोरंजित करती हैं। उनकी रचनाएँ जीवन संघर्ष को प्रतिबिम्बित करती हैं। वे मंच के सफलतम कवियों में से है। वे राष्ट्रीय चेतना के भी कवि हैं। 'अग्निपथ...अग्निपथ अग्निपथ' जीवन संघर्ष की कविता है। उनकी साहित्यिक दृष्टि सार्वभौमिक थी। वे लोक जीवन के कवि हैं। बच्चन जी का अनुवाद के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने डायरी, संस्मरण, आत्मकथा आदि पर भी अपनी लेखनी चलायी है। गीता का कई भाषाओं में अनुवाद किया था। उनकी रचनाओं में अध्यात्म का व्यापक प्रयोग व उसका प्रभाव रहा। उनका साहित्य समग्र जीवन दर्शन रहा है।

डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

नेशनल पी.जी. कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी - 5 व 6 नवम्बर, 2022

स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिन्दी कवियों द्वारा अनेक सराहनीय कार्य किए गए - डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं नेशनल पी.जी. कालेज के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 5 व 6 नवम्बर, 2022 को 'स्वतंत्रता आन्दोलन एवं हिन्दी साहित्य' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रारम्भ दिनांक 5 नवम्बर, 2022 को उद्घाटन सत्र के साथ हुआ। मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता तथा कॉलेज के प्राचार्य प्रो. देवेन्द्र कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्जवलन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात समस्त अतिथियों को पुष्पगुच्छ, स्मृतिचिन्ह एवं अंग वस्त्र पहना कर सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी के प्रारम्भ में संयोजक डॉ. रामकृष्ण ने आंगुतक अतिथियों एवं विशिष्टजनों का स्वागत किया, तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. देवेन्द्र कुमार सिंह ने मंचस्थ विद्वानों का स्वागत करते हुए राष्ट्रीय संगोष्ठी के महत्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री राजेश सिंह, महामंत्री मोती लाल मेमोरियल सोसायटी ने विचार व्यक्त किए।

संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित ने कहा– स्वतन्त्रता आन्दोलन में हिन्दी के कवियों द्वारा अनेक प्रकार से सराहनीय कार्य किए गए। भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग तथा छायावाद युग के कवियों ने अपनी कविताओं द्वारा इसे नई धार दी। निराला, प्रसाद, माखन

लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामनरेश त्रिपाठी, सोहन लाल द्विवेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे कवियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन की अलख जगाए रखी। स्वतंत्रता आन्दोलन में ऐसे गीत और नारे निकले, जिन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी। उन्होंने कुछ गीतों का उदाहरण दिया। जैसे–'कवि तुम ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल–पुथल मच जाए।' गांधी जी के स्वदेशी आन्दोलन का उल्लेख करते हुए कहा कि अंग्रजों की आर्थिक नीति का बहिष्कार करने के लिए विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि मोती लाल मेमोरियल के उपाध्यक्ष श्री केशव प्रसाद ने कहा– भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी साहित्यकारों ने जो भूमिका निभायी वह अनुपम है। उ.प्र. हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक डॉ. अमिता दुबे ने कहा कि यह संगोष्ठी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि हम इस वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं।

हमें अपने उन पूर्वजों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिए, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया। उन्होंने आमंत्रित अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी का संचालन हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. रामकृष्ण ने किया।

'भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन साहित्यकारों का स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान' विषय पर केन्द्रित संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में अध्यक्ष मंडल में डॉ. विद्याविन्दु सिंह एवं लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य डॉ. हरिशंकर मिश्र रहे। इस तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की आचार्य प्रो. अलका पांडेय, प्रो. हिमांशु सेन, केन ग्रोवर पी. जी. कॉलेज गोलागोकरन नाथ के प्राचार्य प्रो. पंकज सिंह थे। प्रो. हिमांशु सेन ने अपने व्याख्यान में बताया कि किस प्रकार भारतेन्दु युग से लेकर महात्मा गांधी तक देश के

स्वतंत्रता आन्दोलन को साहित्यकारों द्वारा नई धार दी जाती रही। प्रो. अलका पांडेय ने कहा कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाते हुए भाषा के स्वाभिमान पर बल दिया तथा अपने निबन्धों एवं नाटकों द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन को प्रोत्साहित करते रहे।

प्रो. पंकज सिंह ने पंडित जुगल किशोर मिश्र की पत्रकारिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अंग्रेजों के समय अत्यन्त प्रताड़ना सहकर भी साहित्यकार स्वतंत्रता आन्दोलन को बल देते रहे। डॉ. हरिशंकर मिश्र ने कहा कि उस समय साहित्यकारों द्वारा अनेक प्रकार के दान की परम्परा विकसित की गई जैसे– भूदान, समयदान, श्रम दान और बलिदान आदि। डॉ. मिश्र ने कहा कि तुलसीदास ने पहले ही यह कह रख था 'पराधीन सपनेहु सुख नाही।' इस तकनीक सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए पदमश्री डॉ. विद्या सिंह ने कहा कि क्रान्तिकारियों ने अपने माध्यम से आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। उन्होंने कहा कि हिन्दी में लोक साहित्य में स्वतंत्रता आन्दोलन का

स्वर देखने को मिलता है– 'उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है' जैसे गीत इसी काल में लिखे गये। द्वितीय तकनीकी सत्र के अध्यक्ष प्रयाग विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. राम किशोर शर्मा थे तथा मुख्य वक्ता बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की प्रो. विद्योत्तमा मिश्र थी। इस तकनीकी सत्र का विषय 'छायावाद एवं छायावादोत्तर कवियों का स्वाधीनता आन्दोलन में योगदान' था। इस सत्र में मुख्य वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. कृष्णा जी श्रीवास्तव थे।

अपने उद्‌बोधन में प्रो. विद्योत्तमा मिश्र ने कहा कि छायावाद कवियों ने देश की सांस्कृतिक स्थिति को केन्द्र में रखकर स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना योगदान किया। छायावादी कवि सांस्कृतिक जागरण का सन्देश देते हैं, इसलिए निराला कहते हैं – 'जागो फिर एक बार/प्यारे जगाते हुए हारे तारे तुम्हें/अरूण पंख तरुण किरण खड़ी खोलती है द्वार'। इसी प्रकार सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा तथा अन्य कवियों ने राष्ट्रीय जागरण का सन्देश

दिया। डॉ. राम किशोर शर्मा ने कहा 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की विफलता के कारण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सूत्र रूप में कविता लिखी और छायावाद तक आते–आते कविता के रूप में पर्याप्त परिवर्तन हो गया था। इसीलिए माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि ने आजादी की अलख जलाई। डॉ. शर्मा ने कहा– इस युग को हम गांधी युग भी कह सकते हैं क्योंकि प्रायः सभी साहित्यकारों पर महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव पड़ा। महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित इस युग के साहित्यकारों ने स्वंतत्रता आन्दोलन को प्रभावित किया।

संगोष्ठी के द्वितीय दिवस 6 नवम्बर, 2022 को तृतीय तकनीकी सत्र के अध्यक्ष मंडल में प्रसिद्ध समाजसेवी श्री विश्व प्रकाश थपलियाल एवं लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. रश्मि कुमार थीं। इस सत्र में अन्य प्रमुख वक्ता के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह एवं बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर वि.वि. के डॉ. बलजीत श्रीवास्तव उपस्थित थे। इस तकनीकी सत्र में राजकीय पी.जी. कॉलेज अम्बेडकर नगर के असिस्टेन्ट प्रो. प्रवीन कुमार यादव सहित पाँच शोध छात्रों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। डॉ. बलजीत श्रीवास्तव ने कहा– 'साहित्य वह है जो अतीत का संरक्षण करता है, वर्तमान का संचालन करता है और भविष्य का निर्माण करता है। डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि आजादी की लड़ाई में लोगों ने बलिदान की भावना से कार्य किया। बलिदान एक सुदृढ़ एवं राष्ट्रीय भावना है। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. रश्मि कुमार ने कहा कि साहित्य का कोना एक ऐसा कोना है, जहाँ हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र है। साहित्य हमें पूरी आजादी देता है।'

संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र की अध्यक्षता लखनऊ वि.वि. हिन्दी विभाग की प्रो. कैलाश देवी सिंह ने की तथा इस सत्र के मुख्य वक्ता लखनऊ वि.वि. हिन्दी विभाग के आचार्य पवन अग्रवाल थे। अपने सम्बोधन में प्रो. पवन अग्रवाल ने कहा कि साहित्य को सबके सम्मुख पहुँचाने में पत्रकारिता की अहम भूमिका होती है।

पत्रकारिता की हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य के विकास एवं स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. कैलाश देवी सिंह ने कहा कि देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं एवं महिला साहित्यकारों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। जिन महिलाओं का स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान रहा, उनमें सरोजनी नायडू, दुर्गाभाभी, शोभारानी, मीरादास, ऐनी बेसेन्ट, सुचेता कृपलानी एवं सुभद्रा कुमारी चौहान प्रमुख थीं। उन्होंने 'झांसी की रानी' कविता का वाचन भी किया।

संगोष्ठी के समापन समारोह के अध्यक्ष लखनऊ वि.वि. के हिन्दी विभाग के आचार्य प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह थे। इस सत्र की मुख्य अतिथि उ.प्र. हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक डॉ. अमिता दुबे थीं। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि लखनऊ क्रिश्चियन पी.जी. कॉलेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. ऋषि कुमार मिश्र थे। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. देवेन्द्र कुमार सिंह ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात नेशनल पी.जी. कॉलेज हिन्दी विभाग की शिक्षक डॉ. सीमा सिंह द्वारा इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

इस समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. ऋषि कुमार मिश्र ने स्वतंत्रता आन्दोलन में राष्ट्रवादी कवियों का उल्लेख किया। डॉ. अमिता दुबे ने समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका को उद्घाटन किया। डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह ने उस दर्द भरी एवं संघर्ष भरी गाथा का उल्लेख किया, जिसका सामना स्वाधीनता आन्दोलन में साहित्यकारों को करना पड़ा। इस अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। समारोह के अन्त में संगोष्ठी के संयोजक डॉ. रामकृष्ण ने देश भर से आए हुए विशिष्ट जनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

ए.एन. कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी - 16 व 17 नवम्बर, 2022

किसी भी संग्राम को जीतने के लिए साहित्य की आवश्यकता जरूरी - डॉ. प्रेम जनमेजय

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं हिंदी विभाग ए.एन. कॉलेज, पटना के संयुक्त तत्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 16 व 17 नवम्बर, 2022 को किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी द्वारा किया गया। इस अवसर पर विधान सभा अध्यक्ष ने अनुग्रह बाबू को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे समतामूलक सोच के धनी थे। उनकी स्मृति में बना यह महाविद्यालय शिक्षा और शोध के प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि साहित्यकारों की जिम्मेदारी कभी खत्म नहीं हो सकती। साहित्यकारों को साहित्य के साथ–साथ समाज के प्रति भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करना पड़ता है। समाज में हो रहे कार्यों की जानकारी प्रत्येक व्यक्ति को होती है, किन्तु उन कार्यों का समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का चिंतन और चित्रण

साहित्यकारों द्वारा ही हो सकता है। बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुये डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि हमारी स्वतंत्रता की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि लड़ाई मुख्य रूप से अहिंसात्मक रहे साहित्यकारों ने इसमें अहम भूमिका निभाई। सन् 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसार में साहित्यकारों की भूमिका का कोई समकालीन साक्ष्य नहीं है। 1880 के बाद साहित्यकारों द्वारा राष्ट्रीय चेतना का प्रसार प्रारंभ हुआ। अपनी परिवर्ती रचनाओं में योजनाबद्ध ढ़ंग से भारतेन्दु अंग्रेजों की खिलाफत करते दिखते हैं। अजीमुल्ला खान, श्याम लाल पार्षद तथा अन्य साहित्यकारों द्वारा झंडा गीत तथा अन्य राष्ट्रीय गीतों द्वारा भारत भूमि का मानवीकरण किया गया, जिससे राष्ट्रीय भावना का वृहत्तर विकास हुआ। इन कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, श्याम लाल, सियाराम शरण गुप्त आदि कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद के जेल भरो आंदोलन में माखन लाल चतुर्वेदी, बालेंदु शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, कन्हैया लाल प्रभाकर, द्वारिका प्रसाद मिश्र, नरेन्द्र शर्मा, नागार्जुन जैसे साहित्यकारों ने अपने लेखों और कविताओं से लोगों को जागरुक किया।

साहित्यकारों के 'कदम–कदम बढ़ाये जा' जैसे गीत और इंकलाब–जिंदाबाद जैसे नारे और प्रयाण गीत दिए। काकोरी कांड को अंजाम देने वालों में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाह खान, राजेन्द्र लाहिड़ी ने भी अपने क्रांति गीतों से अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिला दी थी। इसके पहले अपने स्वागत भाषण में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एस.पी. शाही ने कहा महाविद्यालय अध्यापन के साथ सामाजिक सरोकारों में भी सदैव आगे रहता है। महाविद्यालय के संस्थापक सत्येन्द्र बाबू और उनकी धर्मपत्नी किशोरी जी महाविद्यालय के विकास में हमेशा लगे रहते थे। उनके आशीर्वाद से और शिक्षकों, विद्यार्थियों और शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के अथक प्रयास से महाविद्यालय लगातार तीन बार से नैक में ए ग्रेड प्राप्त कर रहा है। उद्घाटन सत्र में प्रो. कलानाथ मिश्र द्वारा लिखित किताब सृजन के प्रतिमान का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. कलानाथ मिश्र ने किया। आभार वक्तव्य प्रधान संपादक, डॉ. अमिता दुबे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा किया गया।

'हिन्दी नवजागरण और स्वतंत्रता आन्दोलन' विषय पर केन्द्रित प्रथम सत्र में डॉ. वीरेन्द्र नाथ मिश्र ने कहा– साहित्यकार कलम का सिपाही होता है। कलम का सिपाही क्या कर सकता है इसके लिए ऐसे संगोष्ठियों का निरंतर होना नितांत आवश्यक है तभी समाज को ज्ञात होगा कि साहित्यकार देश और समाज बदल सकता है। साहित्यकार आजादी के दौर में लोगों के भीतर क्रांति की चिंगारी भर रहे थे। दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी आदि साहित्यकारों की पंक्तियों का सस्वर पाठ भी किया। उन्होंने कहा कि ब्रह्मा जैसे सृष्टि निर्माणकर्ता है, उसी तरह साहित्यकार समाज और राष्ट्र का निर्माणकर्ता है। साहित्य में असीम संभावनाएँ होती हैं। प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं साहित्यकार डॉ. जावेद अख्तर खान ने लोगों से स्वाधीनता की अवधारणा पर विचार करने को कहा – उन्होंने 1876 में नाटक प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगाने वाला ड्रैमेटिक पर 'फॉरमेंश एक्ट' का उल्लेख किया और कहा कि आजाद भारत में इस एक्ट को हटा देने की जरूरत है। उन्होंने भारतेन्दु का बलिया में दिया गया वक्तव्य 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' की विशेषताओं पर भी चर्चा की। भारतेन्दु को केन्द्र में रखकर नवजागरण का विश्लेषण प्रस्तुत किया। साथ ही यह भी कहा की आजादी को एक मूल्य की तरह देखने की जरूरत है। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. प्रेम जनमेजय ने स्वाधीनता आंदोलन में व्यंग्य की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने साहित्य को बहुमुखी बताते हुए कहा कि हर संग्राम को जीतने के लिए साहित्य की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर का उल्लेख करते हुए कहा कि सृजन का कार्य स्वतंत्रता है। इस सत्र का संचालन डॉ. विद्या भूषण ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संजय कुमार सिंह ने किया।

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी आलोचना' विषय पर केन्द्रित द्वितीय सत्र में डॉ. प्रतिभा ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आदोलन में साहित्य के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है। जब हमारे देश पर अंग्रेजों का राज था, तब हिन्दी साहित्यकार छुप–छुपकर रात में अपनी पत्र–पत्रिका निकालते थे, अपनी बात को जनता तक पहुंचाते थे। आज अगर हम स्वतंत्र हैं, तो इसमें साहित्यकारों का विशेष योगदान है।

वहीं गगनांचल पत्रिका के संपादक डॉ. आशीष कँधवे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राजा राममोहन राय ने प्रेस को भारतीय समाज से जोड़ा। 1816 में बंगाल गजट के द्वारा सामाजिक–आर्थिक समस्याओं को उजागर कर लोगों को जागृत किया। उन्होंने मीडिया और पत्रकारिता के युगधर्म पर विस्तार से चर्चा की। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. कमलानन्द झा ने 1857 की क्रांति की विशेषआतों और उनके नायकों के महत्व को समकालीन लोकभाषा और लोकगीतों में देखने समझने की आवश्यकता पर बल दिया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग पटना विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. तरुण कुमार ने कहा कि गद्य जीवन संग्राम की भाषा है। हिंदी आलोचना की शुरुआत भारतेंदु युग में हुई। उन्होंने संस्कृत काव्यशास्त्र के विकास से हिन्दी आलोचना को जोड़ने का प्रयास किया। बालकृष्ण भट्ट को उन्होंने भारतेन्दु युग का सबसे महत्वपूर्ण आलोचक माना। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम की तीव्रता के साथ–साथ हिन्दी आलोचना का पैनापन भी बढ़ता गया। उन्होंने कहा कि असंतोष से असहमति का जन्म होता है और असहमति से आलोचना का जन्म होता है। शुक्ल जी की ऐतिहासिक पुस्तक की आलोचना करने वाले सभी आलोचकों को याद दिलाते हुए कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उनकी साहित्येतिहास की पुस्तक सुव्यवस्थित इतिहास के रूप में लिखा गया, हिन्दी में पहला प्रयास था। उन्होंने शुक्ल जी को भारतीय आलोचना का सिरमौर माना। शुक्ल जी को केन्द्र में रखते हुए उन्होंने हिन्दी आलोचना पर विस्तार से चर्चा की।

इस सत्र में मंच संचालन जहां डॉ. भारती कुमारी ने किया वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमित मिश्र ने दिया।

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता' विषय पर केन्द्रित सत्र नई धारा के सम्पादक डॉ. शिवनारायण ने कहा कि साहित्य एवं पत्रकारिता तत्वतः एवं मुख्यतः भाषा की साधना है। उन्होंने पत्रकारिता की शुरुआत के बारे में बताया कि उदंड मार्तंड से भी पहले 1818 में दिगदर्शन पत्रिका श्री राम मिशन स्कूल से निकलती थी, जिसने पत्रकारिता का रूप बदला। यहां से हिन्दी नई चाल में ढली और आम जनता का दुख–दर्द उसमें उतरने लगा। इसी दौर में सांस्कृतिक पुनरुत्थान की बातें हुई, खड़ी बोली हिन्दी का विकास हुआ। अंग्रेज नीतियों का भंडाफोड़ कर देशभक्ति का विकास हुआ। आगे चलकर द्विवेदी युग में पत्रकारिता में भारतीयता का भाव, मानवता और सामाजिक समरसता देखने को मिलती है। उन्होंने यह भी कहा की साहित्य और पत्रकारिता में संवेदना, प्रतिरोध और न्याय का पुट होना आवश्यक है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्ष बी.आर. अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के प्रो. सतीश कुमार राय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सन् 1556 में पहला प्रेस पुर्तगाली ने भारत में लगाया और यहीं से पत्रकारिता की सुगबुगाहट हुई। भारतीय पत्रकारिता की शुरुआत 'इंकलाब' से हुई है। पूरी भारतीय पत्रकारिता पर राजा राममोहन राय और बाल गंगाधर तिलक की गहरी छाप है। सत्र में मंच संचालन जहां डॉक्टर अमित मिश्र ने किया, वही धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका शिल्पी ने दिया।

द्वितीय दिवस 17 नवम्बर, 2022 को संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र का विषय था 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी कथा साहित्य'। जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा के प्रो. अजय कुमार ने कहा कि लोकगीतों में अट्ठारह सौ सत्तावन की क्रांति का वर्णन मिलता है। उन्होंने कहा कि भारतीय नवजागरण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बटोहिया गीत में भारतीय भूमि की वैभव गाथा का वर्णन मिलता है, साथ ही बटोहिया गीत का सस्वर पाठ भी किया और उसकी विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद किसी भी भौगोलिक सीमा में बंधा नहीं है।

डॉ. अनीता अध्यक्ष, हिन्दी विभाग जयप्रकाश विश्वविद्यालय ने अपने उद्बोधन में कहा कि साहित्य के माध्यम से आजादी के गीत गाए गए। अंग्रेजों की मानसिकता से मुक्त होना ही स्वाधीनता है। साहित्यकार का काम मानसिक गुलामी से मुक्त कराना है। अतीत के धरातल पर हमें वर्तमान शांतिपूर्ण परिवेश सुरक्षित रखना है। मंच संचालन जहां अनामिका शिल्पी ने किया, वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मणिभूषण कुमार ने दिया।

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी कविता' विषय पर केन्द्रित पंचम सत्र में स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना के अध्यक्ष प्रो. छाया सिन्हा ने 'हिन्दी कविता का स्वतंत्रता आंदोलन में महत्व' पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, नाथूराम शर्मा, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनेरश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद जगदम्बा प्रसाद हितैषी, बालकृष्ण शर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, गोपाल सिंह 'नेपाली' आदि कवियों की कविताओं का उल्लेख करते हुए नवजागरण और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी रचित कविताओं की भूमिका और महत्व पर विस्तार से चर्चा की।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे पूर्व विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग कॉलेज ऑफ कॉमर्स आर्ट्स एंड साइंस, प्रो. शैलेन्द्र कुमार चौधरी ने कहा कि आज के युवा वर्ग में स्वाधीनता को लेकर जो अवधारणा है, उस पर विस्तार से चर्चा की साथ ही स्वतंत्रता को आदिकाल से लेकर आधुनिक साहित्य से जोड़ा जाना चाहिए।

विशेषकर तुलसीकृत रामचरितमानस में स्वतंत्रता का जो आग्रह है, उसे विशेष रूप से रेखांकित किया जाना चाहिये। साथ ही विनय पत्रिका कवितावली में जिस प्रकार किसानों की दुर्दशा का चित्रण है, उसका भी उल्लेख स्वाधीनता की चेतना से जोड़कर किया। उन्होंने विद्यापति की कीर्तिलता और कीर्तिपताका में भी स्वाधीनता की भावना को उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि साहित्य का काम है, लोगों का सन्मार्ग पर ले जाना। मंच का संचालन डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने किया, वहीं धन्यवाद ज्ञापन अमित मिश्र ने दिया।

षष्ठ सत्र में शोधार्थियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये। इस सत्र में मुख्य वक्ता अध्यक्ष हिन्दी विभाग एम.एल.एस. एम. कॉलेज दरभंगा डॉ. अमरकांत कुमार ने अपने गीत प्रस्तुत किए, वही सत्र की अध्यक्षता स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एन. कॉलेज पटना के अध्यक्ष प्रो. कलानाथ मिश्र ने की। मंच संचालन डॉ. अभिषेक दत्त ने किया और धन्यवाद ज्ञापन श्री रितेश कुमार ने दिया।

समापन सत्र में समापन वक्तव्य उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे ने दिया। संगोष्ठी प्रतिवेदन डॉक्टर विद्याभूषण ने प्रस्तुत किया, वही समापन सत्र की अध्यक्षता प्रधानाचार्य ए.एन. कॉलेज प्रो. एस.पी. शाही ने की। कार्यक्रम संचालन डॉक्टर संजय कुमार सिंह ने किया एवं आभार व्यक्त प्रो. कलानाथ मिश्र ने दिया।

बाल साहित्यकारों का अभिनन्दन पर्व समारोह - 25 नवम्बर, 2022

बच्चों को बाल साहित्य की पुस्तकों से जोड़ना जरूरी - डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा अभिनन्दन पर्व बाल साहित्य संगोष्ठी का आयोजन शुक्रवार, 25 नवम्बर, 2022 को हिन्दी भवन के यशपाल सभागार में किया गया। सम्माननीय अतिथि के रूप में डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना और श्री संजीव जायसवाल 'संजय', लखनऊ उपस्थित थे। इस अवसर पर नौ बाल साहित्यकारों को उत्तरीय, प्रशस्तिपत्र एवं इक्यावन हजार रुपये की धनराशि से अभिनन्दित किया गया। श्रीमती विमला

रस्तोगी को सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान, सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान से डॉ. अजय प्रसून (अजय कुमार द्विवेदी), अमृत लाल नागर बाल कथा सम्मान से श्रीमती ममता नौगरैया, शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान से श्री शिवाशीष शर्मा, लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल साहित्य पत्रकारिता सम्मान से श्री संजय वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान से डॉ. भारतेन्दु मिश्र, कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान से श्री अंजीव अंजुम, जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान से डॉ. धीरेन्द्र बहादुर सिंह, उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान से श्री ललित मोहन राठौर 'ललित शौर्य' को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री संजीव जायसवाल 'संजय' ने कहा– बाल साहित्य लेखन अत्यन्त दायित्वपूर्ण कार्य है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए रचनाओं को कभी–कभी सम्पादकों की अस्वीकृति भी प्राप्त होती है, इस स्थिति से घबराना नहीं चाहिए वरन् अपने लेखन में सुधार करना चाहिए। डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी ने कहा– बाल साहित्य की गौरवशाली परम्परा में नये–नये नाम जुड़ते जा रहे हैं। बौद्धिकता की आड़ में बच्चों को मात्र शिक्षा से ही जोड़ा जा रहा। कोई भी रचनाकार पुरस्कार के लिए नहीं लिखता वह अन्तः प्रेरणा से साहित्य सृजन करता है। बाल साहित्य अपेक्षाकृत कम चर्चित रहा है, परन्तु वह बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। बाल साहित्य विविध विधाओं में लिखा जा रहा है। बच्चों के लिए रचना करना अत्यन्त कठिन है। प्रेरक बाल साहित्य द्वारा बच्चों को संस्कारित करना हमारी परम्परा रही है। दादी–नानी की कहानियों का क्रम कुछ टूटा है, जिससे बच्चों में संस्कार दिये जाने का महत्वपूर्ण कार्य कुछ बाधित हुआ है। यदि उत्कृष्ट बालसाहित्य किशोर मन तक पहुँचेगे, तो उनका मन उल्लासित हो सकता है। बाल साहित्य भाषा की अतुलनीय सम्पदा है। प्रधान सम्पादक, डॉ. अमिता दुबे, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित बाल साहित्य संवर्द्धन योजना के अन्तर्गत अभिनन्दन पर्व पुरस्कार वितरण समारोह में विभिन्न विधाओं के बाल साहित्यकारों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए हम गौरवान्वित हैं। बाल साहित्य के सृजन में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका रचनाकारों की है, उससे अधिक दायित्व बाल पत्रिकाओं के सम्पादक का भी है। संस्थान द्वारा प्रकाशित 'बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी' द्वैमासिक पत्रिका के माध्यम से हम बाल पाठकों के बीच जाते हैं और उसे सभी का स्नेह और सहयोग मिलता है। मीडिया कर्मियों, पत्रकार बन्धुओं के प्रति भी हम आदर भाव व्यक्त करते हैं। श्री सर्वजीत सिंह मारवा द्वारा वाणी वन्दना प्रस्तुत की उनका भी आभार। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वित्त एवं लेखाधिकारी, श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह भी मंच पर उपस्थित रहे।

सुब्रह्मण्य भारती के जन्म दिवस के अवसर पर भारतीय भाषा उत्सव का आयोजन – 11 दिसम्बर, 2022

सामाजिक सरोकारों के कवि हैं सुब्रह्मण्य भारती – डॉ. अमिता दुबे

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सुब्रह्मण्य भारती जयन्ती के अवसर पर भारतीय भाषा उत्सव का आयोजन दिनांक 11 दिसम्बर, 2022 को संस्थान के आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पुस्तकालय में किया गया। इस अवसर पर श्री आर. पी. सिंह, निदेशक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा – भारत बहुभाषाभाषी राष्ट्र है। हिन्दी सम्पर्क भाषा/राजभाषा के रूप में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ सौहार्द का वातावरण बनाती है। डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक ने सुब्रह्मण्य भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा के वे एक ऐसे रचनाकार हैं, जिनकी राष्ट्रीयता समय के साथ दार्शनिक भावना में दिखाई देती है, जो भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। सुब्रह्मण्य भारती ने महिलाओं और बच्चों को केन्द्र में रखकर भी कविताएं की हैं। इस अवसर पर श्री श्याम कृष्ण सक्सेना, वरिष्ठ सहायक द्वारा सुब्रह्मण्य भारती पर पूर्व राष्ट्रपति श्री आर.के. रामन के उद्बोधन का वाचन किया गया।

समय व काल को जानना हो तो उस युग के साहित्य को पढ़ना होगा - डॉ. राकेश शर्मा

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सुब्रह्मण्य भारती, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', यशपाल, रामवृक्ष बेनीपुरी, इलाचन्द्र जोशी, धर्मवीर भारती, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, शकुन्तला सिरोठियाँ एवं विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' की स्मृति में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 13 व 14 दिसम्बर, 2022 को पूर्वाह्न 11.00 बजे से हिन्दी भवन यशपाल सभागार में किया गया। अभ्यागतों का स्वागत करते हुए श्री आर.पी. सिंह निदेशक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कहा– यशपाल एवं इलाचंद्र जोशी आदि के स्मृति समारोह में आप सबका स्वागत अभिनन्दन एवं वंदन है। इलाचंद्र जोशी पर व्याख्यान देते हुए डॉ. सौरभ पाल ने कहा– 'इलाचन्द्र जी का व्यक्तित्व विराट था। वे मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के प्रणेता रहे हैं। सम्मेलन, भारत, धर्मयुग जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में लेख लिखते रहे हैं। वे मौलिक प्रतिभा के धनी थे। लेखक, कलाकार, मनोवैज्ञानिक गुणों का समावेश उनकी रचनाओं में हैं। इलाचन्द्र जोशी का कथा साहित्य मनोवैज्ञानिक उपन्यास साहित्य की जीवन्त विचारधारा से परिपूर्ण हैं। इलाचन्द्र जोशी का रचना संसार मनोवैज्ञानिक व विश्लेषणात्मक तत्वों से परिपूर्ण है। जोशी जी एक सतत रचनाकार हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना का प्रवाह मिलता है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास जहाज का पंछी, ऋतुचक्र, निर्वासित, पर्दे की रानी, महत्वपूर्ण रचनाओं में हैं।' सुश्री तनु मिश्रा ने इलाचन्द्र जोशी की कहानी 'रोगी' का पाठ किया। डॉ. अलका पाण्डेय ने यशपाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बोलते हुए कहा– 'यशपाल की रचनाओं में सामाजिक कुरीतियों के

प्रति विद्रोह दिखायी देता है। रचनाकार संवेदनशील होता है। रचनाकार जो अपने मन में सोचता है, उसका प्रभाव उसकी रचनाओं में दिखता है। यशपाल ने स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के बाद बीते समय को देखकर रचनाएँ की। साथ ही विभाजन के बाद की त्रासदी को भी बड़ी ही गम्भीरता से अवलोकन किया। 'मेरी तेरी उसकी बात', झूठा सच, दिव्या, अमिता, सिंहावलोकन जैसी सुप्रसिद्ध उनकी रचनाएं हैं। यशपाल ने समाज की स्त्री जगत की बात की व उसे दिशा भी प्रदान की। वे स्त्री–विमर्श की बात करते हैं। सामाजिक व्यवस्था के सम्पूर्ण चित्रण से उनकी रचनाएँ परिपूर्ण हैं। यशपाल की गणना युगी रचनाकारों में की जाती है।'

सुश्री सुकीर्ति तिवारी ने यशपाल की कहानी 'परदा' का पाठ किया। संगोष्ठी का द्वितीय सत्र सुब्रह्मण्य भारती एवं रामवृक्ष बेनीपुरी की स्मृति को समर्पित था। सुब्रह्मण्य भारती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर व्याख्यान देते हुए शाहजहाँपुर से पधारे डॉ. रूपक श्रीवास्तव ने कहा–

सुब्रह्मण्य भारती जी अभाव में साहित्यकार बने। वे शब्दों के सिकंदर थे। भारती जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उनकी रचनाएं सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक तत्वों से परिपूर्ण रही हैं। जो अपनी भाषा का स्वरूप बिगाड़ता है, भाषा आपके स्वरूप को बिगाड़ देती है। हमें अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। सुब्रह्मण्य भारती की सुप्रसिद्ध तमिल कविता के हिन्दी अनुवाद का पाठ सुश्री निशा सैनी द्वारा किया गया।

रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार व्यक्त करते हुए इंदौर से पधारे डॉ. राकेश शर्मा ने कहा – रामवृक्ष बेनीपुरी की महान लेखकों में गिनती की जाती रही है। 'गेहूँ बनाम गुलाब' उनके प्रसिद्ध निबन्धों में है। लेखक व कवि सर्जक होता है, वह सृष्टिकर्ता के समतुल्य है। भाषा की सुगंध साहित्य है। समय व काल को जानना हो तो उस युग के साहित्य को पढ़ना होगा। 'माटी की मूरत' रामवृक्ष बेनीपुरी की प्रसिद्ध रचनाओं में से है। समाजवादी विचारधारा को साहित्य में विशेष स्थान दिलाने में उनकी

महत्वपूर्ण भूमिका रही। रामवृक्ष बेनीपुरी को शैली सम्राट कहा गया है। उन्हें कलम का जादूगर भी कहा गया। साहित्य सबका है, साहित्य में समाज का हर वर्ग बोलता है और चर्चा भी सब पर होती है। डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडियाकर्मियों का अभार व्यक्त किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व कृतित्व पर व्याख्यान देते हुए डॉ. रमेश प्रताप सिंह ने कहा– धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भारती जी में परम्परा भी है आधुनिकता भी है। परम्परा के साथ नवीनता का सामंजस्य करने वाला रचनाकार ही कालजयी रचनाकार होता है। भारती जी ने साहित्य की हर विधा पर गहरी छाप छोड़ी है। भारती पर छायावाद व हालावाद का प्रभाव रहा है। 'गुनाहों का देवता', 'अंधायुग', 'कनुप्रिया' जैसी रचनाओं की सुप्रसिद्ध रचनाओं में गिनती की जाती है। वे प्रेम व प्रणय के प्रधान रचनाकार हैं। 'गुनाहों का देवता' रचना में प्रेम की पराकष्ठा परिलक्षित होती है। वे चिन्तनशील कवियों में हैं। उनकी रचनाओं में प्रेम प्रधान तत्वों का समावेश मिलता है। 'अंधायुग', काव्य नाटक भारती जी की महाभारत पर आधारित रचना है। सुश्री रागिनी सिंह व रोशनी लोधी ने धर्मवीर भारती के चर्चित उपन्यास 'गुनाहों का देवता' के अशों का पाठ किया।

सीतापुर से पधारे श्री पद्‌मकान्त शर्मा 'प्रभात' ने बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बोलते हुए कहा– 'नवीन जी की रचनाएँ सामाजिक चेतना जागृत करती हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय समाज परिलक्षित होता हैं, वे क्रांतिकारी कवियों में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। वे मनुष्यता व एकता के साक्षात प्रतीक थे। उनका जीवन व लेखन कार्य क्रांतिकारियों, कवियों, लेखकों, पत्रकारों के बीच व्यतीत हुआ। 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' उनकी सुप्रसिद्ध कविता है। उनका राष्ट्रीय एकता के लिए विपुल अवदान रहा है। नवीन जी ने अपनी रचना के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की अलख जगायी। उनकी रचनाओं में पूरा भारत व भारतीयता दिखायी देती है। खुशी सखूजा ने बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' की सुप्रसिद्ध कविता 'क्रांति' का पाठ किया। शाहजहाँपुर से पधारे डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ने सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बोलते हुए कहा– विनोद चन्द्र पाण्डेय की गणना सहज कवियों में की जाती है। बाल साहित्य रचना के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। वे बाल साहित्य के बहुत बड़े समीक्षक रहे। वे छोटे से छोटे रचनाकारों से भी बड़ी आत्मीयता से मिलते थे। उनका व्यक्तित्व काफी विराट था। 'बाल साहित्य का इतिहास' उनकी प्रमुख रचनाओं में से हैं। उनकी रचनाएं मौलिकता पर आधारित रही हैं। वे सफल संपादक रहे। उन्होंने यह भी कहा कि बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएं विद्यालयों में अनिवार्य की जानी चाहिए। 'महापुरुषों की जीवनियाँ' आदि उनकी प्रमुख रचनाएं है। साहित्य के सिद्धान्तों की झलक भी बाल साहित्य में मिलती है। द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के रचनासंसार पर विचार व्यक्त करते हुए डॉ. सुरेन्द्र विक्रम ने कहा– ''द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी'' ने 'यदि होता किन्नर नरेश मैं राजमहल में रहता, सोने का सिंहासन होता सिर पर मुकुट चमकता...कविता लिखकर बाल मन पर गहरी छाप छोड़ी है। उनकी रचनाओं में प्रकृति, शिक्षा, बाल, समाज विषयों का सबका समावेश मिलता है। वीर तुम बढ़े चलो...जैसी कविताओं के रचयिता माहेश्वरी जी बाल साहित्य के पुरोधाओं में हैं। उन्होंने प्रबंध काव्यों की भी रचना की।

राजस्थान से पधारे श्री भैरूलाल गर्ग ने शकुंतला सिरोठिया के बाल साहित्य सृजन पर बोलते हुए कहा– 'बाल साहित्य जगत में शकुन्तला सिरोठिया का स्थान अग्रणी पंक्ति में आता है। वे सहज बाल रचनाकार रहीं। पारिवारिक विसंगतियों का चित्रण उनके बाल साहित्य में मिलता है। बाल कहानी, बाल नाटक आदि पुरस्कार भी उनके नाम से प्रदान किये जाते हैं। उनका बाल साहित्य लोरियों से भरा हुआ है। उनका मानना था कि लोरी के माध्यम से माँ बालक का बचपन संवारती है। बच्चों को लोरी ममता का परिचायक है। उनकी बाल कविताएं व लोरियाँ सहज व संप्रेषणीय बनाती हैं। वात्सल्य भाव ही उनकी रचनाओं की विशेषता है।' डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

श्रीमध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी - 17 दिसम्बर, 2022

हमें हिन्दी के लिए तन-मन-धन से कार्य करना है - डॉ. अमिता दुबे

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं श्रीमध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर, 'वीणा' पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'स्वतंत्रता आन्दोलन एवं हिन्दी पत्रकारिता' विषय पर केन्द्रित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की अभ्यार्थना के अनन्तर प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री आर. पी. सिंह, वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी व निदेशक, उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ ने की। मुख्य अतिथि डॉ. अमिता दुबे, प्रधान संपादक उ.प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ उपस्थित थीं। इनका अभिनन्दन समिति के प्रधानमंत्री प्रो. सूर्यप्रकाश चतुर्वेदी, वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यकांत नागर, प्रचार मंत्री अरविंद ओझा व राकेश शर्मा ने किया। स्वागत उद्बोधन वीणा के संपादक श्री राकेश शर्मा ने दिया। अपने वक्तव्य में कहा इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं आदर के साथ श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के संस्थापको, सरसेठ हुकुमचन्द, डॉ. सरजूप्रसाद तिवारी, श्री कमलाशंकर मिश्र को प्रणाम करते हुए उनके उद्देश्यों को बताना चाहता हूँ, जिनके प्रयासों से गांधी जी का दो बार सान्निध्य आशीर्वाद मिला।

इस संस्था को मार्गदर्शन देने में जमनालाल बजाज, श्री नारायन चतुर्वेदी (भैय्या जी), सीताराम जाजू, कामता प्रसाद गुरु, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, गोपालदास आयंगार के साथ वर्तमान में भाषा की शुद्धता संदर्भ डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित लखनऊ का आभार माना। अपने पूर्ववर्ती 'वीणा' पत्रिका के 13 संपादकों का स्मरण किया। वीणा की विषयवस्तु, शुद्ध साहित्य व विशेषांकों की चर्चा की। विशेष अतिथि के रुप में मंचासीन वरिष्ठ कवि डॉ. राजीव शर्मा, विभागाध्यक्ष, शासकीय अटल बिहारी वाजपेयी महाविद्यालय पत्रकारिता विभाग ने कहा कि उपनिषदों में जो कहा गया, उसका सन्दर्भ मात्र दे रहा हूँ। पिछले पांच हजार वर्षों में से अभी तक हुए परिवर्तनों एवं उनकी गति दृष्टव्य है। पत्रकारिता, साहित्य, नवजागरण, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान, नेहरू-दिनकर के संदर्भ प्रसंग सुनाते हुए डॉ. शर्मा ने कहा कि पत्रकारिता और साहित्यकार दोनों ने हिन्दी को मजबूत किया है। प्रथम पत्र उदंत मार्तण्ड से लेकर अब तक का इतिहास कहीं संघर्ष का रहा है, तो कहीं उतार-चढ़ाव का। वीणा पत्रिका का योगदान अतुलनीय है।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. अमिता दुबे ने कहा - दोनों संस्थाओं का उद्देश्य एक ही है, हमें हिन्दी के लिए तन-मन-धन से कार्य करना है। उन्होंने अपनी संस्था के 46 वर्ष की पूर्णता व गतिविधियों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि समाज व देश के निर्माण में साहित्य और साहित्यकारों की अहम भूमिका रही है। उन्होंने हिन्दी के विकास के लिए संस्थाओं को आपस में जुड़कर कार्य करने का आह्वान किया।

डॉ. अमिता दुबे ने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की अनेक पुरस्कार योजनाओं के बारे में श्रोताओं को बताया। समिति के ट्रस्टी एवं वरिष्ठ कहानीकार श्री सूर्यकांत नागर ने भी अपने कुछ अनुभव, वीणा पत्रिका के योगदान व अमृतलाल नागर, गोपालदास अयंगार को सादर याद किया। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त के राष्ट्रवाद पर भी विचार व्यक्त किए।

प्रथम सत्र के अध्यक्ष श्री आर.पी. सिंह, आई.ए.एस., निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने कहा- ऐसी संस्थाओं को और अधिक सशक्त किया जाना चाहिए। साहित्य व साहित्यकार राष्ट्रीय व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, तभी भविष्य में यदि क्रांति होती है, तो उसका समाधान साहित्यकार व पत्रकार ही करेंगे। श्री सिंह ने इस ऐतिहासिक संस्था में आकर आनंद और गौरव का अनुभव किया व भविष्य में भी जुड़े रहने की आशा व्यक्त की। श्री सिंह ने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के विषय में भी प्रकाश

डाला।

विचार सत्र का विषय रहा ''स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता'', जिसमें सर्वप्रथम शोधार्थी डॉ. दीप्ति गुप्ता ने विषय एवं संबंधित आलेख का वाचन किया, तत्पश्चात् म.प्र. साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. विकास दवे ने गागर में सागर भरते हुए पत्रकारिता व साहित्य दोनों की अनिवार्य सहभागिता पर प्रकाश डालते हुए महात्मा गांधी, गोखले, गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रेमचन्द, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर का स्मरण किया। 'कलम आज उनकी जयबोल', 'पुष्प की अभिलाषा' पर विचार व्यक्त किए । फगवाड़ा से डॉ. अनिल पाण्डेय ने कहा कि भारतेन्दु युग – राष्ट्रभक्ति का युग था, उस समय कलम ही अस्त्र होती थी, उस समय शब्दों की शक्ति की सत्ता होती थी, कार्य क्रांतिकारी होता था, उन्होंने सरस्वती पत्रिका के साथ हजारी प्रसाद द्विवेदी, निराला, जुही की कली, महादेवी वर्मा, पंत, छायावाद, हालावाद, मंचीय कवियों पर विचार रखे एवं कहा कि साहित्य और पत्रकारिता अलग क्यों? दोनों का आपसी सामंजस्य और सम्बन्ध अटूट है। डॉ. पाण्डेय ने आज की पत्रकारिता में आ रही भाषाई गिरावट पर चिन्ता प्रकट की। उन्होंने 'वीणा' की प्रशंसा की। कहा कि वीणा में भाषाई शुद्धता का ध्यान रखा जाता है।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय पत्रकारिता विभाग प्रमुख डॉ. सोनाली नरगुन्दे ने कहा कि साहित्य स्वतंत्र होता है, पत्रकारिता में साहित्य है। उन्होंने गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रेमचन्द, गांधी नन्ददुलारे वाजपेयी, लाला लाजपत राय, सोहनलाल द्विवेदी तथा 1918 व 1925 के कुछ अविस्मरणीय प्रसंग सुनाए। सत्र की अध्यक्षता कर रहे देवास के श्री प्रकाशकांत ने कहा कि आज संगोष्ठी में विषय से संबंधित प्रसंग पर विद्वानों ने अपने विचार – इतिहास, वर्तमान व भविष्य को लेकर रखे, उन्होंने वीणा के 96वें वर्षों में प्रवेश 14 संपादकों, स्वतंत्रता आंदोलन में वीणा की भूमिका इसके संघर्ष, समान सुधार में योगदान प्रसंग प्रस्तुत किए। पत्रकारिता, स्वतंत्रता आंदोलन पर भी विचार रखे। इस सत्र का संचालन श्री प्रभु त्रिवेदी ने किया। वक्ताओं का स्वागत, वाणी जोशी, डॉ. पद्मा सिंह, त्रिपुरारी लाल शर्मा आदि ने किया।

अंतिम सत्र का विषय ''हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता को वीणा का योगदान'' रहा, जिस पर डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे ने अपनी बात रखते हुए कहा कि तमाम बाधाओं के बाद भी वीणा जीवन्त रही इसने मध्यम मार्ग अपनाया, लेकिन स्त्री विमर्श, शिक्षा, स्वतंत्रता को अपना अंग बनाया। डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे ने अपने उद्बोधन में 1935 की गांधीजी यात्रा, 1922 से 1947 का समय, 1857 का जिक्र किया। डॉ. जीवन सिंह ठाकुर देवास ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर मैला आंचल, रामदरबारी परती परिकथा बक्सर का युद्ध, अहमद शाह अब्दाली तथा 1747 में राष्ट्र शक्तियों के विनाश प्रसंग भी सुनाए। भारत किन मुद्दों पर आजाद हुआ, पर विचार रखते हुए कहा कि वीणा का दीप जलता रहा, जिसमें हजारों दीपों की जलाने की शक्ति है। दुनिया अगर बचेगी तो भारतीय संस्कृति के बल पर। अमरकंटक से आयी डॉ. मनीषा शर्मा ने कहा कि समिति व वीणा से उनका अगाध व प्राचीन संबंध रहा है। वीणा उनकी गुरु रही है, यहीं से पीएच.डी. किया, बहुत कुछ सीखा, पहली रचना वीणा में प्रकाशित होने की खुशी आज भी दिलो दिमाग में है। डॉ. मनीषा शर्मा ने गांधीजी की प्रेरणा, कालखण्डों में लिखा नया इतिहास, पत्रकारिता,

बच्चों की प्रिय पत्रिका बालवाणी (द्वैमासिक)
मूल्य प्रति अंक – रुपये 15/-

साहित्य भारती (त्रैमासिक)
मूल्य प्रति अंक – रुपये 25/-

साहित्यिक पत्रकारिता पर विचार रखे। साहित्यिक पत्रकारिता, बाजारवाद से मुक्त होने का प्रयास कर रहा है। पत्रकारिता लोक रंजन व लोकरक्षण का उत्तरदायित्व निभाती है। उन्होंने 'वीणा' के अतीत के साथ–साथ वर्तमान अवदान की भी चर्चा की। डॉ. मनीषा ने वीणा के 1089 अंक में महावीर प्रताप द्विवेदी के कृषि संदर्भ आलेख को पढ़ा तथा सरजूप्रसाद तिवारी महाराजा यशवंतराव होलकर के विचार उद्धृत किए। उन्होंने कहा कि मैंने तमाम पत्रिकाएं पढ़ी, पढ़ रही हूँ, पर वीणा की बराबरी कोई नहीं कर सकती।

विक्रम विश्वविद्यालय, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र शर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि समिति मात्र संस्था नहीं वरन भारतीय राष्ट्रीय चेतना का ऊर्जा केन्द्र है। समिति और वीणा एक–दूसरे के पूरक हैं। यह म.प्र. का गौरव है, निरंतर अखण्ड प्रकाशित होने वाली वीणा संपूर्ण विश्व में हिन्दी का गौरव है। इसके पुराने अंकों को पढ़ना चाहिए। वीणा ने अपने स्वरुप को नहीं बदला, यह लोकमत का निर्माण करती है। यह भारतीय समाज को जागृत करने का काम करती रही है। वीणा की भाषा को तैयार करने में अहम भूमिका रही है और अभी भी है। डॉ. शर्मा ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में प्रभा पत्रिका, सरस्वती, भारत माता के चित्र का आवरण, माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर

विद्यार्थी व बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जो 9 वर्षों तक जेल में रहे, केशवदत्त शास्त्री आदि को सादर याद किया। उन्होंने वीणा के विशेषांकों पर भी प्रकाश डाला, जिसमें गांधीजी के अलावा 'शताब्दी संदर्भ–ज्ञानपीठ, नरेश मेहता' पर प्रकाशित विशेषांक की चर्चा की। उन्होंने वीणा में प्रकाशित कुछ विशिष्ट आलेखों, कविताओं का भी जिक्र किया और कहा कि वीणा संपूर्ण पत्रकारिता का गौरव है। समापन पर डॉ. अमिता दुबे ने भी विचार रखे और कहा कि साहित्य सेवा में दोनों संस्थाओं के संबंध जुड़े है और जुड़े रहेंगे। इस सत्र का संचालन वरिष्ठ साहित्यकार पद्मा राजेन्द्र ने किया व अन्त में आभार श्री प्रदीप नवीन ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर छात्र–छात्राओं को सहभागिता प्रमाण पत्र भी दिए गए व वीणा के संपादक श्री राकेश शर्मा का सम्मान भी किया गया। राष्ट्रगान के साथ सोद्देश्य सफल आयोजन को विराम दिया गया। कार्यक्रम में समिति के प्रबंधमंत्री श्री घनश्याम यादव, अर्थमंत्री श्री राजेश शर्मा के अलावा सदाशिव कौतुक, संतोष मोहन्ती, आलोक खरे, गिरेन्द्र सिंह भदौरिया, रामचंद्र अवस्थी, अंजना चक्रपाणि मिश्र, समिति परिवार से, पुनीत चतुर्वेदी, हेमेन्द्र मोदी, संदीप पालीवाल, जुगलकिशोर बैरागी, छोटेलाल भारती, कमलेश पाण्डे, सरला गलांडे ने सहभागिता कर सहयोग दिया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के 46वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन – 30 दिसम्बर, 2022

साहित्य सृजन अत्यन्त महत्वपूर्ण दायित्व – डॉ. सुधाकर अदीब

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के 46वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर शुक्रवार, 30 दिसम्बर, 2022 के शुभ अवसर पर वर्ष 2021 में प्रकाशित पुस्तकों पर देय पुरस्कार वितरण

समारोह का आयोजन यशपाल सभागार, हिन्दी भवन, लखनऊ में पूर्वाह्न 11.00 बजे किया गया। सम्माननीय अतिथिगण डॉ0 रामकठिन सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार,

डॉ0 सुधाकर अदीब, वरिष्ठ कथाकार, लखनऊ आमंत्रित थे।

दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में निराला जी की अमर पंक्तियाँ 'वर दे वीणा वादिनी, वर दे' की संगीतमय प्रस्तुति रिद्धिमा श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत की गयी। आमंत्रित वरिष्ठ साहित्यकार, श्री रामकठिन सिंह एवं वरिष्ठ कथाकार, डॉ0 सुधाकर अदीब का उत्तरीय द्वारा स्वागत श्री आर0पी0 सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया। अभ्यागतों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक, श्री आर0पी0 सिंह ने कहा – उ0प्र0 हिन्दी संस्थान के स्थापना दिवस की अनन्त शुभकामनाएँ।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की स्थापना 30 दिसम्बर, 1976 को जिन उद्देश्यों को लेकर की गयी थी, उनके प्रति हम निरन्तर सजगता से दृढ़ संकल्प होकर कार्य करते रहते हैं। साहित्यकारों/हिन्दी प्रमियों का सम्बल हमें प्राप्त होता रहता है। आज के दिन हिन्दी संस्थान परिवार संकल्प लेता है कि हम इसी प्रकार हिन्दी भाषा एवं साहित्य के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं के उन्नयन के प्रति भी सदैव की भांति समर्पित रहेंगे। इसी क्रम में रिद्धिमा श्रीवास्तव जिन्होंने वाणी वंदना प्रस्तुत की उनका भी स्वागत है। हमारे आमंत्रण पर पधारे सभी हिन्दी प्रेमियों का स्वागत है। आपका सबका सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहता है, मीडिया कर्मियों का स्वागत एवं आभार।

डॉ0 सुधाकर अदीब ने कहा– साहित्य सृजन अत्यन्त महत्वपूर्ण दायित्व है। हम समाज के लिए रचते हैं और समाज को दिशा भी देते हैं। पूर्वज साहित्यकारों से भी हम बहुत कुछ प्राप्त करते है।

डॉ0 रामकठिन सिंह ने कहा – बच्चों के लिए लिखने से पूर्व हमें उन विषयों का चयन करना चाहिए, जिनसे उनमें संस्कार विकसित हो सके। स्थापना दिवस के अवसर पर उ0प्र0 हिन्दी द्वारा आयोजित नामित पुरस्कार से – तुलसी पुरस्कार श्री आनन्द कुमार सिंह, भोपाल, जयशंकर प्रसाद पुरस्कार श्री विष्णु सक्सेना, गाजियाबाद, श्रीधर पाठक पुरस्कार श्री शंकर जी सिंह, बलिया, निराला पुरस्कार श्री कुमार ललित, आगरा, दुष्यंत कुमार पुरस्कार श्री जसवीर सिंह 'हलधर', देहरादून, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रो0 वीना शर्मा, आगरा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार श्री जयवर्धन, गाजियाबाद, प्रेमचन्द पुरस्कार श्री श्याम बिहारी श्यामल, वाराणसी, यशपाल पुरस्कार श्री रामजी भाई, लखनऊ, रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार श्री करुणा शंकर उपाध्याय, मुम्बई, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' पुरस्कार श्री जयश्री पुरवार, नोएडा, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' पुरस्कार श्री राजगोपाल सिंह वर्मा, आगरा, मलिक मुहम्मद जायसी पुरस्कार श्री आशाराम 'जागरथ', अयोध्या, जगन्नाथदास रत्नाकर पुरस्कार श्री महेश चन्द जैन 'ज्योति', मथुरा, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार श्री प्रताप नारायण दुबे 'प्रताप', झांसी, सूर पुरस्कार श्रीमती श्रद्धा पाण्डेय, गाजियाबाद, कबीर पुरस्कार डॉ. अम्बिकेश त्रिपाठी, प्रतापगढ़, सुब्रह्मण्य भारती पुरस्कार श्री वृजभूषण राय 'वृज', गोरखपुर, बाबूराव विष्णु पराड़कर पुरस्कार श्री नरेन्द्र नाथ मिश्र, वाराणसी, सरस्वती पुरस्कार सम्पादक डॉ0 शोभनाथ शुक्ल, सुल्तानपुर, भगवानदास पुरस्कार डॉ. रामजी मिश्र, प्रयागराज, हजारी प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार श्री रजनीश कुमार शुक्ल, वर्धा, पं. रामनरेश त्रिपाठी पुरस्कार डॉ. मन्नू यादव 'कृष्ण', मिर्जापुर, बाबू श्याम सुन्दरदास पुरस्कार डॉ0 वन्दना वशिष्ठ, हापुड़, सम्पूर्णानन्द पुरस्कार डॉ. विनोद कुमार शर्मा, लखनऊ, के.एन. भाल पुरस्कार श्री राजा भइया गुप्ता 'राजाभ', लखनऊ, बीरबल साहनी पुरस्कार श्री सुबोध कुमार, गौतमबुद्धनगर, पं. सत्यनारायण शास्त्री पुरस्कार डॉ. श्रीधर द्विवेदी, नोएडा, आचार्य नरेन्द्र देव पुरस्कार श्री बृजलाल, लखनऊ, गोविन्दवल्लभ पंत पुरस्कार सुश्री अशोक कुमारी, संत रविदास नगर, डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुरस्कार कुँवर अनुपम सिंह, लखनऊ, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा पुरस्कार श्री रूमाल सिंह, बुलंदशहर, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार श्री अंकुर मिश्रा, कानपुर, महादेवी वर्मा पुरस्कार डॉ. चम्पा कुमारी सिंह, वाराणसी एवं सर्जना पुरस्कार से – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' पुरस्कार श्री उमाशंकर गुप्त, कानपुर, जगदीश गुप्त पुरस्कार श्री विनोद शंकर शुक्ल 'विनोद', लखनऊ, विजयदेव नारायण साही पुरस्कार श्री प्रवीण कुमार, मेरठ, बलबीर सिंह 'रंग' पुरस्कार श्री कमल किशोर मिश्र 'कमल 'मानव', शाहजहाँपुर, अदम गोंडवी पुरस्कार श्री चन्द्रभाल सुकुमार, वाराणसी, गुलाब राय पुरस्कार श्री रामावतार

गाजीपुर, मोहन राकेश पुरस्कार डॉ0 अरुण कुमार एवं श्री एल0के0 कान्तेश, कानपुर, अमृतलाल नागर पुरस्कार सुश्री सुमति सक्सेना लाल, दिल्ली, नरेश मेहता पुरस्कार श्री सुभाषचन्द्र गांगुली, प्रयागराज रामबिलास शर्मा पुरस्कार डॉ0 प्रेमचन्द्र सिंह, कुशीनगर, निर्मल वर्मा पुरस्कार श्री संजय सिंह, गाजियाबाद, विष्णु प्रभाकर पुरस्कार, प्रो0 राजमणि शर्मा, वाराणसी, शरद जोशी पुरस्कार, डॉ0 निर्मला सिंह 'निर्मल', लखनऊ, वंशीधर शुक्ल पुरस्कार, डॉ. दयाराम मौर्य 'रत्न', प्रतापगढ़, रामशंकर शुक्ल 'रसाल' पुरस्कार, श्री तेजवीर सिंह 'तेज', मथुरा, भिखारी ठाकुर पुरस्कार, श्री संजीव कुमार त्यागी, गाजीपुर, ईसुरी पुरस्कार श्री कृष्णमोहन नायक, गांधीनगर महोबा, सोहन लाल द्विवेदी पुरस्कार श्री रमेश चन्द्र गोयल (रमेश प्रसून), बुलंदशहर, नज़ीर अकबराबादी पुरस्कार श्री अरविंद पांडेय, चंदौली, काका कालेलकर पुरस्कार श्री पद्मनाभ पाण्डेय, लखनऊ, धर्मवीर भारती पुरस्कार श्री हरिमोहन वाजपेयी 'माधव', लखनऊ, धर्मयुग पुरस्कार सम्पादक श्री कृष्ण बिहारी त्रिपाठी, कानपुर, नन्द किशोर देवराज पुरस्कार श्री राम जन्म सिंह, गोरखपुर विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार सुश्री शशिप्रभा तिवारी, दिल्ली, बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' पुरस्कार सुश्री राधिका मिश्रा, प्रयागराज, दौलत सिंह कोठारी पुरस्कार श्री इसपाक अली, बंग्लौर, होमी जहांगीर भाभा पुरस्कार डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव, लखनऊ, आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी पुरस्कार सुश्री जया द्विवेदी, प्रयागराज, ईश्वरी प्रसाद पुरस्कार डॉ0 कृष्ण कुमार पाण्डेय, गोरखपुर, के.एम. मुंशी पुरस्कार डॉ. मंजरी दमेले एवं डॉ. कमलेश गुप्ता, झॉसी जे.के. मेहता पुरस्कार डॉ. विजय सिंह राघव, बरेली, किशोरीदास वाजपेयी पुरस्कार श्री अकबाल बहादुर 'राही', बाराबंकी, डॉ. रांगेय राघव पुरस्कार श्री अरुण कुमार 'मानव', मेरठ, विद्यावती कोकिल पुरस्कार सुश्री नीतू मुकुल, महोबा, हरिवंश रायबच्चन युवा गीतकार सम्मान श्री राहुल द्विवेदी 'स्मित', लखनऊ, पं. बद्री प्रसाद शिंगलू स्मृति सम्मान सुश्री रजनी गुप्ता, लखनऊ को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने किया।

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी - 10 जनवरी, 2023

विश्व में हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है - डॉ. कैलाश देवी सिंह

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर मंगलवार 10 जनवरी, 2023 को 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन, लखनऊ में पूर्वाह्न 11.00 बजे से किया गया साथ ही सौन्दर्यीकृत प्रेमचन्द सभागार का लोकार्पण श्री आर0पी0 सिंह, निदेशक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया।

दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में निराला जी की अमर पंक्तियाँ 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' की संगीतमय प्रस्तुति रत्ना शुक्ला व सुनील शुक्ला द्वारा प्रस्तुत की गयी। सम्माननीय अतिथि डॉ0 पूरनचंद टण्डन, डॉ0 कैलाश देवी सिंह व रविनन्दन सिंह का उत्तरीय द्वारा स्वागत श्री आर0पी0 सिंह, निदेशक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान

द्वारा किया गया। अभ्यागतों का स्वागत करते हुए निदेशक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कहा– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित विश्व हिन्दी दिवस समारोह में आप सबका स्वागत अभिनन्दन एवं वंदन है, आप सबको विश्व हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ। भाषा एवं संस्कृति हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करती है। किसी भी देश की उन्नति उसकी अपनी मातृभाषा एवं उसकी संस्कृति से ही होती है। हमें अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए। भाषा रोजगार के साथ–साथ यदि हमारे व्यक्तित्व का भी निर्माण करे, वही भाषा देश व समाज के लिए अतिउत्तम व सबको अपने में समाहित करने वाली हो सकती है।

प्रयागराज से पधारे डॉ0 रविनन्दन सिंह ने कहा – 'हिन्दी का विकास एक दिन में नहीं हुआ है। हिन्दी बोलियों से धीरे–धीरे उद्‌भव होते हुए विकसित हुई। हिन्दी में बोलियों का सम्मिश्रण है। हिन्दी बोलियों का विस्तृत रूप है। सभी संस्कृतियों में यही मान्यता है कि भाषा ईश्वरीय देन है, परन्तु धीरे–धीरे यह मान्यता टूटी फिर भाषा को समाज की देन माना जाने लगा। हिन्दी कुरूपवेश से चलकर आज अपने विकसित रूप में है। समाज में भाषा से ही सम्मान मिलता है। रचनाकार स्वाभिमानी होता है। मनोरमा ईअर बुक के सर्वेक्षण के अनुसार हिन्दी विश्व की दूसरी सर्वप्रमुख भाषा है। विश्व के अधिकांश देशों में हिन्दी बोलने वाले तथा विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राएं हैं। विश्व में प्रवासी भारतीयों के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार व्यापक स्तर पर हो रहा है। भाषा व्यक्ति की पहचान है। हिन्दी भाषा हमारी माँ के समान है। विभिन्न माध्यमों से हिन्दी पूरे विश्व में फैली हुई है। विदेशी लेखकों व रचनाकारों ने भी हिन्दी के क्षेत्र में बहुत कार्य किया है। भाषा सीमित क्षेत्र की हो सकती है, लेकिन साहित्य का क्षेत्र व्यापकता में समाहित होता है।

डॉ0 कैलाश देवी सिंह ने कहा – विश्व में हिन्दी का प्रचार–प्रसार बढ़ा है। हिन्दी को सीखने वालों की संख्या बढ़ी है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी सीखने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। स्वतंत्रता के बाद दक्षिण के अहिन्दी भाषी प्रदेशों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर काफी विरोध किया। आज भारत में हिन्दी का व्यापक विस्तार हो रहा है। भाषा का विकास उसकी उपयोगिता के आधार पर होता है। हिन्दी की प्रतिष्ठा व पहचान बढ़ी है। शिक्षक, साहित्यकार, प्रशासक व उसका प्रयोग करने वाली जनता ही किसी भाषा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है, जिससे हिन्दी भाषा का निरन्तर समादर व पहचान बढ़ रही है। हमें अपनी भाषा को रोजगार की भाषा बनाने का प्रयास करना होगा। भाषा रोजगारपरक होगी, तो सीखने में रुचि बढ़ेगी। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 137 देशों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग व विस्तार हो रहा है। हिन्दी के लिए अभी बहुत कुछ करने को शेष है।

दिल्ली से पधारे विद्वान डॉ0 पूरनचंद टण्डन ने कहा– 'साहित्य की सृजनशीलता काफी प्राचीन रही है। स्वतंत्रता के बाद शासन व्यवस्था के परिचालन के लिए किस भाषा का चयन किया जाय, एक बड़ी समस्या थी। हिन्दी ने काफी संघर्ष और गुलामी के काल को देखा। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से आज हिन्दी निरन्तर बढ़ रही है। जार्ज ग्रियर्सन ने कहा भाषा के क्षेत्र में भारत विश्व में सबसे धनी देश है। हिन्दी भाषा में कई भाषाओं को अपने में समाहित व आत्मसात करने की क्षमता है। हिन्दी सेवी संस्थाओं ने

हिन्दी को विश्व स्तर पर पहुँचाने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दक्षिण भारत में भी हिन्दी के शिक्षण–प्रशिक्षण का कार्य किया जा रहा है, जो सुखद स्थिति है। देश में विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों में, आयोगों में विश्व हिन्दी दिवस के आयोजन किये जाते हैं। आज हिन्दी प्रयोजनपरक रूप से हमारे समक्ष है। विश्व हिन्दी दिवस व हिन्दी दिवस के माध्यम से हिन्दी को रोजगारपरक बनाने का प्रयास किया जा रहा है और हम सफलता की ओर अग्रसर हैं। मनसा, वाचा, कर्मणा से हिन्दी को ग्रहण करने की आवश्यकता है। भाषा का भी आधुनिकीकरण होना चाहिए। पहले हमें स्वयं हिन्दी का आदर समादर करना होगा। फिर दूसरों से अपेक्षा की आशा करनी चाहिए। हिन्दी अस्मिता व पहचान की भाषा है। डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

विद्याश्री न्यास, वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी - 14, 15 व 16 जनवरी 2023

काशी की पहचान विद्वानों व कलाकारों से - डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु'

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली और विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में 14 जनवरी 2023 को श्री धर्मसंघ शिक्षामंडल सभागार में 'मध्यकालीन कविता : अवधारणाओं का पुनराविष्कार' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक–शिविर का उद्घाटन अध्यक्ष प्रो. हरेराम त्रिपाठी, कुलपति, सं. सं. विश्वविद्यालय, वाराणसी; मुख्य अतिथि माननीय दयाशंकर मिश्र 'दयालु' राज्यमंत्री, स्वतंत्र प्रभार, उत्तर प्रदेश शासन और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रधान संपादक डा. अमिता दुबे, विद्याश्री न्यास के न्यासी श्री अरुणेश नीरन, पूर्व प्राचार्य, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर एवं श्री गिरीश्वर मिश्र, पूर्व कुलपति, म. गां. अं. हिं. विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा दीप–प्रज्ज्वलन, माँ सरस्वती और पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण, आचार्य जयेन्द्रपति त्रिपाठी के वैदिक मंगलाचरण, आचार्य मृत्युंजय त्रिपाठी के घनपाठ, श्री उमापति दीक्षित, आचार्य, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के वैदिक पौराणिक मंगलाचरण एवं पूर्वोत्तर से पधारी सुश्री बीजोमोनी बोरा के बिहू नृत्य के साथ हुआ।

आयोजक–मंडल की तरफ से डा. अमिता दुबे ने अतिथियों का भावभीना स्वागत किया। मंचस्थ अतिथियों ने संभावना कलामंच के शिल्पी श्री राजकुमार की स्मृति को समर्पित कला–प्रदर्शनी के साथ ही न्यास के आयोजनों पर आधृत पुस्तकों 'प्रमुख भारतीय भाषाएँ : समकालीन प्रवृत्तियाँ' एवं 'मध्यकालीन कविता : सृजन के नए आयाम; न्यास की शोध–पत्रिका 'चिकितुषी' 2023, पं. विद्यानिवास मिश्र रचनावली (21 खंड) के आवरण–चित्र, प्रो. मंजुला चतुर्वेदी की कविता–पुस्तक 'एक उम्मीद है दिये की तरह' एवं श्री धर्मेन्द्र सिंह की पुस्तक 'भारत–विभाजन और कश्मीर' को भी लोकार्पित किया। न्यास की तरफ से प्रतिवर्ष प्रदान किए जाने वाले सम्मानों के क्रम में मंचस्थ अतिथियों एवं न्यास के सचिव श्री दयानिधि मिश्र ने इस वर्ष के आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान से हिन्दी – तमिल भाषा–साहित्य के सेतु–पुरुष श्री एम. गोविंद राजन को, श्रीमती राधिका देवी लोककला सम्मान से प्रख्यात बिरहा–गायक श्री मन्नू यादव को, आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान से निर्भीक, नवोन्मेषी पत्रकार श्री धर्मेन्द्र सिंह को तथा श्री कृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान से श्री हीरालाल मिश्र 'मधुकर' को उत्तरीय, नारियल, पंचमाला, पंचपुस्तक, प्रशस्तिपत्र, प्रतीक–चिह्न और सम्मान–राशि से समारोहपूर्वक सम्मानित किया।

स्वास्थ्य कारणों से लोककवि सम्मान से सम्मानित हिंदी–भोजपुरी के कवि–कथाकार श्री अनिल ओझा नीरद समारोह में उपस्थित नहीं हो पाए, लेकिन सौभाग्य से वर्ष 2022 के आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान से प्रसिद्ध गांधीविद श्री विश्वास पाटील और लोककवि सम्मान से भोजपुरी के ललित कवि श्री रविकेश मिश्र को भी इस मंच से सम्मानित करने का अवसर मिला। सम्मान समारोह को आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा ने शंख– ध्वनि से और आचार्य जयेन्द्रपति त्रिपाठी ने स्वस्ति वाचन से गरिमा प्रदान की। अपने प्रस्तावना – भाषण में श्री अरुणेश नीरन ने अवधारणाओं के पुनराविष्कार के संदर्भ में मध्यकालीन कविता के विविध पक्षों पर पुनः–पुनः विमर्श की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। प्रो. आनंदवर्धन, निदेशक, स्टाफ एकेडमिक कालेज, बीएचयू ने स्मृति–संवाद के अंतर्गत पंडित जी से जुड़े उन प्रसंगों को याद किया, जिनसे भाषा–साहित्य और सभ्यता–संस्कृति को देखने–परखने के नजरिए को विस्तार मिला। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए राज्यमंत्री डा. दयाशंकर मिश्र 'दयालु' ने कहा कि विद्याश्री न्यास के इस कार्यक्रम में आकर खुद को गौरवन्तित महसूस कर रहा हूँ क्योंकि काशी की पहचान विद्वानों व कलाकारों से है। उन्होंने मध्यकालीन कविता के उस हिस्से का विशेष उल्लेख किया जो काशी से जुड़ा रहा है। कहा कि कबीर, रैदास और तुलसी मध्यकाल की कविता ही नहीं काशी की भी पहचान हैं।

विशिष्ट अतिथि श्री राजेश कुमार गौतम ने विमर्श के विषय चयन के साथ ही साहित्य, संगीत और कला से सम्बंधित विद्वानों के सतत सम्मान के लिए न्यास की प्रशंसा की।

दूसरे विशिष्ट अतिथि पद्मश्री कमलाकर त्रिपाठी ने कहा कि एक चिकित्सक के रूप में उनके पास पंडित जी से दुख की भाषा में संवाद का अनुभव है। मध्यकाल की कविता भी एक तरह से इसी दुख की भाषा का संवाद है और शायद इसीलिए वह मातृभाषा में है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरेराम त्रिपाठी ने कहा कि विद्याश्री न्यास के द्वारा समाज के लिए नवाचार के सतत अन्वेषण का जो क्रम चल रहा है, उसको शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। उन्होंने प्रभु और प्रेम को समर्पित मध्यकालीन कविता को मनुष्यता के विस्तार की कोशिश के रूप में रेखांकित किया। तुलसी की रामकथा में मनुष्य ही नहीं, बानर– भालू भी आदर पाते हैं, सब जीवों के प्रति राम में दया का बराबर भाव है। तुलसी वर्ण व्यवस्थावादी थे, लेकिन उनका वर्णव्यवस्थावाद जातिवाद का पर्याय नहीं है। वह समाज के नियमन और अनुकूलन के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने और सत्र के संयोजन – संचालन के क्रम में डा. रामसुधार सिंह ने विमर्श के आगामी सत्रों के लिए कुछ महत्वपूर्ण सूत्रों की तरफ संकेत किए।

दूसरा सत्र पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के रूप में 'मध्यकालीन कविता की भावभूमि' पर केंद्रित रहा। मुख्य वक्ता श्री श्याम सुंदर दुबे ने अपने विस्तृत व्याख्यान में बताया कि कैसे भक्ति के क्षेत्र में करुणा का भाव प्रेम से तादात्म्य कर मानव–जाति को ईश्वर के निकट करता है, कैसे इस काल में व्यक्ति–बोध की सीमित रेखाएँ धूमिल पड़ जाती हैं और कैसे भक्तिकाल से रीतिकाल तक प्रेम कितने–कितने रूपों में लोक–प्रसार पाता है, लौकिक से अलौकिक और अलौकिक से लौकिक धरातल तक की यात्राएँ करता है। इसी सत्र में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. चितरंजन मिश्र ने इस उल्लेख के साथ कि लोहिया ने संस्कृत कविता को महत्वपूर्ण कविता और भक्तिकाल की कविता को महान कविता के रूप में रेखांकित किया था, बताया कि मध्यकाल ने जाने कितनी जटिल अवधारणाओं को सहज किया, जनसाधारण की समझ के मुताबिक किया और जीव–जीवन–जगत के लिए जाने कितने सूत्रों का संधान किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. जितेंद्र नाथ मिश्र ने कहा कि साहित्य के साथ आदिकालीन, मध्यकालीन जैसे विशेषण अध्ययन की सुविधा मात्र के लिए है, वस्तुतः उसकी भावभूमि सदा एक ही रही है, और वह है मनुष्यता की भावभूमि जिसे चहुँओर से चुनौतियाँ मिलती रहती हैं, कविता इन्हीं चुनौतियों से टकराती है और मध्यकाल की कविता संभवतः सबसे बेहतर तरीके से टकराती है। इस सत्र का संचालन विदुषी डा. शशिकला पांडेय ने किया ।

तीसरा सत्र कबीर, रैदास, जायसी और दादू पर केंद्रित रहा। डा. वंदना मिश्र ने मध्यकाल की स्त्री चेतना और उस काल में मौजूद कविता के स्त्री स्वर के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया। मीरां जैसे स्त्री कवियों के कथ्य ही नहीं, उनकी भाषा में भी स्त्री के होने और बोलने को महसूस किया जा सकता है। प्रो. अखिलेश कुमार दुबे ने बताया कि कैसे कबीर ने सामान्य जन को अभय का मंत्र देकर उन्हें अमरत्व का बोध कराया, शास्त्र के गूढ सत्य को जनसुलभ बनाया और मनुष्यता की रक्षा के यज्ञ में एक बड़ी भूमिका निभाई। डा. सत्यप्रिय पांडेय ने कहा कि जायसी ने अपने लोकसंग्रह की शक्ति का प्रमाण देते हुए कहावतों के इस्तेमाल से जीवन का समाजशास्त्र उद्घाटित किया है। ऐसा लगता है जैसे वे अवधी कहावतों का इनसाइक्लोपीडिया तैयार कर रहे हों। कवि– आलोचक इन्दीवर ने निर्गुणपंथ की उन विशेषताओं की विशेषत : चर्चा की जो सगुणपंथ से उसकी कथित दूरियों की अवधारणा को खारिज करती हैं। प्रो. बलराज पांडेय ने रैदास के संदर्भ में कहा कि उनकी वाणी में एक निर्मल मिठास है। वे ढपोर संस्कृति के विरुद्ध ढोर संस्कृति को महत्व देते हैं। दूसरे संत कवियों से भिन्न स्त्री के प्रति उनकी कविता में अवहेलना का भाव नहीं है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल ने बताया कि संत साहित्य अद्वैत की जड़ता को तोड़ता है। संत न तो अभाव में जीता है न प्रभाव में, वह स्वभाव में जीता है। उसका यह स्वभाव देशभाव है, मनुष्यभाव है, संस्कृतिभाव है। संत इन सबका साकार विग्रह है। इस सत्र का संयोजन संत साहित्य के मर्मज्ञ डा. बिजेंद्र पांडेय ने किया।

चौथा सत्र कवि–सम्मेलन के रूप में आयोजित हुआ। इसकी अध्यक्षता पूर्व न्यायाधीश और ख्यात कवि चन्द्रभाल सुकुमार ने की। प्रसिद्ध गीतकार श्री अशोक सिंह ने

संयोजन किया। जिन कवियों के सधे ने श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध किया, उनमें प्रमुख हैं सर्वश्री हरिराम द्विवेदी, गिरिधर करुण, वशिष्ठ अनूप, सुरेन्द्र वाजपेयी, शिव कुमार पराग, ब्रजेश पांडेय, धर्मप्रकाश मिश्र, धर्मेन्द्र गुप्त साहिल, मंजरी पांडेय, सिद्धनाथ शर्मा, सविता सौरभ, अखिलेश कुमार दुबे, बृजेन्द्र कुमार द्विवेदी शैलेश, अशोक कुमार सिंह, ब्रजेश चंद्र पांडेय, घायल, दीपंकर भट्टाचार्य, ऋचा शुक्ल आदि।

आयोजन के दूसरे दिन 15 जनवरी 2023 को सूर, तुलसी, मीरा, नन्ददास, रहीम, रसखान और केशव पर केंद्रित पाँचवे सत्र की अध्यक्षता प्रो. दिलीप सिंह ने की। डॉ. नीलम सिंह ने मीरां को विभिन्न पंथों के विवादी स्वरों को समरस करने वाली रागिनी के रूप में रेखांकित किया। डा. प्रेमशीला शुक्ल ने रामराज्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कहा कि राम विवेक को राजधर्म का मूल मानते हैं, रामराज्य प्रेम का राज्य है, जिसमें समस्त प्रजा विषमता खोकर परस्पर प्रेम की डोर से बँधी है। रामराज्य शासनमुक्त शासन है। प्रो. माधवेन्द्र पांडेय ने केशव का संदर्भ लेते हुए कहा कि उनका मूल्यांकन कुछ बड़े आलोचकों की उद्गारपरक टिप्पणियों और तुलसीदास जैसे महान कवि से तुलना का शिकार हुआ है। उन्होंने केशव पर बातचीत के लिए कविप्रिया और रसिकप्रिया को रामचंद्रिका की तुलना में बेहतर विकल्प बताया।

डा. सतीश पांडेय ने रहीम के काव्य–वैभव की चर्चा करते हुए कहा कि रहीम की काव्य–प्रतिभा अनुभव की समृद्धि, लोकजीवन की गहरी समझ, जीवन के प्रति सूक्ष्म अन्वेषण– दृष्टि, विषय–वैविध्य, भाषा की सहजता और शिल्प के अनूठेपन के कारण विशिष्ट है। प्रो. अवधेश प्रधान ने कहा कि श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति रसखान को इस जीवन–जगत से काटकर किसी कल्पनालोक में लीन नहीं कर देती, बल्कि चित्त को निःस्वार्थ प्रेम की भूमिका में ले जाकर इस जीवन जगत से और अधिक जोड़ देती है। प्रो. अनंत मिश्र ने कहा कि आज यह सोचकर आश्चर्य होता है कि कैसा वह व्यक्ति, वह समाज होगा जो कृष्ण और राम की मुस्कान पर अपना सब कुछ कुर्बान कर देता था। व्यक्ति का बेहतर या परम बेहतर होना ही भक्तिकाल की संकल्पना है कुछ नया करने या अलग करने का भाव ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। जो सौंदर्य की सराहना नहीं कर सकता, वह ईश्वर को भी नहीं पा सकता, क्योंकि जो प्रत्यक्ष सौंदर्य को नहीं निहार सकता, वह परम सौंदर्य को कैसे निहारेगा, कैसे उसकी तारीफ करेगा। डॉ. विश्वास पाटील ने श्रीरामचरितमानस को आद्योपांत समन्वय की रसधारा के रूप में रेखांकित किया। तुलसी ने अतीत से सार ग्रहण कर भविष्य के लिए उसे रसग्राही बना दिया। उन्होंने पुरातन परंपराओं का अनादर नहीं किया, जरूरी बदलावों के साथ उन्हें अधिक मूल्यवान जरूर बना दिया है।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डा. दिलीप सिंह ने सूर का संदर्भ लेते हुए सूरसागर को भक्तिकाव्य के सुमेरु की संज्ञा दी। उन्होंने सूर के पदों में भाषा, समाज और संस्कृति के सुंदर समन्वय पर प्रकाश डालते हुए नवीन सन्दर्भ में 'सूर के पाठ' को पढ़ने की आवश्यकता बताई। डा. दिलीप सिंह ने सूर की भाषा अभिव्यंजना–शक्ति और नवीन उद्‌भावनाओ को भागवत के तुलनीय रखते हुए प्रखर व्याख्या करते हुए शैलीतात्विक और समाजभाषिक निकषों पर भक्तिकाल की रचनाओं के पुनःपाठ पर बल दिया। इस सत्र का सफल संयोजन श्री सत्यप्रकाश पाल ने किया। इस सत्र का एक विशेष आकर्षण था मंचस्थ अतिथियों द्वारा श्री गुलाब चन्द्र, अपर जिला अधिकारी, नगर वाराणसी की पुस्तक 'कार्यालयी हिंदी एवं कम्प्यूटर' का लोकार्पण। लेखक ने इस पुस्तक की जरूरत, इसकी रचना–प्रक्रिया और विषय–वस्तु पर एक संक्षिप्त सारगर्भित वक्तव्य भी दिया।

छठा सत्र बिहारी, घनानंद, ठाकुर, बोधा और देव पर केंद्रित था। डॉ. अंजली अस्थाना ने अपनी ठसक के लिए प्रसिद्ध कवि ठाकुर के संदर्भ में कहा कि उन्होंने अपने जीवन के कड़वे अनुभवों के आधार पर जो प्रेम–निरूपण किया है, वह अपने आप में अप्रतिम है। ठाकुर एक तरफ रीति–परंपरा के विरुद्ध हैं तो दूसरी तरफ सामाजिक और प्रेम–संबंधी स्वतंत्रता के लिए विद्रोह से भरे हैं। डा. श्यामसुंदर पांडेय ने कहा कि घनानंद का संपूर्ण काव्य निश्छल प्रेम का निरूपण है। वे प्रिय की उपेक्षा को भी वरदान मानकर अपने प्रेम की अनन्यता को अक्षुण्ण रखना चाहते हैं। भगवद्भक्ति में भी वे सायुज्य की जगह सामीप्य की कामना करते हैं। डॉ. निलिम्प त्रिपाठी ने मध्यकालीन कविता में भारतीय आर्ष परंपरा की चरितार्थता रेखांकित की। प्रो. श्रीनिवास पांडेय ने रीतिकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों

और उनके महत्व का उल्लेख किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी ने पूर्व वक्तव्यों के समाहार के साथ ही अन्य कवियों के प्रदेयों की चर्चा करते हुए 'रीतिकाव्य में लोक' विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने लोक शब्द और उसकी यात्रा की विभिन्न संकल्पनाओं का हवाला देते हुए कहा कि आज लोक सिर्फ हमारी निवर्तमान पीढ़ी की यादों में रह गया है। उन्हीं यादों के समानान्तर उन्होंने रीतिकालीन कविता में लोकजीवन के विविध पक्षों को रोचक उदाहरणों से पुष्ट किया। इस सत्र का संचालन अपनी टिप्पणियों के साथ प्रो. नरेन्द्र नाथ राय ने किया।

मतिराम, भूषण, सेनापति, पद्माकर, आलम, गिरिधर कविराय पर केंद्रित सातवें सत्र की अध्यक्षता डा. रामसुधार सिंह ने की। प्रो. परितोष मणि ने राष्ट्रीय चेतना के क्रांतिकारी कवि के रूप में भूषण के मूल्य और महत्ता पर प्रकाश डाला। वीर शिवाजी और छत्रसाल के गौरव – गायक भूषण किसी धर्म के पक्षधर या विरोधी से कहीं ज्यादा धर्मांधता के विरोधी हैं। डा. क्रांतिबोध ने कवि सेनापति के 'सियापति–सेवक' होने के गुमान को लक्ष्य करते हुए उनके काव्य में निहित भक्तितत्व को ही नहीं, उनके रीतिगत कौशल को भी रेखांकित किया। डा. दिनेश पाठक ने पद्माकर का संदर्भ लेते हुए उनकी जीवनचर्या के भटकाव के परिप्रेक्ष्य में उनके कवि–कर्म के मूल्यांकन की बात कही। डा. एम. गोविंद राजन ने तमिल और हिंदी साहित्य के भक्ति–संदर्भों का विशेषतः उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से एक सम्पूर्ण आदर्श समाज का खाका तैयार किया है, जिसकी बुनियाद सामंती जीवन मूल्य है। उन्होंने क्षीण होती वर्ण–व्यवस्था एवं सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है। रामकथा के माध्यम से घटनाओं के आलोक में पारिवारिक, सामाजिक आदर्शों को उन्होंने व्याख्यायित करने की कोशिश की है।

डा. अशोक नाथ त्रिपाठी ने मतिराम का संदर्भ लेते हुए कहा कि वे पूर्ववर्ती कवियों के कथ्य के नवीकरण और सौंदर्य की मौलिक उद्भावना के सिद्ध कवि हैं। प्रकाश उदय ने आलम की कविता का पाठ शेख और आलम के संयुक्त कवि–कर्म के रूप में करने का प्रस्ताव रखा। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. रामसुधार सिंह ने कहा कि मध्यकालीन कविता भारतीय पुनर्जागरण की कविता है, एक ऐसे समय में जब भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा था, चारो तरफ से उस पर हमले किये जा रहे थे, साथ ही पाखंड और अंधविश्वास बढ़ते जा रहे थे, तब राम व कृष्ण के रूप में ऐसे चरित्रों का सृजन किया गया, जिन्होंने तमाम समस्याएँ झेलीं लेकिन सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा। मध्यकाल की कविता ने शोषण पर आधारित संसार के बरक्स हर तरह की विषमता को खारिज करते हुए बेगमपुर, बेगमदेश, वृंदावन, रामराज्य के प्रतिसंसार की रचना की। उन्होंने गिरिधर कविराय के कवि–कर्म की उन विशेषताओं का भी उल्लेख किया, जिनके चलते उनकी लोक–प्रसिद्धि यथावत बनी हुई है। इस सत्र का कुशल संचालन डा. रचना शर्मा तथा धन्यवाद ज्ञापन डा. प्रतिभा मिश्र ने किया।

आयोजन के तीसरे और अंतिम दिन 16 जनवरी 2023 का आयोजन मध्यकालीन कविता में लोक की प्रतिष्ठा, खुली चर्चा, पुरस्कार वितरण और समापन समारोह लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पं. पारसनाथ तिवारी नवीन परिसर, नियामताबाद में संपन्न हुआ। मुख्य

अतिथि श्री के. सत्यनारायण, अपर पुलिस महानिदेशक, वाराणसी परिक्षेत्र ने कहा कि यह ध्यान रखना चाहिए कि हम सभी इस वसुधा के पात्र हैं, तभी हम लोककल्याण कर पायेंगे। तेलुगु संत कवि की तुलना कबीर से करते हुए कहा कि वे भी कबीर की भाँति मूर्ति पूजा और अंधविश्वास के विरोधी थे। उन्होंने कहा कि आज जिस भी साहित्य की रचना हो रही है, वो वर्तमान युग के अनुसार रची जा रही है। मध्यकालीन रचनाओं में लिखा गया सूफी साहित्य कंपोजिट कल्चर का स्वरूप था, मध्य काल की कविताएँ उस समय के आक्रांताओं के विरोध में उठने वाली जनवाणी थी। मध्यकाल के कवियों ने लोकभाषा में रचना की, ताकि उनकी बात जन–जन तक आसानी से पहुँच सके। सत्यनारायण ने कहा कि मध्यकालीन साहित्य सामान्य जन को संबोधित है, वह यथार्थवादी है, हालांकि जीवन–जगत के विभिन्न क्षेत्रों के लिए आदर्श के अनगिनत उदाहरण उसने प्रस्तुत किए। इस क्रम में उन्होंने एक दोस्ताना–सा रिश्ता कायम करते हुए महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं से संवाद स्थापित किया, उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

विशिष्ट अतिथि प्रो. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि कर्मठता के साथ संवेदना जब आती है, तभी साहित्य का सृजन होता है। भारत की मूल धारा अध्यात्म की है। मध्यकाल में संतों ने लोकधारा के रूप में साहित्य की रचना की है। विशिष्ट अतिथि प्रो. वशिष्ठ अनूप ने मध्यकालीन कविता के प्रमुख अवदानों का उल्लेख करते हुए कहा कि बिहारी और देव को लेकर ही मध्यकाल में तुलनात्मक आलोचना की शुरुआत हुई थी। देव की रचनाओं में लोकसामान्य और लोकोत्तर प्रेम और सौन्दर्य का बहुविध चित्रण हुआ है। डा. सुनील कुमार मानस ने मध्यकालीन काव्य के महानायक के रूप में राम और कृष्ण के व्यक्तित्व और शील को संयुक्त रूप से भारतीयता के प्रतिनिधि के रूप में निरूपित किया। डा. प्रणव शास्त्री ने दंतकथाओं में सूरदास और वृंदावन की लोकव्याप्ति को व्याख्यायित किया। प्रो. सुमन जैन ने कहा कि कबीर अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रश्न ही नहीं खड़े करते उनके उत्तर भी देते हैं। कबीर की रचनाओं में सांस्कृतिक तत्व प्रेम है, प्रेम ही उनका ज्ञान है, जो एक निर्मल और सहज मानवीय समाज का निर्माण करता है। डा. भारती गोरे ने अनेक उदाहरणों के माध्यम से बताया कि कैसे शास्त्र के बरक्स लोक की चिंता को मध्यकालीन कवियों ने प्रस्तुत किया।

अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. श्रद्धानंद ने कहा कि पं. पारसनाथ तिवारी की विद्याभूमि पर हम सभी पं. विद्यानिवास मिश्र को याद कर रहे हैं, यह एक सुखद संयोग है। पं विद्यानिवास जी नवोदित लेखकों को प्रेरित करते हुए उनमें सृजन के बीज बोते थे। कहा कि सबसे विचारणीय यह तथ्य है कि संतोष की संस्कृति विलुप्त हो रही है, जिससे हमारी सभ्यता का क्षरण हो रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो. उमापति दीक्षित के पौराणिक मंगलाचरण और समाजशास्त्र की छात्राओं के स्वागत गीत और असम की बीजोमोनी बोरा के बिहू–गायन और बीहू–नृत्य से हुआ। अतिथियों का स्वागत प्रो. उदयन मिश्र ने, संचालन प्रो. इशरत जहां ने किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए महाविद्यालय के प्रबंधक श्री राजेश कुमार तिवारी ने कहा कि ज्ञानयोग और कर्मयोग से एक नया सृजन होता है, यह आयोजन इसी का मूर्त रूप और हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। आयोजन में प्रो. इशरत जहां की कविता–पुस्तक 'नादानियाँ' का लोकार्पण भी हुआ।

युवा समवाय के अंतर्गत कविता के लिए डा. फिरोज खान (बीएचयू), आलेख के लिए श्री उदयप्रताप पाल, निबंध के लिए श्री स्नेह द्विवेदी (सभी वाराणसी), कहानी के लिए जीतू कुमार गुप्ता (असम), सभी विधाओं में प्रस्तुति के लिए कागो मादो (अरुणाचल प्रदेश) और सांस्कृतिक प्रस्तुति के लिए संयुक्त रूप से सुनीता राम (असम) और बीजूमोनी बोरा (असम) को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रो. सतीश, डा. शशिकला, प्रकाश उदय, प्रो. दयानिधि यादव, प्रो. अरविंद पाण्डेय, डा. वाचस्पति, डा. भावना, डा गुलजबीं, प्रो. संजय, प्रो. अमित, डा. विजयलक्ष्मी, डा. ब्रजेश, डा. धर्मेन्द्र, राहुल, सुनील, सुरेंद्र, अतुल, विनीत आदि के साथ महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही।

एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय एवं भारतीय ज्ञान, संस्कृत और योग केंद्र, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी-20 व 21 जनवरी, 2023

भारतीय साहित्य का देश के स्वतंत्रता संग्राम में भारी योगदान - डॉ. उज्ज्वला चक्रदेव

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय व भारतीय ज्ञान, संस्कृत और योग केंद्र, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 20 व 21 जनवरी, 2023 को 'स्वाधीनता संग्राम में भारतीय साहित्य का महती योगदान' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. उज्ज्वला चक्रदेव ने कहा है कि स्वाधीनता संग्राम में महती योगदान करने वाले भारतीय साहित्य को जनता तक पहुंचाना जरूरी है। वे मुंबई में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी, मराठी, संस्कृत और गुजराती साहित्य के योगदान पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित

कर रही थीं। सम्मेलन का आयोजन एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय के नव स्थापित भारतीय ज्ञान, संस्कृत और योग केंद्र द्वारा लखनऊ स्थित उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान और मुंबई स्थित हिंदुस्तानी प्रचार सभा के सहयोग से किया गया था। राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन मध्यप्रदेश के साहित्यकार मनोज कुमार श्रीवास्तव और डॉ. चक्रदेव ने किया। इस एस.एन.डी.टी. महिला विवि की कुलपति चक्रदेव ने जनता तक पहुंचाने का आह्वान किया।

इस अवसर पर डॉ. चक्रदेव ने कहा कि भारतीय साहित्य का देश के स्वतंत्रता संग्राम में भारी योगदान है। मौजूदा दौर में जरूरी है कि उस साहित्य को खोजकर जनता तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि 'संस्कृत स्त्री पराशक्ति' एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय का घोष वाक्य है। एक प्रबुद्ध महिला समाज में अद्भुत बदलाव ला सकती है। इसके साथ ही वह दुनिया और समाज को सशक्त बना सकती है।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के निदेशक श्री आर.पी. सिंह द्वारा मुंबई में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी, मराठी, संस्कृत और गुजराती साहित्य के योगदान पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान पुस्तिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि एवं हिंदुस्तानी प्रचार सभा के निदेशक संजीव निगम, दिल्ली से आए इतिहासकार और उपन्यासकार राजगोपाल सिंह वर्मा और दिल्ली के कवि, कहानीकार भारतेंदु मिश्रा ने सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में विचार साझा किए। संचालन डॉ. रवींद्र कात्यायन ने किया।

पत्रकार एवं लेखिका अनुभा जैन ने कहा कि 'अमृत बाजार पत्रिका', महात्मा गांधी के 'नवजीवन' और 'हरिजन' और दैनिक हिंदुस्तान समेत कई हिंदी समाचार पत्र–पत्रिकाएं स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में प्रभावी औजार बने और उसे गति व धार प्रदान की। अखबारों ने लोगों के बीच राष्ट्रवादी विचारधारा और राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता, समानता और देशभक्ति के विचारों का प्रसार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। विश्व में हिंदी तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी है।

मनोज श्रीवास्तव ने स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी उन हिंदी, मराठी, गुजराती और संस्कृत रचनाओं और कृतियों के बारे में बात की, जिनके लेखकों को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था या कारावास की सजा सुनाई थी। उन्होंने कहा कि उस समय का साहित्य जन आंदोलनों को प्रभावशाली बनाने में सफल रहा, जिसके फलस्वरूप देश को 1947 में आजादी मिली।

गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर झण्डा रोहण कार्यक्रम –26 जनवरी, 2023

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा गणतंत्र दिवस एवं बसंत पंचमी (26 जनवरी, 2023) को भव्य झण्डा रोहण का आयोजन संस्थान भवन में किया गया। बसंत पचमी के शुभ अवसर पर संस्थान स्थित प्रेमचन्द सभागार में माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण/पुष्पार्पण अर्पित करते हुये दीप प्रज्वलन किया गया। इस अवसर पर संस्थान परिवार के निम्नलिखित कर्मचारी/ अधिकारी उपस्थित रहें :– सर्वश्री डॉ. अमिता दुबे, किरन संजय, प्रदीप कुमार दुबे, समीर पाण्डेय, सुरेन्द्र कुमार, रामजनम दिवाकर, सुनीता रानी, श्याम कृष्ण सक्सेना, हेम सिंह, शिवराज, अरविन्द प्रजापति, अशोक कुमार, बराती लाल, रजनेश कुमार, प्रताप कुमार, दिनेश कुमार शर्मा, विनोद कुमार वर्मा, देवेन्द्र पाल, अकबर हुसैन, सौरभ चौहान, उमेश कुमार, अनिल कुमार, मुकेश कुमार, राजेन्द्र सिंह, नवीन सिंह, सुभाष कुमार, प्रदीप, जितेन्द्र, रामपाल, सीमा मिश्र, चिंतामणि सिंह, नवी हसन, प्रमोद कुमार, अमन, अमित, मनोज, संजय कुमार शर्मा, मनोज कुमार, सुनील सखूजा।

जयशंकर प्रसाद एवं महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत एवं लक्ष्मीनारायण मिश्र स्मृति समारोह – 30 व 31 जनवरी, 2023

जयशंकर प्रसाद नवजागरण कालीन साहित्यकार – डॉ. हरीशकुमार शर्मा

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा जयशंकर प्रसाद एवं महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत एवं लक्ष्मीनारायण मिश्र की स्मृति में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 30 व 31 जनवरी, 2023 को पूर्वाह्न 10.30 बजे से हिन्दी भवन के प्रेमचन्द सभागार में किया गया। दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के उपरान्त कार्यक्रम में वाणी वंदना श्री सर्वजीत सिंह मारवा द्वारा प्रस्तुत की गयी। अभ्यागतों का स्वागत करते हुए श्री के0पी0 द्विवेदी निदेशक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कहा– जयशंकर प्रसाद एवं महादेवी वर्मा की स्मृति में आयोजित समारोह में आप सबका स्वागत अभिनन्दन एवं वंदन है।

डॉ0 हरीश कुमार शर्मा ने कहा– जयशंकर प्रसाद जी की पहचान छायावादी कवि के रूप में है। प्रसाद जी एक सम्पूर्ण साहित्यकार हैं। जयशंकर प्रसाद की नाटक के क्षेत्र में अप्रतिम देन है। वे नाटक के सशक्त हस्ताक्षर हैं। काव्य के क्षेत्र में प्रसाद ने कामायनी, लहर, झरना, आँसू जैसी ऐतिहासिक रचनाएं लिखीं। उनकी रचनाएं ऐतिहासिकता पर आधारित हैं। प्रसाद नव जागरणकालीन साहित्यकार हैं। उनका साहित्य राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत है। वे अपनी रचनाओं में सामाजिक समस्याओं को सजगता से देखते हैं व उनके निराकरण का प्रयास करते हैं। 'ध्रुवस्वामिनी' रचना स्त्री विमर्श पर आधारित रचना है। उन्होंने चन्द्रगुप्त,

स्कन्द गुप्त जैसे ऐतिहासिक नाटकों की रचना की।

डॉ0 वशिष्ठ अनूप ने कहा– जयशंकर प्रसाद का काव्य दर्द से भरा हुआ है। 'आँसू' रचना दर्द भरी रचना है। प्रसाद जी का जीवन काफी दुःखों भरा था। रचनाएं पीड़ा प्रधान हैं। वे बहुआयमी प्रतिभा के धनी थे। उनके लेखन में कविरूप का विस्तार मिलता है। उनका विपुल लेखन दुःख व चिन्ता से भरा हुआ है। प्रसाद की रचनाएं राष्ट्रीय चेतना व कल्पना से ओत–प्रोत हैं। 'कामायनी' उनकी साहित्य जगत को एक अभूतपूर्व देन है। उन्होंने मृत्यु पर जीवन के विजय की कल्पना की। प्रसाद ने अपनी रचनाओं में स्त्री को काफी ताकतवर बताया है व पुरुष पलायनवादी सुख की खोज में है। उनका स्त्री पात्र पलायनवादी पुरुष को जीवन की तरफ अग्रसर करता हैं। उनकी काव्य रचनाओं में ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति साक्षात समाहित होकर नृत्य करती है। काव्य में भी नाटक तत्व भरा हुआ है। नारी तुम केवल श्रद्धा हो' ..... प्रसिद्ध पंक्तियों में से है।

डॉ0 विद्योत्तमा मिश्र ने कहा–प्रसाद का प्रेम संकीर्णताओं से मुक्त कर देता है। प्रसाद का काव्य प्रेम रस से पूर्ण है। वह प्रेम, प्रकृति, राष्ट्र की माटी से जुड़ा हुआ है। राष्ट्र की स्मृति पाथेय बन जाती है। उनका प्रेम सृजन की प्रेरणा है। प्रसाद प्रकृति में रमते हैं। प्रकृति सचेतन है। प्रकृति के मन पर मुग्ध होते है प्रकृति संघर्ष व कर्म की प्रेरणा प्रदान करती है। धरती पर जीवन की पुकार है। वे कहते हैं शक्ति का उन्माद होना अच्छी बात नहीं है। प्रकृति उपमान के रूप में उनके काव्य में प्रस्तुत है। उनकी रचनाएं देश प्रेम राष्ट्रीय स्वर, राजनीतिक, सामाजिक तत्वों से ओत–प्रोत हैं। वे संस्कारी व आस्थावान थे। प्रसाद के समय में बौद्धिक गुलामी आहत करती है। उनकी कविताओं में राष्ट्रीय स्वर दिखायी पड़ता है। जो शासक मन पर शासन करते हैं वही अतीत व वर्तमान को जोड़ने में सेतु का काम करते हैं।

डॉ0 कृष्णा जी श्रीवास्तव ने कहा– प्रसाद जी के समय देश बड़ी त्रासदी के दौर से गुजर रहा था। हमारे राष्ट्र पर पाश्चात्य का प्रभाव था। प्रसाद अपने नाटकों एवं काव्य से भारतीयों में नव चेतना जागरण करते है। प्रसाद के समय के नाटकों में स्तरीयता न होने के कारण वे काफी उदासीनता का अनुभव करते रहे। उसको देखते हुए अपने नाटकों में परिष्कृत करने का प्रयास किया व नाटक को एक नई दिशा प्रदान की। 'आर्यावृत में उन्होंने भारत वर्ष की व्यापक चर्चा की है। 'चन्द्रगुप्त' उनकी प्रमुख नाटय रचना थी। वे राष्ट्रीयता के प्रचारक के रूप में हमारे सामने आते हैं। उनकी रचनाएं राष्ट्रीयता व देश प्रेम से परिपूर्ण हैं। प्रसाद हमारे बीच अपने वाङमय के माध्यम से सदैव स्मरणीय रहेंगे।

अपराह्न 2.00 बजे आयोजित द्वितीय सत्र में प्रयागराज से पधारी डॉ0 स्नेह सुधा ने कहा– महादेवी के रेखाचित्रों में जीवन के आंशिक चित्रों का समावेश मिलता है। रेखाचित्रों में शब्दों के माध्यम से साहित्य को सजाने संवारने का कार्य किया जाता है। 'अतीत के चलचित्र' में महादेवी जी के जीवन दर्शन, समाज व परिवार का वर्णन मिलता है। वे अपने रेखाचित्रों में स्त्री के प्रति होने वाले अन्याय व शोषण का चित्रण मार्मिक शब्दों में करती हैं। उनके साहित्य में स्त्री शुद्ध पवित्र आत्मा का प्रतीक हैं। महादेवी नारी वर्ग के लिए सशक्त आधार प्रदान करती हैं। वे हिन्दू धर्म में व्याप्त धार्मिक पाखंडता का विरोध करती नजर आती हैं। उनके रेखाचित्रों में हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। वाराणसी से पधारे डॉ0 सत्य प्रकाश पाल ने कहा– महादेवी वर्मा की कविताओं में पीड़ा है, अवसाद है। मधुर, मधुर मेरे दीपक जल ...... महादेवी को

आधुनिक मीरा भी कहा जाता है। वे अपनी कविताओं में समय से टकराती नजर आती हैं। उनकी कविताओं में संस्मरणों, रेखाचित्रों में स्त्रियों के सम्बन्ध में व्यापक चित्रण मिलता है। उनकी कविताएं स्त्रियों की व्यथा का सुन्दर वर्णन करती हैं। उनके काव्य में छायावाद में रहस्यवाद दिखायी पड़ता है। उन्होंने स्त्री व्यथा को जन–जन तक पहुंचाने का प्रयास किया। उनके जीवन में वेदना, 'रश्मि रचना में हर्ष और उल्लास दिखायी पड़ता है। उनके काव्य में लौकिकता से अलौलिकता को ले जाने की क्षमता है। वे अपनी कविताओं के माध्यम से समय को पुष्पित करने का प्रयास करती नजर आती हैं। वे सहजता की पक्षधर हैं। जब वे यह कहती हैं 'एकला चलो' तो उनके साहित्य पर रवीन्द्रनाथ टैगोर का भी प्रभाव दिखायी पड़ता है।

डॉ0 ममता तिवारी ने कहा– महादेवी के काव्य में छायावादी तत्वों का समावेश है। वे लोक मंगल व युगबोध को ध्यान में रखकर साहित्य रचना करती है। वे आध्यात्मिकता व दार्शनिक चेतना प्रमुख रूप से उनकी

रचनाओं में मिलती हैं। छायावादी कविताओं में आरम्भ से अंत तक जिज्ञासा है, कौतूहल है। उनकी रचना में 'दीपक' प्रिय प्रतीक है। दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है। प्रकृति आत्मा और परमात्मा के बीच सामंजस्य की भूमिका निभाती है। साधक एवं साध्य के मध्य एकात्मकता ही रहस्यवाद का आधार है। उनकी रचनाओं में द्वैत और अद्वैत का सामंजस्य व द्वन्द्व दिखायी पड़ता है। आत्मा व परमात्मा का सम्बन्ध चिर सत्य है। महादेवी विरह की कवयित्री के रूप में साहित्य जगत में विद्यमान हैं।

कथारंग के माध्यम से सुश्री नूतन वशिष्ठ के निर्देशन में निराला की कहानी 'देवर का इंद्रजाल' का पाठ कनिका अशोक, अपूर्वा अवस्थी, सुवंश सक्सेना 'अंकुर' ने किया। साथ ही जयशंकर प्रसाद की कहानी 'छोटा जादूगर का पाठ अनुपमा शरद व सोम गांगुली द्वारा किया गया। डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी - 07 व 08 फरवरी, 2023

हिन्दी-मराठी भाषा साहित्य ने स्वतंत्रता संघर्ष को शब्दांकित किया - डॉ. अमिता दुबे

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ व राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर एवं महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 07 व 08 फरवरी, 2023 को दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दीप प्रज्जवलन एवं माँ वीणा पाणी की प्रतिमा पर मल्यार्पण एवं पुष्पार्पण के साथ प्रारम्भ हुए संगोष्ठी में

'स्वतंत्रता संघर्ष में हिन्दी–मराठी साहित्य का अवदान' विषय पर व्याख्यान हेतु आमंत्रित विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने कहा कि आजादी की 75 वीं वर्षगाठ के अवसर पर कृतक्ष राष्ट्र स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों और स्वातंत्र्य मूल्यों का आकलन बहुविध दृष्टि से कर रहा है। साहित्य के स्तर पर भी यह

पहल हो रही है कि स्वतंत्रता के मूल्य, महत्व और उपलब्धियों का विवेचन/विश्लेषण किया जाय, जिससे वर्तमान और भविष्य के भारतीय समाज की प्रगतिगामी दिशाएं तय की जा सकें। यूँ तो देश के स्वातंत्र्य संघर्ष को गतिशील बनाने में हर भारतीय भाषा की अपनी कुछ–न कुछ भूमिका/विशेषता रही है, किंतु इस क्षेत्र को हिन्दी

और मराठी की भूमिका विशिष्ट रही है। राष्ट्रभाषा के तौर पर हिन्दी ने राष्ट्र को एकीकृत करने का दायित्व निभाया, आजादी के आंदोलन को एक सुर देने की पहल की, भारतीय जनमानस को एक सूत्र में पिरोने की कोशिश की। समग्र राष्ट्रीय संघर्ष हिन्दी के माध्यम से प्रतिध्वनित हुआ। लोकमान्य तिलक और 'केशरी' की भूमिका भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में निर्विवाद रूप से सर्वोपरि रही है।

डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने कहा कि अमृतोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में हिन्दी और मराठी साहित्य की स्वतंत्रता संघर्ष में भूमिका का आकलन व मूल्यांकन करना जरूरी है। हमारी कोशिश होगी कि दोनों भाषाओं के साहित्य में स्वतंत्रता संघर्ष की अनुगूंज को शब्दांकित किया जाय।

नरेश मेहता एवं लक्ष्मीकान्त वर्मा स्मृति समारोह – 13 फरवरी, 2023

नरेश मेहता का व्यक्तित्व स्वनिर्मित था – डॉ. राकेश कुमार शुक्ल

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा नरेश मेहता एवं लक्ष्मीकान्त वर्मा स्मृति समारोह के शुभ अवसर पर सोमवार 13 फरवरी, 2023 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन, लखनऊ में पूर्वाह्न 11.00 बजे से किया गया। दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में वाणी वन्दना सुश्री रिद्धिमा श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत की गयी।

सम्माननीय अतिथि डॉ0 राकेश कुमार शुक्ल, डॉ0 विनयदास, डॉ0 हेमांशु सेन व विनम्र सेन सिंह का उत्तरीय द्वारा स्वागत श्री के0पी0 द्विवेदी, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा किया गया। अभ्यागतों का स्वागत करते हुए निदेशक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कहा– उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित 'नरेश मेहता एवं लक्ष्मीकान्त वर्मा' की पावन स्मृति को सादर नमन।

डॉ0 विनम्रसेन सिंह ने कहा – लक्ष्मीकांत वर्मा का व्यक्तित्व विराट था, अद्भुत था। नई कविता आन्दोलन में उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही है। उनका मानना था नई कविता आधुनिकता से ओत–प्रोत है। नई कविता का कवि अर्थ के लय को पकड़ कर कार्य करता है। नई कविता के कवियों को काफी विरोधों का सामना करना पड़ा। वे काव्य में व्यंग्य के माध्यम से भावों को प्रकट करने में समर्थ रहे। उन्होंने नई कविता में लघुमानव तत्व की परिकल्पना की। वे नई कविता में मनुष्य की मनुष्यता की

खोज करते नजर आते हैं। वे अपने काव्य में मनुष्य को समझने पर बल देते हैं। नई कविता के कवियों पर अस्तित्ववादी होने के आरोप लगाये गये। नई कविता अनुभूतियों का नवीनीकरण करती है। नई कविता के कवि नये भाव से कविता की रचना करता हैं। उनका मानना था कि कटुता व निराशा भी कविता में प्रकट कर सकते हैं।

डॉ0 हेमांशु सेन ने कहा – नरेश मेहता ने हिन्दी धरा को विभूषित किया। साहित्य समाज का दर्पण होता है, तो संस्कृति परिवेश को परिभाषित करती है। नरेश मेहता ने राम के चरित्र का सुन्दर वर्णन अपनी रचना में किया है। भाषा की भी अपनी संस्कृति होती है। संस्कृति हमें दिशा देती है। परम्परा से जोड़ती है। केशव प्रसाद मिश्र, विश्वनाथ मिश्र तथा नन्द दुलारे वाजपेयी के सानिध्य ने नरेश मेहता को महान बनाया। नरेश मेहता राम कथा के माध्यम से अपने काव्य की रचना करते हैं। कविता में अहं का तत्व महत्वपूर्ण है। 'नई कविता के प्रतिमान' उनकी

प्रमुख रचनाओं में से एक है। लक्ष्मीकांत वर्मा का कहना था कि कवि का अपना सत्य ही असली सत्य होता है। नरेश मेहता अपने काव्यों में अनुभूति के धरातल पर रचना करते हैं। उनकी रचनाओं में राम कर्म सिद्धान्त के प्रतीक हैं। भाषा मनुष्य को सामर्थ्यवान बनाती है, जिस दिन व्यक्ति अभिव्यक्तिविहीन हो जायेगा, वह दिन सबसे दुर्भाग्यपूर्ण होगा। नरेश मेहता की रचना में भारतीय संस्कृति रची–बसी हैं।

डॉ0 विनयदास ने कहा– लक्ष्मीकांत वर्मा नई कविता के मेरुदण्ड थे। वे नई कविता आन्दोलन के प्रस्तोता के रूप में जाने जाते रहे। वे व्यक्तित्व के धनी थे। वर्मा जी का जीवन काफी संघर्षमय रहा है। वे 'हिन्दी लाओ, अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के सक्रिय सदस्य रहे। वे हिन्दी भाषा के प्रबल पक्षधर रहे। उनमें विरल प्रतिभा थी। वे रेडियो कलाकार, निबन्धकार, नाटककार, उपन्यासकार भी थे।

नई कविता में प्रतिमानों को स्थापित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उनका समय उपन्यासों का प्रयोगकाल था। उन्हें तत्कालीन उपन्यासकारों के विरोधों का भी सामना करना पड़ा था। लक्ष्मीकांत वर्मा का 'मुंशी रायजादा' उपन्यास चर्चित रहा है।

डॉ0 राकेश कुमार शुक्ल ने कहा– नरेश मेहता का व्यक्तित्व स्वनिर्मित था। उनका जीवन बहुत विसंगतियों में व्यतीत हुआ। वे कभी सेना में तो कभी बौद्ध भिक्षु बने, आजीविका का संकट का सामना करते हुए उनका जीवन संघर्षमय रहा। नरेश मेहता जी अपने समय के रचनाकारों से आलोचना के शिकार रहे। काफी चुनौतियों का सामना करते हुए उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता जारी रखी। 'उत्तर कथा' उनकी प्रमुख रचनाओं में एक हैं। उनकी मान्यता थी कि शब्द सत्ता महत्वपूर्ण है। शब्द के माध्यम से ही भावनाओं की अभिव्यक्ति हो रही है। उनके उपन्यासों में स्त्रियाँ साक्षात त्याग की प्रतिमूर्ति है। उनकी रचनाओं की विशेषता कथा रस है। नरेश मेहता स्वयं को मूलतः कवि ही मानते थे। वे अनोखी परम्परा के कवि थे। समाज की समग्र संस्कृति वहाँ के साहित्य में मिलती हैं, उनकी रचनाओं में शब्दों का आलोक सांस्कृतिक पथ को उजागर करता है। उनके साहित्य में राष्ट्रीय जागृति भरी पड़ी है।

नरेश मेहता एवं लक्ष्मीकांत वर्मा की कविता, निबंध, कहानी, उपन्यास अंश, संस्मरण से सम्बन्धित रचनाओं का सुश्री तनुमिश्रा, रोशनी लोधी, खुशी सखूजा, अर्चना, सुकीर्ति तिवारी, रागिनी सिंह, अर्पित जायसवाल द्वारा पाठ किया गया। डॉ. अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

बिशप कॉटन वीमेन्स क्रिश्चियन कॉलेज एवं साहित्य साधक मंच, बेंगलूरु के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी - 20 व 21 फरवरी, 2023

'हिन्दी के विकास में कर्नाटक का योगदान'

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ एवं साहित्य साधक मंच, बेंगलूरु, कर्नाटक राज्य विश्वविद्यालय कॉलेज, हिंदी प्राध्यापक संघ एवं हिंदी विभाग, बिशप कॉटन वीमेन्स क्रिश्चियन कॉलेज, बेंगलूरु के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 20 व 21 फरवरी, 2023 को दो दिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी सम्मलेन का आयोजन मिशन रोड स्थित कॉलेज के सभागार में किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद राहुल देव द्वारा की गयी। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सोमा बंद्योपाध्याय, कुलपति बाबा साहब अंबेडकर विश्व विद्यालय, कोलकाता एवं डायमंड हार्बर महिला विश्वविद्यालय, कोलकाता उपस्थित रही। पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ. अजय कुमार सिंह सम्मानित अतिथि और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। राज्य के लेखकों का हिंदी साहित्य में योगदान एवं कर्नाटक के

लेखकों का हिंदी साहित्य में योगदान विषय पर केन्द्रित पत्रकारिता सत्र में अध्यक्ष डॉ एस.ए. मंजुनाथ और मुख्य अतिथि डा. राजेंद्र पोवार, सम्मानित अतिथि राजस्थान पत्रिका, बेंगलूरु के सम्पादकीय प्रभारी जीवेन्द्र झा और विशिष्ट अतिथि डॉ कोयल बिस्वास उपस्थित रहे। डॉ इसपाक अली के बीज वक्तव्य से प्रारम्भ सम्मलेन सत्रों में सम्पन्न हुआ, जिसमें कर्नाकट में हिंदी का प्रचार एवं स्वयंसेवी संस्थाएं, सत्र के अध्यक्ष डा मनोहर भारती, मुख्य अतिथि प्रो वी.रा. देवगिरि, विशिष्ट अतिथि विनीता जैन

उपस्थित थी। प्रथम दिन के अंतिम सत्र में काव्य गोष्ठी आयोजित की गयी। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता आईएफएस अधिकारी डॉ सुनील पंवार ने की।

समकालीन परिस्थिति सत्र के अध्यक्ष इसपाक अली, मुख्य अतिथि डा. मैथिलि पी. राव, सम्मानित अतिथि डॉ कविता चांद गुडे, विशिष्ट अतिथि डॉ रेखा अग्रवाल उपस्थित रही। कर्नाटक में हिंदी की शोध परंपरा एवं अनुवाद पर आयोजित सत्र के अध्यक्ष डॉ ऋषभ देव शर्मा,

मुख्य अतिथि डॉ दयानन्द यस शालुके, विशिष्ट अतिथि डॉ संजीव रायप्पा रहे। मुख्य अतिथि इसरो के उपनिदेशक डॉ अलोक कुमार श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि डॉ ऋषभ देवशर्मा उपस्थित रहे।

सम्मलेन में कर्नाटक, आंध्र प्रदेश हरियाणा एवं पश्चिम बंगाल के रचनाकार, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। 21 फरवरी को डॉ ऋषभ देव शर्मा की अध्यक्षता एवं डॉ प्रभाशंकर प्रेमी के मुख्य आतिथ्य में समापन समारोह आयोजित किया गया।

उ.प्र. हिन्दी संस्थान के निराला सभागार का लोकार्पण - 01 मार्च, 2023

श्री आर0पी0 सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा निराला सभागार का लोकार्पण दिनांक 01. 03.2023 को किया गया। इस शुभ अवसर पर संस्थान परिवार द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण/पुष्पार्पण अर्पित करते हुये दीप प्रज्वलन किया गया।

इस अवसर पर संस्थान परिवार के निम्नलिखित कर्मचारी/अधिकारी उपस्थित रहें :— सर्वश्री डॉ. अमिता दुबे, किरन संजय, प्रदीप कुमार दुबे, समीर पाण्डेय, सुरेन्द्र कुमार, रामजनम दिवाकर, सुनीता रानी, श्याम कृष्ण सक्सेना, हेम सिंह, अरविन्द प्रजापति, अशोक कुमार, बराती लाल, रजनेश कुमार, प्रताप कुमार, दिनेश कुमार शर्मा, विनोद कुमार वर्मा, देवेन्द्र पाल, सौरभ चौहान, उमेश कुमार, अनिल कुमार, मुकेश कुमार, राजेन्द्र सिंह, नवीन सिंह, सुभाष कुमार, प्रदीप, जितेन्द्र, रामपाल, सीमा मिश्र, चिंतामणि सिंह, नवी हसन, प्रमोद कुमार, अमन, अमित, मनोज, संजय कुमार शर्मा, मनोज कुमार, सुनील सखूजा, शिवराज आदि।

बाल मनोविज्ञान के चितेरे सोहन लाल द्विवेदी स्मृति समारोह - 04 मार्च, 2023

हर आयु के व्यक्ति को बाल साहित्य का अध्ययन करना चाहिए - डॉ. दिविक रमेश

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सोहनलाल द्विवेदी की स्मृति में बाल साहित्य संगोष्ठी समारोह के शुभ अवसर पर शनिवार 04 मार्च, 2023 को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन हिन्दी भवन, निराला सभागार लखनऊ में पूर्वाह्न 11.00 बजे से किया गया। दीप प्रज्वलन, माँ सरस्वती व सोहन लाल द्विवेदी की प्रतिमा पर माल्यार्पण, पुष्पार्पण के उपरान्त प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में वाणी वन्दना डॉ0 कामिनी त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत की गयी।

इस अवसर पर दिल्ली से पधारे सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 दिविक रमेश ने सोहन लाल द्विवेदी के व्यक्तित्व–कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा– हर आयु के व्यक्ति को बाल साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। बाल साहित्य केवल बच्चों के लिए ही नहीं होता है, बल्कि सभी को पढ़ना चाहिए। महानगरों में रहने वाला बच्चा ही

बाल साहित्य नहीं पढ़ता, ग्रामीण परिवेश में रहने वाला बालक भी उसको पढ़ता है। बाल रचना बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए। रचना प्रक्रिया की दृष्टि से सभी साहित्य एक हैं। बाल साहित्य वस्तुतः सिखाने के लिए ही है। बाल साहित्य शिक्षाप्रद होना चाहिए। बाल विमर्श की भी बात होनी चाहिए। वर्तमान की मांग भी है कि बाल विमर्श पर व्यापक चर्चा हो। रचनाकार जब स्वयं से प्रश्न करता अथवा जिज्ञासा प्रकट करता है, तो एक अच्छे साहित्य की रचना करता है। रचना कलात्मक अभिव्यक्ति है। बाल साहित्य बच्चों को आवाज देता है। द्विवेदी जी की कविताएँ कलात्मकता व रचनात्मकता से परिपूर्ण हैं।

सुश्री स्नेहलता ने कहा – सोहन लाल द्विवेदी जी अमर कवियों में से हैं। उनकी रचनाएं हमें प्रेरणा देती हैं। लहरों से डरकर नौका कभी पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती..। द्विवेदी जी की ये अमर पंक्तियाँ जनमानस के मन मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ती हैं।

स्नेहलता ने अपनी बाल रचना 'खबर जंगल से आई, होली आई, होली आई' 'आज है आधार कल का, कल कभी न आयेगा...... सुनाई।

श्री रमाशंकर ने कहा– साहित्य व फिल्म दोनों की समाज निर्माण में महान भूमिका है। बाल फिल्में बच्चों के मन मस्तिष्क को काफी प्रभावित करती हैं। बच्चों में अनुशासन होना चाहिए, परन्तु उनको हतोत्साहित न करें। बच्चों में विश्वास से अधिक आत्मविश्वास का होना आवश्यक है। बाल फिल्मों का उद्देश्य बच्चों में मनोरंजन के साथ–साथ चरित्र निर्माण का भी होना चाहिए। रमाशंकर जी ने अपनी बाल आधारित कहानी का पाठ भी किया।

डॉ0 जाकिर अली 'रजनीश' ने कहा – बाल विज्ञान कथा का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी से हुआ। बाल विज्ञान कथाकारों को वो स्थान वर्तमान में मिल नहीं रहा है, जो

मिलना चाहिए था। विज्ञान कथा का लेखन करने के लिए विज्ञान की जानकारी तथा उसे पढ़ना होगा। वैज्ञानिक दृष्टिकोण विज्ञान कथा के लिए आवश्यक है। बाल विज्ञान कथा के लिए विशेष सोच व मानसिकता की आवश्यकता होती है। विज्ञान कथा लिखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। कथा का जुड़ाव समाज से होना चाहिए। विज्ञान कथा लेखन में सजगता की अनिवार्यता होनी चाहिए।

यहाँ उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर सोहन लाल द्विवेदी जी की पौत्री सुश्री आकांक्षा दिवेदी 'बिन्दकी' फतेहपुर से पधारीं, उन्होंने अपने बाबा को याद करते हुए कहा– माँ का ऑचल लाल करो, लाल करो, हड़ताल करो। जैसा कालजयी नारा देने वाले सोहन लाल द्विवेदी जी ने आजादी के प्रति जागरुक किया। उन्होंने संस्मरणों में बताया कि गुलामी का लड्डू खाने से अच्छा है कि आजादी

के चने चबाना। उन्होंने अपने पूज्य बाबा जी के मधुर संस्मरणों को रोचक ढ़ंग से सुनाया। '' कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती... उनकी अमर पंक्तियों को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। सुश्री श्वेता जायसवाल व उपासना जायसवाल ने सोहन लाल द्विवेदी जी की कविता का पाठ किया। हिन्दी संस्थान के द्वितीय तल पर स्थित जीर्णोद्धारकृत निराला सभागार का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। अब संस्थान के दोनों सभागार– प्रेमचन्द एवं निराला– साहित्यिक कार्यक्रमों के लिए उपलब्ध है। डॉ0 अमिता दुबे, प्रधान सम्पादक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित समस्त साहित्यकारों, विद्वत्तजनों एवं मीडिया कर्मियों का आभार व्यक्त किया।

बिश्वनाथ चारिआली राष्ट्रभाषा प्रबोध विद्यालय संचालन समिति, असम के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी – 12 व 13 मार्च, 2023

'राष्ट्रीय एकता का भाषाई, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य'

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान एवं विश्वनाथ चारिआली राष्ट्रभाषा प्रबोध विद्यालय संचालन समिति, विश्वनाथ चारिआली, असम के संयुक्त तत्वावधान में 12 एवं 13 मार्च, 2023 को कोसगांव स्थित राष्ट्रीय विद्यालय में 'राष्ट्रीय एकता की भाषाई, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भाषा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

श्री सार्वजनिक धर्मशाला सभागार में प्रो. प्रमोद मीणा, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय की

अध्यक्षता में सारस्वत वक्ता डॉ. राजीव रंजन प्रसाद, सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, इटानगर, अरुणाचल प्रदेश, गीता वर्मा, अध्यापिका, बिश्वनाथ महाविद्यालय, असम ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में डॉ. अनिता पंडा, वरिष्ठ लेखिका, अनुवादक, समीक्षक, शिलोंग की अध्यक्षता में डॉ. बीपी फिलिप, वरिष्ठ व्याख्याता व संस्थापक, नागालैंड राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, नागालैंड, रीता सिंह सर्जना, अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिंदी साहित्य अकादमी, तेजपुर, महकमाधिपति जय शिवानी, विश्वनाथ,

डॉ. चुकी भूटिया, सह–प्रध्यापक, हिंदी विभाग, सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय, गंगटोक ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के अंतिम सत्र में भाषाविज्ञानी एवं समीक्षक प्रयागराज उत्तर प्रदेश पधारे। आचार्य पंडित पृथ्वीनाथ पांडेय ने दीप प्रज्वलन कर समापन सत्र का शुभारंभ किया। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थी एवं कार्यकर्ताओं द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया गया। प्रभुनाथ सिंह की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि डॉ. क्षीरदा कुमार सइकिया, मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

विशिष्ट अतिथि डॉ. चिंतामणि शर्मा, प्राचार्य, विश्वनाथ महाविद्यालय ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस सारस्वत अवसर पर हिंदीतर भाषा–भाषी राज्य असम से हिंदी भाषा में प्रकाशित पांच पुस्तकों का लोकार्पण आचार्य पंडित पृथ्वीनाथ पांडेय, डॉ. अमिता दुबे, श्याम कृष्ण सक्सेना, डॉ. क्षीरदा कुमार साइकिया, डॉ. सरजीत दास ने किया, जिनमें पांचवीं कक्षा के विद्यार्थी संग्रह 'दिव्य–मन', प्रचारक मनीषा पाल के कविता संग्रह 'लम्हा

कुछ कहता है', प्रचारक सैयदा आनोवारा खातून के कविता कहानी संग्रह 'जिंदगी तेरे लिए', स्मृति शेष स्वर्णलता हजारिका के बाल उपन्यास 'शकुतु और सुमन' तथा प्रचारक संतोष कुमार महतो के काव्य संग्रह 'शब्द–संजीवनी' सम्मिलित थे।

इस अवसर पर आठ हिंदी सेवियों– उषा साहू, राहुल मिश्रा, सैयदा आनोवारा खातून, मनीषा पाल, गायत्री कलवार, गायत्री गुप्ता, अनूप शर्मा, कविराज होमागांई को भाषा गौरव सम्मान से विभूषित किया गया।

इस अवसर संस्थान के पदाधिकारी विनोद कुमार गुप्ता, सूर्य नारायण पांडेय, मदन गोपाल साहू, गीता वर्मा, अरुण साहनी, सुरेंद्र कुमार साहनी, सुधन साहनी, लोकनाथ शास्त्री, बजरंग रौनियार, वंदना दास, कल्पना पाल, धरित्री राय बरुवा, चित्र प्रसाद पौडेल, प्रेम विश्वकर्मा तथा देश के अनेक राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। इस संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन सचिव संतोष कुमार महतो ने किया।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 में निम्नलिखित स्थानों पर पुस्तक प्रदर्शनी में प्रतिभाग किया गया

संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री की व्यवस्था संस्थान स्वयं करता है। व्यापक प्रचार–प्रसार को दृष्टिगत रखते हुए हिन्दी दिवस के अवसर पर :–

- दिनांक 25 मार्च से 03 अप्रैल, 2022 तक चारबाग, लखनऊ में,
- दिनांक 30 जून, 2022 को गोरखनाथ साहित्यिक केन्द्र, दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में,
- दिनांक 14 सितम्बर, 2022 को हिन्दी भवन लखनऊ में,
- दिनांक 23 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2022 तक बलरामपुर गार्डेन, लखनऊ में,
- दिनांक 15 व 16 अक्टूबर, 2022 को महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में,
- दिनांक 29 अक्टूबर से 6 नवम्बर, 2022 को गोमती रीवर फ्रंट, लखनऊ में,
- दिनांक 06 से 12 नवम्बर, 2022 तक रायबरेली में,
- दिनांक 11 से 20 नवम्बर, 2022 को पटना में,
- दिनांक 16 से 25 दिसम्बर, 2022 को प्रयागराज में,
- दिनांक 11 से 17 जनवरी, 2023 को रामगढ़ताल, गोरखपुर में,
- दिनांक 26 से 30 जनवरी, 2023 को भोपाल में,
- दिनांक 25 फरवरी से 5 मार्च, 2023 तक दिल्ली में,
- दिनांक 17 से 26 मार्च, 2023 को लखनऊ पुस्तक मेला में विशेष छूट के साथ पुस्तक प्रदर्शनी लगायी गयी। इसके अतिरिक्त संस्थान में समय–समय पर आयोजित होने वाले समारोह के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी लगायी गयी।

लखनऊ पुस्तक मेला

गोरखपुर पुस्तक मेला

भोपाल पुस्तक मेला

दिल्ली पुस्तक मेला

पटना पुस्तक मेला

प्रयागराज पुस्तक मेला

गोमती रीवर फ्रंट पुस्तक मेला

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ